Hitesranjan Sanyal Memorial Collection Centre for Studies in Social Sciences, Calcutta

Record No. CSS 2000/47		Calcutta	
	Year:	1851	
	Language	Bangla	
Indranath Majumder	Publisher:	Chandrika and Jnanaratnakara Press	
Nabinchandra Bandyopadhyay	Size:	13x21cms.	
	Condition:	Brittle	
Sarabali	Remarks:	History of ancient Indian civilization with special reference to the Ramayana and the Mahabharata.	
	Indranath Majumder Nabinchandra Bandyopadhyay	Year: Language Indranath Majumder Publisher: Nabinchandra Bandyopadhyay Size: Condition:	

श्री श्री विश्वास्त्र । भारति । भारति ।

প্রতাভারতবর্ষীয় ইতিহাস সারসংগ্রহ।

এতদেশীয় বিদ্যালয়ের ব্যবহারার্থে
বাজাবলী, বিক্রমাদিত্য কাব্য, কেটলিজ ইণ্ডিয়া ও নার্সমাস
হিন্তিরি লব ইণ্ডিয়া, ইণ্ডিয়ান ইউথস মেগেজিন,

ইয়ার্ট অব বেসাল ইত্যাদি গ্রন্থ হইতে।

ক্রিন্তিত্র বন্দ্যোপাধ্যায় কুর্ক ।
সংগ্রুতি হইল।

ত্রহাত্র প্রথম খণ্ডে কৌরন পাণ্ডবাদির রাজ্য সম্ভারি শ যুদ্ধাদি বিবরণ সহ মহাতারতের স্থূলমর্ম প্রকাশিত ও পাণ্ডবাদির স্থলারোহণ পর্যান্ত ও দিতীয় খণ্ডে হিন্দু ববন ইংরাজ সমুটে ও জ্যোতিষ রন্তান্ত রচিত হইয়াছে। গ্রহণেচ্ছক নহাশয়েরা প্রীযুক্ত বারু গোবিন্দচন্দ্র সেন মহাশয়ের কলুটোলার ভবনে অথবা প্রভাকর প্রেষে তত্ত্ব করিল্লে তুই থণ্ড গ্রন্থ পাইবেন। কলিকাতা চন্দ্রকা ও জ্ঞানরত্বাকর প্রেষে মুদ্তিত হইলী মূল্য সম্পূর্ণাণ্শা গান্তীকা মাত্র। ইং ১৮৫১ শাল ভিনেম্বর।

मातादिन।

मञाश्रीत रञ्जात्व व्यर्गार्शत्लां प्याहिक धर्म गांजाएउन य शर्यां छ हिल उछावर काल धरे शृथिवीट कर ताला हिटलन ना गणारे मरा পর্ধক্রান্ত ভূপতি ছিলেন। "অনন্তর ক্রমশঃ অধর্ষ সঞ্চয় হেত্তক জগদী श्रंत मर्जात भागविष এত काल भग्छ जधमा निवातन ও धर्मा मर्या शर्फ कोल विरम्धि शुक्षिविरमध्क नियाजन कति उठिहन, यर्ड छक यो वञ्च यिनि निर्माण करतन छोटा उद कङ्क मान विक्यों मि वाछी छ छाँहा तरे थाक । এ अवनीत निर्माण कंडी शत्रामधत जिनि स्निर्मिज ভূথণ্ড কাহাকে দান বিজয় করেন নাই অতএব নিতা স্বস্থাধিকারি জগদীশেছাত্মগারে যথন যিনি ক্মাপতিত্ব পদে প্রাতিষিক্ত হয়েন তখন তাঁহার ইহা অগ্রণীরূপে অনুষ্ঠান কর্ত্তব্য যে বাজধর্মানুশারণ शूर्यक प्रसे मगन, निसेशालन, প্রজাগণ হইতে নিয়মিত কর গ্রহণাদি याभिर्त मन्नि जिन्दिण कर्त्रन विलिय उ॰ जार्जु नित्र खें जि जगरोनित উক্তি আছে "य "পরিত্রাণায় সাধূনাং বিনাশায় চ চুষ্ক, তাং। ধর্ম भ्रष्टाश्वनार्थाय मस्वामि यूर्ण २॥[%] जर्थाः माधुमगवारयत शतिजान ও জুদ্ধশিগণের বিনাশ ও নিতা সতা ধর্মের সংস্থাপনার্থে আমিই यूर्ण र जमा शहन कित्रा विश्वाका পরিপোষণ করি। ७६ ইদানীং লপ্রুদ্দ প্রতি দেব, ধর্মবাজ, ঈশ্ব প্রভৃতি প্র খাকে। অপিচ ছুরবগাহ ভপঃসাধন ব্যক্তিরেকে সুগবিত্র মহাত্র

BLOCKED INFORMATION.

कूटन किर पिर পরিগত হয়েন না। প্রথমতঃ ভারতবর্ষে প্রাণ धन शाम्द्रभतं नाथाञ्चनाथातं सूकूटलाकात्मतं नामः व्याप्रदेशाच्य यश्नीय ্তিচয় এই ধর্মারাজ্যাভিষিক্ত হইয়া ততঃ প্রভৃতি অতি বিস্তীণ ভূমগুল পালন করেন তাহাঁরা প্রায় সকলেই শ্রেদাবান, অন্থয়া রহিত, ममाठाती, शताञ्चकण्णी, मजामील, मदकर्ममाली अथठ जदमर्जन कर्छा, विविध विमाञ्चराशी रुहेशा मना माञ्जा लाहना षाता कालयाशन कतिया ছिলেন। তদনন্তর যখন এই মেদিনী কালক্রমে ক্রমশঃ মহাকলুষ সুজ ঙ্গের করাল কাল কবলে পতিতা হইতে লাগিল তথন সত্য দূরগত ও मानवर्गन जन्मा विव्रहिज उ दिखनजामि नाना प्लीयाथिज उ ज्ञाक सकन ধর্মহত বিপুসমূহ লুভিতা হইলেন এবং পৃথীপালেরা পরস্পর দেয় ও लाज्छायुक युक्त विग्रामि षात्र। शैनवीर्या ও कुनीजिवमा श्रेटन ञ्चलता जाना प्रभा रहेट छक्त य ही ना हात यवना पि का जिता श्वल পরাক্রমে বীরভোগ্যা বস্থন্ধরাধিপতি হইয়া হিন্দুধর্ম বিলাশেই তৎপর श्रीत्वन। वालत्युरगद जनमात्न स्र्यात्रात्भत स्मय श्रीत ଓ हन्त्रार्भत ও ঔরসপু ত্রের উপরতি হইলে চন্দ্রংশীয় ক্ষেত্রজ সন্তানদের রাজত্ব হইল, ঐ দাপরযুগের পর্যাবসানে হস্তিনাধিপতি সান্তমুর পুত্র বিচিত্র বীর্যা নামক চন্দ্রং ীয় রাজা হইয়া অত্যন্ত স্ত্রীসম্ভোগাসক্ত হেত্তক যক্ষা রোগাক্রান্তার কৃতীন্তালয়ে গমন করিলেন, তাঁহার অপত্য রাহিত্য নিমিত্ত সান্তমুম্বত বেদব্যাস আপন মাতা সত্যবতীর অমুজ্ঞামুসারে উক্ত বিচিত্রবীর্যোর ক্ষেত্রে ধৃতরামু পাণ্ডু বিছর নামে পুজ্রতয়োৎপাদন করিলেন, তন্মধ্যে পাতুর রাজত্ব প্রাপ্তি হইল। ধৃতরাষ্ট্র জনাক্ষতা নিমিত্তক রাজত্বকরণাসমর্থ বিধায়ে স্থীয়পুত্র প্রর্যোধনকে রাজ্যাতিবিক্ত করেন। পাণ্ডুরাজা ঐক্ষ বলরামের পিতুঃষুদা অথচ বস্তু:দবের ভগিনী छीटक विवाह करतम होने श्रामा ताजगहियी ছिल्नमा वर्ष भाषी ী অনা এক দ্রীও ছিল। পাণ্ডু জাপাভিভূত হইয়া দ্রীসম্বোগ শক্তি

किशीन श्रेल कुछी गांजी इहे तांनी श्रीय श्रामित অভিনতে দেবতা मिशक आञ्चान भूकिक भक्षभूक जमाहित्वन, यथा कुछीत गर्छ भना वाशु, ই स्मित्र खेत्राम क्रममः यूधिष्ठित, जीम, जर्जून नारम जिन शूख - इहेल आत मासीत १८७ अश्विनीकुगादित छेत्रम यमक पृष्टे भूक नकुल, সহদেব জিন্লি। এইরূপে পাণুরাজা নিরপতা হইয়া পঞ্চ ক্ষেত্রজ পুত্র প্রাপ্ত হইলেন, কিন্তু ধৃতরাই জন্মান্ত হইয়াও তাঁহার রাজ্ঞী সতী সাধী পতিব্রতা গান্ধারীর গর্ভে দুর্যোধন দুঃশাসন প্রভৃতি একশত পুর্ত্তোৎ शानन कतित्वन डाँश्वा मकत्वर मर्गदन श्राकाछ रहेत्वन। अन ন্তর পার্ নৃপতি স্থারিত হইলে ধৃতরাই, যুধি छিরকে অত্যন্ত পার্মিক ञ्चाल मां । मर्कछ । युक्त ও मर्का लाका मूत्रक धवर मकल ताक लक्षना कां अन्मर्भन भूर्यक सीय भंड अंगडा गढ़ । उर्हा के रिकरे रिखनी পুরের রাজপদে নিযুক্ত করিলেন। কুরুবংশীয় সান্তমূর পুত্র বিচিত্র वीर्या, काभी ताकात अधिका, अधानिका नागी पूरे कनादक বিবাহ করেন। ভাঁহার পরলোক গমনের পরে বেদব্যাদের ঔরসে অম্বিকার গর্ভে খৃতরাফ্র ও অমালিকার গর্ভে পাণ্ডুর জন্ম হয়। এবং ব্যাসের ঔরসে শুদ্রার গর্ভে বিদ্রের জন্ম হয়। যদ্যপিও রাজা দুর্যোধন নিজ হিংসক ও জুরতা স্বভাবে বিরক্ত হইলেন বটে তথাপি ভীমাজ্জু নের অতুলাপরাক্রম এ শোর্য্য বীর্য্য গান্তীর্য্যতা ও রণদক্ষতা এবং অস্ত্র শিক্ষার নৈ পুণ্ডা সারণকরিয়া তৎকালীন জ্ঞাতিহিৎসায় প্রবর্ত্ত নাহ ইয়া সুরীভূত রহিলেন। ধর্মপুত্র যুধি ছির এতদ্রপে ভূপতি পদাভিষিক্ত इहेग्रा छीम প্রভৃতি ও দুর্যোধনাদির জাতুগণ সহ ঐকমত্যে ৭৬ বর্ষ যাবৎ উত্তমরূপ রাজ্য পালন করিয়া ছিলেন। অনস্তর; জ্ঞাতি বিরোধে পাওবগণ সরাজ্য পরিত্যাগ পূর্বক হিন্দু নদীর ভটস্থ দেশ ও अन्यानः स्ट्रांत्ने अति छ रह करतन। धे जगरत यह्न १८ भागति अक्षांता वि পতি फ्रिशम कैना। जिल्लीत अद्भाषता काल अनाना जूर्शिक कैं। इतक

विवाहार्थ कान्त्रील नगरत गमन कतिर छिटलन उथन शां भु मस्रामित्रा अ উপস্থিত হয়েন এবং তন্ম। । অ क न स्की स मार्ग वीर्या ममुब्ह नक्ताभ প্রকাশ কলেন অর্থাৎ উদ্ধেতে লক্ষ্য, ও তদধোভাগে এক যন্ত্র ভাল্য ত্রাস্তর্বার্তি ছিদ্রদারা অর্জ্জনের স্থাণাণিত শর উদ্ধিতিত লক্ষা ভেদ করিয়াছিল অতএব তিনি বিচিত্র শরাসনাকর্ষণ পুরঃসর লক্ষ্য বিদ্ধ ও ভূতলে পতিত করিয়া সমবেত রাজগণ সমক্ষে দ্রোপদীকে হরণ পर्यक आंगरन कतां एटे छाँदात नीतप शृथिनी मधा मिनी भागांन ইইল পরে কুন্তীর বাক্যান্সারে যুধিষ্ঠিরাদি পঞ্চপাওবের ভার্যাত্বরূপে দ্রেপদী গৃহীতা হইলে। কিয়ৎ কালাতায়ে রাজা ধৃতরাই পাও পুল গণের সহিত স্বীয় পুতাদির পরস্পার বিরোধ ভঞ্জনার্থে পুনরাহ্বা ন পূর্বারু রাজ্য বিভাগ করিয়া দিলেন। তাহাতে ছুর্য্যোজন হস্তিনার तांका रुटेत्नन ध्वर रुखिनांव किस्थिए एत्त है स्पर्धास्त्र तांका युधि छेत ्र तांक्यांनी कत्र भीग्रवाङ्यल जेश्रर्गाणी अ सूर्गां जिन कतिरस्म। পাণ্ডবেরা নিখিল বেদও বিবিধ শাস্ত্রাধায়ুন ও ধর্ম পথাবলম্বী ও সত্য वामी जिल्लिस ଓ नमुश्रामक इहेशां भारी तिक मुधमुष्ट्रिक मास्त्रीक कत् ज मन्त्रित महावर्गात हक्ता लोक खला स्रिनिम्बलान करका जि मिनर् তাঁহাদের চিত্রোপরি বিকীণ হইতে লাগিল. সমদয় লোক য়ধিষ্ঠিরের मनो होतं, जीरगत देथर्गा, व्यक्त नित्र समयुक्त गिरित खला विक्रंग, नकूल गर्रापत्वत छङ्खिक कर्मा विनय फर्नान श्रतम मरसाम श्रीध इहेग्री ছিল। রাজা যুধিষ্ঠির কৃষ্ণের সমান্ত্রণায় এবং ভীমাজ নের বাহুবজে মগধাধিপতি বল গর্মিত জরাসন্ধ রাজার ও শিশুপালের বধ সম্পন্ন कदल अञ्चलांन पिक्तां श्रीमानि मर्काङ्ग मन्त्रात वाङ्गस्य महागुख निर्किए निर्कार काइलाग। পাওবের। রोজাছ প্রাপ্ত হইয়া ইন্দ্র প্রত্থে যে ২ কর্ম সম্পাদন করেন তন্মধ্যে রাজস্থ্য খুজ্ঞকরণই মুখ্য কার্যা হইয়াছে তাহা সভাপর্কে বিস্তারিত ব্যক্ত আহে এবং তদম

यक्षाधीन जीगामित मिथिकाय यांका ও जातज्वसीय नाना मिश्मिश् নূপতি হইতে কর গ্রহণ এবং তাৎকালিক তাঁহাদের অদ্মা রাজবর্গের जामम देजापि कर्त्मात द्वाता गुधिछित यम, गांग, প্রতাপে সকল রাজার প্রধান হইয়া মহারাজাধিরাজ রাজচক্রবর্ত্তি পদাভিষিক্ত হইলেন। ঐ রাজস্ম যজামুষ্ঠানে পাওবদিগের জ্ঞাতিবর্গ আন্তরিক সর্ধা সত্ত্বেও ভাহাতে সমত হইলেন। পরে জীক্ষ এ বিষয়ে মহাআন্মাদ প্রকাশ পূর্বক অমুমতি দিলে মহারাজ যুগিছির সহঁদেবকে যজায়োজনের আজা প্রদান করিলেন সুয়ং নকুল জাতি বাস্তাদির আক্রেয় निमुखनार्थ गमन कतिरलम अपर प्रमा प्रमाखत तो जनरर्गत निमुख गार्थ पृष्ठ अञ्चित रहेल। युधिवित आजीयवर्गक यथार्याग्रा विष्मियर कार्या जात मिल्लन। धुरुणामन जका जांद्रजात अधिकाती ও ভীত্ম- ফোণ সামান্যতঃ সর্ম বিষয়ের কৃতাকৃত পরিজ্ঞানের নিমিত্ত नियुक्त रहित्वन। अश्रथामा उक्ति। जिल्लात अञार्थनाटक, मक्षय तांक वर्शित ममामत कतरण, कृषां हार्या हित्रणां मि विविध तर्ज्ञत तकरण ख मिक्निश्नात्म, विष्नुत वाश विक्रिय, भाखवाति पूर्याधिम म्या फिन्द्रमीय लांकत अपन डिनहांत ख्या शहरन, जिन्छ विक्षनाम क्षेक्रीनता নিযুক্ত হইলেন। বাহলীকাধিপতি এক সৃণভিষ্ঠিত রথ আনিলেন কাষোজ ভূপতি শ্বেতকান্তি কামোজীয় অশ্বযোজনা করিলেন, সুনীৰ রথের অতুক্ষ অর্থাৎ অধঃস্থিত কাষ্ঠাহরণ করিলেন। চেদি দেশাধি পতি थुक, मिक्किन मिनाधिপতি উরস্কুদ, মাগ্রেশর উফীষ ও মালা আময়ন করিলেন। বস্থদান রাজহস্তি, মৎস্যাধিপতি শক্ট একলব্য উপানহ, অবস্তীশ্বর অভিষেকবারি আনয়ন করিলেন। চেকিতান ত্ণীর, কাশীরাজ ধন্তঃ, মদ্রাধিগতি শল্য খড়য় আহরণ করিলেন এবং যত্রবংশীয় রাজা সাত্যকি ছত্র ধারণ ও ভীমার্জুন বাজন এবং नकूल महरणेत होगत होलनां कविरलन

যুধিষ্ঠিরের রাজস্থয় যজ্ঞ।

শ্রীকৃষ্ণ শন্তান্থিতবারি সেচন পূর্বক যুধিষ্ঠিরের অভিষেক কর্মা সম্পন্ন क्रिलिन, এবং ব্যাস সহকারে পৌষ্যেরও রাজাকে অভিযেক ক্রণের উল্লেখ আছে: এ যজে বেদব্যাস খয়ং সুক্ষা ও তিছিয়া পোল ও यां छवलका भि छा पुर्र । उ रो उक्स कि जन्म नाइर्थ नियक हिला। কারোজ ভূপতি বিড়ালের ও গুহাবাসি পশুর লোমজাত সর্বালঙ্গত . वञ्च षार्थीए मान. किश्यांत्र, धटः উछःगाउँम हमा छेन्। मित्सन। जामांशिव जाकशीनशान युताक नात्म जिंछ मार्थलामम विछान प्र इस। এবং তি खित्र जूना विधिय अ एक शकि ना मिका मम ना मिका सुक अस उ इम्मेशूके उसे उनामी कार्याः वारिकी वा गर्मजी मकल श्रीमांन क्रिक्निन *। मक्कच्छ् निर्वामि ल्लांक्त्रां भाक्तांत मिण छांड वर्ष वानित्वन । शिक्षवनी श्रांत्र उत्रमुक्त जीत्र देवताम शांत्रम, এবং আভীর বা (আহির ও আবিবিয়া) ও কিতব জাতীয় লোক विविध तज्ञां रतन शूर्भक जानान करतन। धवर शाख्यता में वा (शाख बाएँ) (मणीय त्लांकिता छात्र, शिष, त्यां, त्रामींड, छिछे, मूर्व कलाख मधु न ও বিবিধ কম্বল উপহার দিলেক। প্রাগ্জ্যোতিয (কান্ত্রপের) क्षिक्रतीका जगमद गरम महम दिगराम जाकातिय ‡ जम स्वीर्जा । निश्वक नस्त्रिष्ठि मक्ष्युक श्रुतानग्रम एडिस्मन। जुकिश्रानत श्रुताश्रम ওক্সস্নদী সমীপত্ত শকেরা ও তেশ্থারি স্থানের লোক তুখারগণ ও

কম্বাদি অপরাপর পর্বভীয় লোকেরা মনোহর লোমজ, কটিজ, পউজ, गृशहर्माक, वञ्च এवर कामन भाषा मायहर्माक वञ्च अ मीर्थ थएन, श्रक्ति, शक्ति, अ शिक्ति (म्याष्ट्रिव शत्रुष এवर विविध तम शक्त, तज्ञ, नियाष्ट्रिल। श्रुक्त দেশাধিপতি ভূপতিগণ বৃহৎ২ হস্তী ও অশ্ব ও অপর্যাপ্ত স্থবর্ণ ও বছ गुला जानन, गणि काञ्चनमग्र চিত্রিত ও গজদন্তমগ্র যান ও শ্যা বিচিত্র কবচ, বিবিধ অস্ত্র, বিনীত অশ্বযোজিত এবং ব্যাঘ্রচর্ম পরিবারিত ও সুর্ণভূষিত নানাবিধ রথ ও বিচ্চিত্র পরিস্তোম অর্থাৎ গজপৃষ্ঠস্থ চিত্র कश्रु अनानाविध त्र अ अनानि अञ्ज अनान शूर्यक यक मन्दन अदिया করিলেন। উক্ত পূর্বদেশ ভারতবয়ান্তঃপাতি হইলে মুধিষ্ঠিরের রাজ थानी रेख्य अर्था अधिन मिल्लोत शूर्स मिक्न वर्ष्टि कामी अ মগধ ও উত্তর বাঙ্গালার শিল্পি লোকেরাও তাহা প্রস্তুত করিতে পারিত। সম্পুতিও ত্রিপুরার রাজার রাজমন্দিরে হস্তি দন্তদারা নানা প্রকার বিচিত্র আধার আসন যফি আদি প্রস্তুত হইয়া থাকে ও অতি স্থদীঘ হন্তীও প্রাপ্ত হয় এবং তাঁহারা আরও ব্যক্ত করেন যে রাজা যুধিষ্ঠি রের রাজস্থা যজকালে সর্বশোষে সমাগত ইইয়াছিলেন এপ্রযুক্ত মহা রাজার আজাত্মারে যজ্ঞহানীয় উচ্ছিট ভুক্তাবশেষ স্থান সন্মার্জন করাতে যুধিষ্ঠির সন্তুট হইয়া তাঁহাদিগের পূর্ব্বপুরুষকে সিংহাসন ও ধবল ছত্র প্রদান করিয়াছিলেন তাহা অদ্যাপি ত্রিপুরাধিপতি ত্রীযক্ত মহারাজ ঈশানচক্র মাণিক্য বাহাদ্ররের গৃহ্স্থিত আছে এবং রাজত্বে অভিষেক কালীন সেই সিংহাসনোপবিষ্ট ও ধবল ছক্ৰ ধারণ করিয়াছিলেন। তদবধি ইহাঁর রাজত্ব মধ্যে কেহ শ্বেত চ্ছত্র ধারণ করিতে পারেন্•না। ভাঁহারা চক্রবংশীয় নূপতি ও যুধিষ্ঠিরের জ্ঞাতিত্ব क्राल প্রাচীনত্ব নির্দেশার্থে এতদ্ধিক আরও অনেক বিষয় ব্যক্ত कित्रा थादकून।।

মের, মন্ত্র পর্মতের মধ্যবৃদ্ধি দেশে শৈলোদার্থনদীতীরস্থ गাবৎ

^{*} অন্নানতঃ বোথারার দক্ষিণাংশৈ পারোপামিশ পর্যতে ও তছত্তর . ভূমিতে কাস্বোজের নিবাস ছিল এবং উক্ত পশাদি ও দ্ব্যাদিও তথায় জন্মে।

ণ শ্রিছটে জেলায় যেশত কমসা মধু পাওয়াযায় ভদ্রপ তথায় কোন ফলজ মধু পাওয়া যাইত।

^{‡ (}अंछे नक्रः, विट्रमध्युक अश्व।

চামর হয়। একধা পিঙ্গলবর্ণ মিক্ষিকার নাম ক্ষুদ্র; তদ্বারা উৎপন্ন মধুর নাম ক্ষীদ্র [হিমালয়ের পূর্বভাগস্থ লোহিত্য (ব্রহ্মপুত্রনদেরতীর্বর্ত্তি) লোকের ও কিরাতাদির অগুরুচদান, কৃষ্ণচন্দন নানাবিধ গন্ধ, রত্ন

বিচিত্র পশুপক্ষি চর্মাদি দিবার উল্লেখ আছে। বঙ্গ, পুণুক, কালিঙ্গ দেশীয় লোকদিগের দীর্ঘদন্ত ও চিত্র সজ্জাবৃত হস্তী এবং দ্যোল ও

পাণ্ডাদিগের মলয় ও দল্পুর † পর্বাতজাত চন্দন ও অগুরু, সুর্ণ, স্থানাবস্ত্র, মণিরতা এবং সিংহল দীপস্থ লোকের সমুদ্রোৎপন্ন বৈ দুর্যামণি মুক্তাভার ও হস্তী কুং আহরণের আখ্যান আছে। উপ

হার গ্রাহক ছুর্যোধন নানাদিগ্ দেশাদাগত উপঢৌকন ও যুগ্ধি ষ্ঠরের নহৈশ্বর্যা দর্শনে তাঁহার অন্তঃকরণে অত্যন্ত ঈর্যাও দেষ উপস্থিত

হইল; তিনি ময় দানব নিমিতি প্রমাশ্র্যা রাজস্থা সভা সন্দর্শন পুর্বাক নিতান্ত তাপিত হইয়া মাৎসর্যা প্রভাবে ভ্রমবশতঃ স্থালিত গতি ও তেওকালে জীয় জীক্ষে সমক্ষে ভাঁহাকে গ্রাম্য লোকের ন্যায়

গতি ও তৎকালে ভীম দ্রীকৃষ্ণ সমক্ষে ভাঁহাকে গ্রায় লোকের ন্যায় উপহাস করাতে দুর্যোধন অশেষবিধ ভোগ স্থুখ নানারত্ন সম্পন্ন হই য়াও মনের বিপ্রকৃষ্টভায় দিনেই বিবর্ণ ও কৃশ হইতে লাগিলেন, পুত্র বংসল গৃতরাষ্ট্র পুত্রের মনঃপীড়ার বিষয় জ্ঞাতহইয়া দ্যুতক্রীড়ার

*গ্রীকগ্রন্থ মতে হিমালয় ওকিউন্লুন পর্যান্তর্য্যর্ত্তি স্থানে এই স্বর্ণোৎ পাদক দেশ এবং তাহা মহাভারতোক্ত মের্ফ ও মন্দরের মধ্যবর্ত্তি স্থান ও বটে।

† দাক্ষিণাতা মধ্যে মলয় পর্বতের নিকটে, সহ্যাদ্রির দক্ষিণে দদুরি পর্বত।

अनेक्डानित्यमं डांशांड कृष्ण क्रमे ७ अनुसर्घ इहेग्रांड विवास छक्षरमञ् राष्ट्री कतित्वन ना वत्रक भाक्षि कौड़ा क्षष्ट्रिंड जात्मम क्नीं अश्र क्रितिमन, राष्ट्रजू विष्ठ्र जीया, स्मान ও कृशागर्यात यन जिमां ज्यातिक সেই তুমুল युष्कारे कविय क्लधुरम रख्या ठाँरीत অভিপ্রেত ছিল। ভাহার বিশেষ কারণ এই যে দুর্য্যোধনাদি সর্বাদা ক্রোধ পরতন্ত্র ও खेंक, वृक्षः लादकतः वादकारशका कतिद्रञ्च। मृर्य्याधन कवित्र कृत्व ভনা গ্রহণ করিয়া ও যুদ্ধে পাওবদিগকে জয় করিতে অশক্ত ও পাওব রাজলক্ষ্মী আত্মসাৎ করিবার বিষয়ে হতোৎসাহ হইয়া গান্ধার রা জের স্ত্রহিত পরামশ পূর্মক কপট দ্যুত ক্রীড়ার মন্ত্রণা করিল। দ্বিতীয় বার পাশ ক্রীড়ার হেত্ত এই যে পূর্ব্ব প্রতিজ্ঞায় বিশেষ অনিষ্ট না হইয়া বরং ধৃতরাট্টের প্রসমতায় পুনরায় রাজ্য প্রাপ্তি পূর্বক পাও রেরা রাজধানীতে প্রত্যাবর্ত্তন করেন। অত্তব দুর্য্যোধন মানস সাফ काड़ी कना य विषया डाँशता की वृक्षि उनुभन्धकर शून क आहिड চেন্টায় প্রবর্ত ইইলেন কিন্তু যুধিষ্ঠির একবার পরাজিত হইয়াও বোরতর দুর্গতি সম্ভোগ করিয়াও সচেতন ও স্থবুদ্ধি হইলেন না বাসের বর্ষমধ্যে নাম ধাম প্রকাশ হইলে পুনর্বার দাদশব্য অরণ্যে থাকিতে হইবেক এই প্রতিজ্ঞা স্থাকার পূর্মক পকুনি রচিত পাশকী ড়ায় পুনঃ পরাজিত হইয়া যুধিষ্ঠির ভাতৃ গণ ও পত্নীসহ মহা দুর্গতি ভোগ করিতে লাগিলেন।

যুধিষ্ঠির সমীপে প্রজাবর্গের খেদ।

অতএব দুষ্টের দুষ্টতায় বিশিষ্ট শিষ্ট লোক কথন ইট নিষ্ঠ হয়েন না তাহা বনপর্বেই ব্যক্ত আছে। রাজা দুর্যোধন মহাক্রোধী, অর্থ লোভী, মানী কদাচারী, নির্দায়, সুহুৎ স্ক্রে, মহাপাপকারী তাঁহার কুমতি দ্বারা ও তাঁহার আ্রুমন্ত্রী অরিষ্ট দুষ্ট্যী পাপিষ্ঠ শকু

नित गठेण बाता, क्यांवेख भूगवेख प्रश्नेष्ठ गरांख शोध महाराजा ताकामि विविद्धिक रहेशे मामन वय शतियार्ग कत्राम नत्न कहरनम তদ্বেক প্রজাবৃদ্দ চতুর্দিকে রাজ্য ত্যাগানন্তর ছিন্নভিন্ন হইলেন धवर य स्थात मञ्जी मक्नि, ताका छूर्याधन, उथाम माधु मक्निन কদাপি বাস করিতে পারেন না বিশেষতঃ পাপিন্ঠ রাজা হইতে প্রকার स्थ ७ जाज कूलभर्मा श्रुगाकर्मानि मामूनायिक मसे एय स्वता थाला वर्ग धर्मत्राक युधिकिदतत व्यतगा गमनका नीन थिमशूर्यक कृष्ठीक्षित श्हेश मिवनिया कहिए नाशिक्तम, हि ताक्रम् "अन्यमामिक अतिजाश পূर्वक य द्यान यादेवन, जामता ७ ज्या यहित, यह दक कित्रव ছলন दिता नर्समुख्यी रहेल, ७९ श्रमुङ र ममूर पूर्थश्र रहेया उव मिश्रात जागंज इहेलाम, गांश्रात मर्मात, जामतन गांग्रात, भाभज्यान ব্যতীত ধর্মা সঞ্চার হয় না ও যাহার রাজত্বে প্রজা নিজ্পীড়ন ও পর সর্বস্থরণ ও যাহার কিলিষ সুরূপ তপনের প্রথরতর কর প্রসারণ দারা রাজ্যস্থাসমস্ত ব্যক্তিই উত্তাপিত হইতে লাগিল তাহার রাজ্যাধি কারে স্থ্রখ, সম্পদ, সম্ভোগ ও ধর্মাটার পরিরক্ষণে কেহই শক্ত ইই विक ना किनना পाशित সংসর্গে পাপেরই वृक्ति হয় ও পুণ্যবানের সংহতি জন্য অবশাই পুণোপার্জন হইয়া থাকে এবং রাজায় পাপ হইলে প্রজার কথনই অব্যাহতি হয় না অতএব সকল সদ্মাণাশ্রয় যে আপুনি একণে আপনারই শরণাগত হইলাম যথাযোগ্য বিধানে এ অধীনদিগকে দর্বাপদ হইতে মুক্ত করুন। ইত্যাদি করুণারসাভি ষিক্ত বচনোক্তিতে রাজ। যুধিষ্ঠির প্রজাসমূহ সম্বোধনে পীযুষ সদৃশ বাগসূত বিতরণ করিতে লাগিলেন, হে প্রঞাগণ ভোমাদিগের প্রিয় ৰাক্য প্ৰবণান্তে নিতান্ত সন্তুষ্ট হইলাম। যেহেত্তক অস্মদাদির স্থা নিবৃতি হইয়া নির্বিঘৃতা পরিত্যাগ পূর্বেক হুখে সুখী, ছংখে ছংখী,

हिट्डिहिड, मन मान करिड़ा, उৎসমুদায় সারণ পূর্বক সম্পতি পিতামহ

जीय ଓ ब्यार्रेडींड ध्डतांके, माडा कुछौदावी देशांता जमात्र मित्भत জন্য সর্বাদা শোক মোহে পরিতাপিত আছেন অতএব স্বরাজ্যে তব श्रीन श्रुतः गत जाशाति शतम याज मश्रुक्तन कत्र । कुछो अ माजी भवम পবিকারণো अधिमित्भित আশ্রমস্থিত হইয়া পাওবদিগকে निन भानन करियाहितन, किছ्कान भरत अधिभन मिड्रे वुआहाति বেশধারি শাস্ত্রজ্ঞ গুণ সম্পন্ন রাজকুমারদিগকে রাজধ ।তৈ ধৃতরাই। मित्र निक्टि। योनयन कतिरलन এवर देशात्रा পाखुर्यूक তোমাतिमिर्गत श्रुल, ज़्रुणि, भिषा, स्ट्रम् हेटा विनया পরিচয় দিয়া প্রস্থান করিলেন, তৎসংবাদ ভাবণে সমুদায় কৌরব ও স্থশীল ধর্ম পরায়ণ পুরবাসিগণ হ্যটিত্তে মহাকোলাহল করিতে লাগিল। কেহ ২ পাওপুত্র নহে ইহা বলিয়া কুতক করিতে লাগিল কিন্তু সর্বাতই পাণ্ডবেরদের কুশল বার্ত্তা জিজ্ঞাসিত হইল পরে ধৃতরাষ্ট্রাদির সেহে তাঁহারা দিন ২ বদ্ধিত হইতে লাগিলেন। এবং ধৃতরাফ্রাদির প্রসমতায় অহু রাজ্য প্রাপ্তা নন্তর মণি, কাঞ্চন, রত্ন, গো, হস্তী, অশ্ব, রথাদি, বিবিধ ঐশ্বর্যান্তিত হইয়াও পৌরজন সাহিত্য নিভা নিত্যানন্দোৎসবে কাল্যাপন করিতে लाशित्वन । किन्दु पूर्याधिन धर्म वित्नाशक ममान्तिक अमर्यवर्गाणाश्रम হইয়া পাশক্রীড়া রূপ প্রতারণা উপস্থিত করিয়া পাওবদিগের সর্বানাশ করিল স্মতরাং যুধিষ্ঠিরের অভিভবেই জ্যেষ্ঠ ভুক্তি পরতন্ত্রতা প্রযুক্ত অশেষ ক্লেশ সহিষ্ণুধর্মশীল ভীমাদিরও বন প্রস্থান করিতে হইল। অতএব। স্থেস্যানগুরং দুঃখং দুঃখস্যানগুরং স্থ খং। স্থ पुँঃখে মন্ত্র্যাণাং চক্রবৎ পরিবর্ত্ততঃ। স্থথাত্তং দুঃখনাপন্নঃ পুনরাপৎস্যতে अथक। न निजार नजुष्डमू थर न निजार नज्ञ अथर । इजि শান্তিপর্বাণি। এইরূপে যুর্ধিন্তরাদির বনবাস হইলে কেবল দুর্যোধন ১৩ ত্রয়োদশ বর্ষ রাজ্য ভোগ করেন ইতি।

ইতি সারাবল্যাৎ প্রথমঃ পরিচ্ছেদঃ।

অথ দিতীয় পরিচ্ছেদঃ।

যুধিষ্ঠির ধর্মময় মহাবৃক্ষ, অর্জন তাহার ক্ষম, ভীমসেন শাখা মাদ্রীস্থত নকুল সহদেব পুজ্প ও ফল, কৃষ্ণ বেদ ও ব্রাক্ষণগণ তাহার মূল। উক্ত ধর্মা প্রায়ণ যুধিষ্ঠির দুষ্ট মন্ত্রি শকুনির প্রবঞ্চনাতে পাर्चि की ज़ांग পরাজিত হই য়া পূর্ব্ব প্রতিজ্ঞ। পালনার্থে দাদশ্বর্য বন বাস ও একবর্ষ অজ্ঞাত বাস জন্য অপর ভাতৃগণ এবং জৌপদীসহ সমূহ ছুঃখ সম্ভোগ ও মনস্ভাপ ও অশেষ যন্ত্রণা ভোগাবসানে পঞ্জাতা দ্রোপদী সমভিব্যাহারে অজ্ঞাত বাসরূপ বিষম পাশ মুক্ত হুইয়া প্রফুল্লিতান্তঃকরণে মৎস্যাধিপতি বিরাট রাজসদনে সম্মত হইলেন তথাকার রাজ দত্ত দিব্য হীরক খচিত স্বর্ণ সিংহাসনোপবেশনানন্তর সুহৃদান্ত্রবাদি সহ সম্মেলনে অত্যানন পাথোধি নিমজ্জিত বিমলোচ্যস্ত চিত্তোত্তঙ্গ তরঙ্গ বিকাশমান হইতে লাগিল। সভাস্থ সমস্ত ব্যক্তিই তৎপ্রবাহ দর্শনে বিকাশিত নির্মাল নয়ন পরিতৃপ্তি পূর্মক পূর্মবার্ত্তা 🤊 🖔 🤊 শ্রবণান্তে ধর্মরাজের হিতজনক বক্তৃতায় রসনা বিস্তার করিলেন, তাহাতে সকল মহাত্মার সদ্যু ক্তিতে স্বীয় রাজ্যাংশ প্রাপণার্থে প্রিয়ম্বদ ধোমা তপোধনকে দৌত্যকর্মে হস্তিনানগরে ছুর্য্যোধন সঙ্গিনে সম্প্র ষণ করিলেন। ধৌম্য তুপোধন কুরুরাজ সভায় প্রবিষ্ট হইয়া অম্বিকা নন্দন ধৃতরাষ্ট্রকে কহিলেন' হে রাজন্তব অমুজ্ঞামুবর্তী পঞ্পাণ্ডব আগন বিভাগ মত রাজ্য প্রার্থিত হইয়া ভবৎ সন্নিকর্ষে আমাকে প্রেরণ করিয়াছেন, যথাজ্ঞা বিধানে বিনাবিবাদে রাজ্যভার প্রাপ্তির সম্পূর্ণ বাসনা করেন যেহেত্তক যুদ্মদীয় নিক্ষা বিশেষ বাধ্যতা স্বীকার कत्र ताका, धन, कन, मगरेखभग्र विमर्कन मिला करे। वल्कन পतिसान পূর্বাক তপস্থির বেশে অজ্ঞাতবাসে অরণ্য বিশেষে অশেষ ক্লেশ সহিষ্ণু পাওবেরা সম্পতি আপিনার প্রসন্নতায় পৈতৃকাংশ প্রাপ্ত হইলেই প্রীত হয়েন এবং পরম্পর ভাতৃগণের বিরোধেও প্রয়োজনাভাবাভাগ

প্রকাশ করিলেন। ধৌম্যের বহুতর বাক্য প্রবলোক্তর ধৃতরাই ভীষ্মা দি মহাত্মাগণ সাক্ষাৎকারে ছুর্য্যোধনকে কহিলেন হে পুত্র সভাস্থ সমস্ত সজ্জন সজন জন সমত ইক্রপ্রস্থ রাজধানী পাণ্ডব্রগণকে সম্পুতি ০ সমর্পণ করিয়া ভাই২ প্রীতি পূর্বাক রাজ্য স্থখাস্বাদন ও জ্ঞাতি সহ কসহ ভঞ্জন এবং কুমশোপকীর্ত্তি ঘোষণায়বজ্জিত হইয়া সমত্নে কাল स्थानन कतित्व প্रकार्ग ও अकन मक्दन मकत्वरे भत्रम सूथी रूर्यन। এই কথা শুনিয়া রাজা ছুর্য্যোধন স্বীয় ব্যপেত বুদ্ধিতে উপেত হইয়া কহিলেন "হে পিডঃ পরম বৈরি পাণ্ডুপুত্র দিগকে যুদ্ধব্যতীত কখন রাজ্যভাগ দিব না। ইহা বলিয়া, কর্ণ ছঃশাসন ও শকুনি সমভিব্যাহৃত সভা হইতে প্রস্থান করিলেন। অনন্তর ধৌম্য পুরোহিত অক্সরাজ পৃতরাষ্ট্রকে কহিলেন" ছুট শঠ, পাপিন্ঠ, কুলনাশক, মহামত্ত, ছুর্যো ধনের পূর্বাপর বিশেষ ব্যবহার বিজ্ঞাত হইতেছি তিনি অহঙ্কারে প্রমন্ত হইয়া কথন সম্পুতি রাজ্যাংশ দিবেন না কিন্তু তাঁহারও বলি রাজার ন্যায় ছরবস্থা প্রাপ্তিও অবশেষ অশেষ ক্লেশ ও বহু ছুঃখোপ স্থিত হইবেক। বলি বাজ্বলৈ অখিল সংসার পরাজয় করত প্রশাস माम প্রায় ত হইয়া অহঙ্কার বশতঃ জ্ঞাতি বন্ধুবর্গকে অমান্য করিয়া সর্মদা পরহিংসা ও পরদেষে রতছিল, তত্ত্বেতুক শ্রীহরি দঁয়ালু স্থভাবে পর্হিতার্থে বলির স্বভুজোপার্জ্জিত বাস্তোম্পতির ইন্দ্রত্ব সমর্পণ করত তাহাঁকে বন্ধন পূর্বক পাতালে রাখিলেন। সম্পুতিও সেই শ্রীহরি পাণ্ডব পক্ষে সহায় হইয়াছেন তৎপ্রসাদাৎ সাধু ধর্মিষ্ঠ পাণ্ডবর্গণ অবশাই রাজ্য প্রাপ্ত হইবেন, কিন্তু মহারাজ আক্ষেপের বিষয় এই যে কুরুকুল নির্দান লের সোপান হইতেছে। অনন্তর অক্ষরাজা দুর্য্যোধনকে স্বতঃপরত বছবিধ প্রবোধক বাগিমতাদারা কুপ্রবৃত্তি হইতে নিবৃত্তি করিতে পারিলেন না স্নতরাং তিনি কাহারু বাুক্য গ্রাহ্য বাু, স্বীকাষ্য स्योगा छोन के तिस्तान नो जरुधवर उँगानिष्ठु जथक कुक्षथभागि शूख्वत

পাপে স্বান্তকুল বিধাতাও প্রতিকূল হইয়াছেন ইহা বিবেচনা করত সঞ্জ यदक कि हिलान পরমস্বুদ্ধি হইলেও মহুষ্যগণ দৈবকর্তি হত হয়েন এবং এই সংসার দৈবগতিতে যাহাহয়তাহা খণ্ডনে কেহ শক্ত হয়েন না অহো কি দুদ্দৈব স্বৰ্ক্স্ সন্তাপ বিচোষ্টত কালান্তরাব ী যে শুভাশুভ তাগা দৃষ্ট লক্ষণাতেই বিশেষামুভাব হইতেছে, যে হেতুক ছুর্য্যোধন ছটের কুমন্ত্রণায় কাপট্য ব্যবহারে পাণ্ডু মন্তানদিগকে যত ছঃখ দিয়া ছেন তাহাতেই মতপ্রায় হইয়াছি হে সঞ্জয় যথন শুনিলাম ছুর্য্যোধন ও কর্ণ শকুনি এই প্রতিজ্ঞা করিয়াছে যে" জয় হউক অথবা মত্যু ইউক পাণ্ডব দিগকে রাজ্যাদ্ধ প্রদান করিব না, তখন বহুক্ষণ বহুবিধ ঢিন্তা প্রবাহে ভাসমান হইলাম। আমি বিবাদেও সম্যত নহি এবং কুলক্ষয় দর্শনেও প্রীত নহি আমার স্বপুত্তে পাণ্ডুপুত্তে বিশেষ নাই। পুত্রেরা সর্মদা ক্রোধ পরতন্ত্রতা প্রযুক্ত আমাকে বৃদ্ধজ্ঞানে অবজ্ঞা করেন, আমি অক্স অথচ অঘুচিত্ত নিমিত্ত অপত্য সেহ বশতঃ সমস্তই সহ্য করি। অচেতন দুর্যোধন মোহাভিভূত হইলেও মামি মোহিত হই ইহাও যথার্থ বটে কিন্তু তাঁহার জয়ের আশা দূরগতা হইয়াছে কারণ এই যে যখন শুনিলাম অর্জুন দারকাতে স্নভদ্রাকে বল পূর্বাক বিবাহ করিয়াছে অথচ বৃষ্ণি বংশাবতংস বাস্থদেব বলরাম মিত্রভাবে ইন্দ্রপ্রস্থে আসিয়াছেনু ও দেবরাজ বৃষ্টি আরম্ভ করিলে অর্জ্রন দিব্য শরজাল দারা তাহা বারণ করিয়া খাণ্ডব দাহে অগ্নিকে ভৃপ্ত করিয়াছে ও পঞ্চাওৰ কুন্তী সহিত জতুগৃহ হইতে পরিত্রাণ পাইয়াছে এবং মহাপ্রাজ্ বিদুর তাহাদের ইন্ট্রাধনে যত্নবান্ হইয়াছে ও জ্যেষ্ঠ ভক্তি পরায়ণ অশেষ দুঃখ সহিষ্ণু ধর্মদীল পাণ্ডবদিগের বনপ্রস্থান काट नाना हिन्छ। ও সহস্রহ ভিক্ষোপজীবি মহাত্মা সাতক ব্রহ্ম চর্য্যা ্রম সমাধা করত গৃহপ্রবিষ্ট ব্রাহ্মণগণ বনবাসি যুধিষ্ঠিরের অনুগত হইয়াছে এবং দেবাদিদেব কিরাত্দ্মপি মহাদেবকে যুদ্ধে প্রসন্ন করিয়া পাশুপত মহান্ত্র লাভ করিয়াছে। সত্ত্যসন্ধ্র অর্থাৎ দৃঢ় প্রতিজ্ঞ ধনঞ্জয়

স্বর্গেগিয়া স্বয়ং দেবরাজের নিকট যথা বিধানে অক্তশিকা করিতেছে ও অজুন বরদান গর্বিত দেবতাদিগের অক্তেয় পু:লামা পুত্র কালকেয় সংজ্ঞক অভিশয় দুদ্দন্তি মহাপরাক্রান্ত ষণ্টি সহত্র অস্থর দিগকে পরা জয় করিয়াছে ও অস্থর বধার্থে ইন্দ্রলোকে গিয়া কৃতকার্য্য হইয়া প্রত্যাপমন করিয়াছে। কর্ণ মতান্ত্যায়ী ঘোষ মাত্র। প্রস্থিত, মৎপুত্রদি • গকে গন্ধর্ক্তরা বন্ধ করিয়াছিল অর্জ্জন তাহাদিগের উদ্ধার করিয়াছে আমার পুজেরা বিরাট রাজ্যে দ্রেপদী সহ অজ্ঞাত বাসকালে পাণ্ড বামুশকান করিতে পারেন নাই ও উত্তর গো গ্রহে মৎ পক্ষীয় অতি প্রধান বীর দিগকে অঁজুন একাকী পরাজয় করিয়াছে ও বিরাটরাজা আত্মকন্যা উত্তরাকে বস্তালঙ্কারে ভূষিতা করিয়া অজ্জুনকে সম্পুদান করিয়াছেন অর্জুন তাহাকে আপন পুত্রের নিমিত্ত প্রতিগ্রহ করিয়াছে এবং যুখিষ্ঠির নিজ্জিত নিদ্ধন নির্বাসিত ও স্বজন বিয়োজিত হইয়াও সপ্ত অক্ষেহিণী সৈন্য সংগ্রহ করিয়াছে তদক্ষি আমারওজয়ের আশা একেকারে পরিত্যাগ হইয়াছে অতএর হে সঞ্জয় তুমি শাস্ত্রজ্ঞ, মেধাবী বুদ্ধিমান্. পণ্ডিত ও মান্য সকলি বিবেচনা করিতে পার। সঞ্জয় যুধিষ্ঠির সন্নিকর্ষেউপস্থিতানন্তর ধৃতরাষ্ট্রের বিম্বিত রাক্য বিজ্ঞাপ্তি করিলেন তিনি কৌরবের প্রবোধার্থে আত্মদূতস্বরূপে সঞ্জয়েকেই প্রেরণ করিলেন যেহৈতুক দুর্য্যোধন মৃত্যুশ্রেয়োজ্ঞানে, আত্মাভিমানে অন র্থক বিপ্রতিপত্তি সমূখিতি করত পুনঃ পুনর্যুদ্ধেচ্ছাই করিতেছেন, আমি কদাচ জ্ঞাতি সহ আহবে আশ্বসিত নহি কেননা অফ্লকার্য্যে জাতি বধে निष्ट्ररग्नाजन। हि मक्षरग्न निष्ना वि । দুর্ফ্যোধনকে ইত্যাদ্যুপদেশ বিশেষ রূপে ি ুভাবে প্রদান করিবা যে আত্মসশ্বান রক্ষা করত শাস্ত্রবিহিত রাজ্যভাগ দিয়া অস্মদাদিকে বাধ্য রাখেন। সঞ্জয় তথা হইতে প্রত্যাগমন পুরঃসর অন্ধরাজান্তিকা গত হইয়া ক্রুসভায় সন্নিবিষ্ট সভাগণ সম্বোধনে সকল সদ্যু ক্তি উক্ত

করিলৈ তত্রস্থ সমস্ত মহাত্মাই নিরুত্তর হইলেন অন্ধানুপতি তদ্বাকা প্রাৰ ণান্তে শোকান্ধকারে অন্ধীভূত হুইয়া বহ্বাক্ষেপ যুক্ত নিরুক্ত করিলেন। যেমন ক্রোধেতে গুণ সমূহ ও দস্তেতে সত্যবাক্য ও পরণেষী হইলো थन ও कू रह से विनिसे ज दन त (भी क्षय द भी खन से इस उक्त भ देश खना जा प्पार्य कूल विनाम পाय অভএব মমপুত ছर्জ्य ছर्प्याथन অবিবেচনীয় সংকল্প ও বিবদনীয় প্রসঞ্চ পরিত্যাগ না করিয়া বিজিগীয়া মদে মন্ত হইয়াবিষম বিপদে পতিত হওনের নিমিত্তেই শকুনি কর্ণ দুঃশাসনৈর মত্রণায় যুদ্ধসঙ্জায় সজ্জীভূত হইতে উদ্যোগী আছেন এই বিগ্রহ বাননা क्रिश निश्र वीक, প্রগাত ভূদয় গহ্বরে উপ্ত হইল ইহাতেই যে ক্ষতিয় কুল বৈব স্থত কর গৃহীত হইয়া দারুণা যন্ত্রণা প্রাপ্ত হইবেন তাহাতে কোন সন্দেহ রহিল না। ধৃতরাষ্ট্রের প্রসুখাৎ সঞ্জয় এই সকল বাক্য श्वित्रा मिवत्रारम मञ्जल विदा है नगद शमन श्रेतः मत यूथि छेतानित मिन ধানে তাবদ্তান্ত কহিলেন অনন্তর কৌরবের দিগের সহিত বৈরাম্থ বস্বোর কোন কারণ না দুর্শাইয়া ধর্দাশীল যুধিষ্ঠির তৎখালেও লোক ধর্মভয়ে তত্রস্থ রাজসভায় সমুপস্থিত দৈবকীনন্দন শ্রীকৃষ্ণ সমীপে প্রীকৃষ্ণের কুরু সভায় গমন। পূর্বাই অপুরা বার্ত্তা সমুদায় করপুটে নিবেদন পূর্বাক কুরু সভায় প্রেরণোপযুক্ত পাত্র ভাঁহাকেই নিরূপণ क्तिलान। ज्ञान पीन प्रान् ज्ञानीन ज्ञाभीन शहेश क्त সন্তানের প্রবোধার্থে হস্তিনা নগরে গমনে স্বীকৃত হইলেন। তৎকালে দ্রোপদী অতি দুঃখিতাভাবে ঝটিতি সন্নিহিত হইয়া সবিনয়ে সমাবেদন করিলেন হে পরাৎপর জগ জ্জাগরক জনার্দ্দন অস্মদুঃখের কথা কি কহিব নিতারই নিষ্ঠুর পাপী দুর্য্যোধন যত কন্ট দিয়াছে তাহার ইয়ত্তা নাই তথাপি ভাহার অন্তঃকরণে সমর সমন্ধ বাসনার নিরাস হইতেছে না কিন্তু নিরস্তর জ্ঞাতি নিচয় পূষণ তনয় নিলয়ে গমনার্থক বিবিধ চেম্টার বৈর্য্যতা প্রযুক্তই স্থানির্মাল কৌরব কুলে কলকা ক্ষিত

করিতেছেন তথাপি তাহার পাপ পিপাসার কৃশা না হৈইয়া বর্ঞ অহরহ নিরবগ্রহ সম আতা গৌরবত্ব প্রাপ্তার্থে বিদ্বেষ্টাভাবে চিত্তবাধ ুকরত পাণ্ডকদিগের অহিত চিকীর্ঘু হইয়াছেন। হে কুমল লোচন विद्वा निर्माल भाखनिण स्वात्रिक पात्रा मंकलात অस्पामिष्कारभ প্রাণস্বরূপ জীবমাত্রেরই কার্যাকার্যো দেখিতেছেন ছুর্যোধন সক লৈর বাক্যাবজ্ঞাকরত অহস্বারে অহিতকার্য্য প্রবর্ত্ইয়া শাস্তান্তঃক রণে রাজ্যাংশ প্রদানে অসমাতি প্রকাশ করিতেছে, বিশেষতঃ ঐ পাপিষ্ঠ ছফের মন্ত্রণায় সভামধ্যে অনুপযুক্তাভিমর্যণে আসক্তমনা হইন্ধা এঅধিনীর কেশাকর্যণ পূর্বাক আকস্মিক উপস্থিত করাইয়া আত্মন্যায় অপর ছুরাচারিকে বিবস্তা করিতে অন্থমতি দিয়াছিল ও যখন পরিধেয় বস্ত্র আকোশ পূর্বাক ধারণ করিল তখন প্রতিক্ষণ অসূ তাপিনী হইয়া লজ্জানিবারণাথে তোমারই প্রতীক্ষণ করত অনুসনয়ে গ্রাহকের অমুগ্রহ যাচ্ঞা করিয়াছিলাম ও বিপুল বিক্রান্ত বিপক্ষা বলী বেষ্টিত হইয়া অপার সমুদ্রে পতিতানন্তর আত্মলজ্ঞারকার অন্যোপায়াভাব দর্শনে মিয়মীণে তবচরণে একান্ত শরণ লাইলাম এবং অন্তর্কোদনাভিভূতত্ব নিমিত্ত কতই বা আমেড়িত বিনতি স্তুতি ও সক রুণ বাধক্যাক্তি করত মুক্তি প্রার্থনা করিলাম মহাত্মা সভাগণ ছুফের ভয়ে নিরুত্তর হইল, কেহই আমা প্রতি করুণা বিতরণ করিল না, স্থতরাং ক্রমশোবসন্না হইয়া কেবল তব করুণা বলবতীজ্ঞানে ব্যাকুলি তান্তঃকরণে তোমার সজল জলদ শ্যামল স্মেরবজু কমল লোচন ও পীতবাসঃ পরিধায়ি পরেশ রূপ স্মরণ পূর্বাক ভূফীয়ূতা হইলে তৎ কালে ঘোরতর বিপদ ভিমিরাপনয়নার্থে করুণালিঞ্চিত বিমলনয়ন কিরণ বিস্তারিত করিয়া আপদ ভঞ্জন নামগুণে অস্মদুঃখদর্শনে অস্থির হইয়া গগন মুর্গ হইতে অনবরত বিবিধা বিচিত্র চিত্র চিত্রিত রাশী

मातावंशि।

দাসীর যোগ্যা যোগ্যা বিচার থে পুনঃ২ কহিলে সভাস্থ সমস্ত ব্যক্তিই নিরুত্তর হইলেন কেবল অমাদুঃখাসহাতায় কুরুকুল শ্রেষ্ঠ পুণাবান ভীষ্মদেব স্ত্রকপ্রায় থাকিয়াও করুণা তিমিরান্বিত উপদেশক বাক্য কহিয়াছিলেন যে বারম্বার কেন জিজ্ঞাসা কর সভান্থিত প্রাচীন खांगांनि महाजा निवृद्धत कीवत कि कीवन जाहि मकरलई **इ**छ श्रीय হুইয়াছেন অতএব মূতলোককে কোন কথা জিজাসিত হুইলে কি প্রতি বাক্স প্রদানে শক্ত হয়েন, হে কল্যাণি দ্রুপদস্থতে ধর্মব্যতীত ইহ সংস্থারৈ অন্যাভীষিত স্থানাই তছ্মাশ্রেয় করাই শ্রেয়ক্ষর কেন্না ধার্মিক ব্যক্তি ধর্মবলে বছকট যুক্ত না হইয়া বরং রক্ষিত হয়েন তুমি সেই ধর্মা সহায়িনী হইয়া অচিরেই অব্লিগণ নিধন করিবা তাহার কোন সন্দেহ নাই অপর তোমার দাসাবৃত্তিতা বিষয়ে যুধিষ্ঠিরকৈ জিজাসা করাবিধেয় এ বিচারণা অস্মদাদির নিতান্ত সাধ্যাতীত ইহা শ্রবণ করিয়া মনোদুঃখে অধোমুখী হইয়া ক্রন্দন করিতেছিলাম তৎ मगरम पूर्णामनै वात्रमात (कणाकर्षण क्रिटिक लाशिल এवर पूर्याधिन সহাস্য বদনে উক্ত করিল ছারে কৃষ্ণা অকারণে কেন রোরুদা্যানা হই তেছিস্ তোর স্বামী যুধি ঠির পাশকীড়ার প্রতিজ্ঞায় তেপরে বিসর্জ্ঞা দিল ইদানীং পরাজিতা হইয়া দাসীবৃত্তির আপত্তি করিতেছিস দেখ তে পঞ্পতি বসন ভূষণ পরিত্যাগ করিয়া ভলিতলে ভূত্যভাবে দণ্ড। য়শান রহিয়াছে। আসনোপবেশনের যোগ্যতা নাই তুই কি অহস্কারে কথাকহিতেছিস ইত্যাদি দারুণা বাণী কর্ণ বিবরে অশনি পতনবৎ সম্পুবেশিত হইলেসভাস্থ রাজবর্গ সদ্ধর্মিষ্ঠ জন সমবায় বাঙ निष्युं जि न्। कित्रा निः मस्म এकमा शक्षशां उत्त मूथ नित्रीक् न कित्र লেন তথন ধারাধর ব্যণপ্রায়া বিগলিতাক্র মুখীও দীনামলিনা ভাবা বিতা আমাকে দর্শন করিয়া ভীম নিতান্ত দুঃখ ও অপমান সহ্যকরণা সমর্থ হইয়া ভীষণ মুর্ত্তিধারণ পূর্বাক করেই করাকর্ষণ করিয়া ভয়কর

শাস প্রশাস ত্যাগকরত মহাক্রোধে কেশরি গর্জনের ন্যায়ধান कत्रठ ठर्জन ११ र्জन म्हाम्राध्य जूरका खानन भूर्यक विकरे वन्तन দুর্যোধনের প্রতি দৃষ্টিপাত পুরঃসর কহিতে লাগিলেন পাওবের পতি এই রাজা যুধি ষ্ঠির বিহীনে অম্মদাদির অন্যগতি নাই স্মতরাং ইহাঁরই ধর্মবলে আমরা বাধ্য হইয়াছি যদি এমত ধর্মাত্মা পাণ্ডবে শ্বনা হইতেন তবে কি এতক্ষণ কৌরব পামর গণ জীবন রক্ষণে সমর্থ হইত অরে দুষ্ট গরিষ্ঠ পাপিষ্ঠ নিচয় তোরদিগের দেজিন্যিতা সহ্যতা ও শমতা করণের ক্ষমতা কি অন্যের আছে। যুধি ঠির°স্বয়ং পরাভূতত্ব স্বীকার পূর্মক দাস হইলেন অতএব দাসীর কথা কি 'বলিব'তোরদিগের পদ্ধীয় নিখিলানর্থকারি শঠ শকুনি সহ পাষ্টি ক্রীড়ায় ছলনা দারা পরাজিত হইয়া অস্মদাদি ভ্রাভূ চতুষ্টয়কেও হারিলেন তদ্ধেত্তক সকল দুঃখ সহ্যকরিতেছি এবং ধর্মানন্দন ধর্মারাজ ধর্মপাশে আবদ্ধ হইয়াছেন তৎপ্রযুক্তই তাঁহার প্রতিজ্ঞার সফল তারপ দুরবস্থাবলম্বন পূর্বাক শচীপতি পরাজিত মম ভুজের দর্প থর্বা তা জন্য কৌরবগণের গর্মগুরুতা বন্ধিত ইইতেছে কিন্তু রে পামর আমি বর্দ্রমান থাকিতে রাজাজ্ঞ। হইলে তোরদের সমূল সশাথ নিধন করিয়া যমদণ্ড সম অথণ্ড দোর্দণ্ড বাহু দণ্ডদারা রাজ্য লণ্ডভণ্ড ও খণ্ড২ করিয়া পারিতাপ দূর করিতে পারি। বৃকোদর নিঃশব্দ হইলেকর্ণ কৌ তুহলাক্রান্ত হইয়া লঘিমাজ্ঞানে কহিল" রে দাসভার্য্যে দাসি প্তরাষ্ট্রগৃহে শীঘ্র প্রবেশ করিয়া যথোচিত দাসীর কার্য্য নির্মাহ কর এক্ষণে ভৌর উপর পাণ্ডবদিগের কোন কর্ত্ত্ব নাই। ধার্ত্তরাষ্ট্রগণ তোর প্রভু হইল সম্প্রতি যাহাকে ইচ্ছাহয় তাহাকেই ভজন। করিতে পারিস ইত্যাদি বহুতর কট্ক্তি শ্রবণে ভীম কলেবর প্রভাত বাতাহত কম্পিতাকৃতি, কুমুদ্বতী সদৃশ'হইয়া রক্তিমাবর্ণ চক্ষুদ্ধ ঘূর্ণন দার। भक्कांध कर्नक पृष्ठि क्रिय़ा कार्मिय्नी भक्कान्त नग्राय धार्यभक्त

किशाहित्वन " व्यत गृष्ठ मान्यभातािक युका विनमुमुधी छोभनी প্রতি যে অযুক্ত উক্ত করিলি তৎসমূচিত শাস্তি মমহস্তে নাস্ত আছে এখনই দিত্তেপারি কিন্তু ধর্মাধিকারী ধর্মপাশে বন্ধবিধায়ে অবাধ্য रहेया कानकार्या कतरनत माधानाह याहाहछक পयनाभिवे अखवी जि হোত্র প্রজ্ঞালিত হইয়া প্রথার দাহদহে অন্তর্দাহ হইতেছে। অনন্তর খুধিষ্ঠির প্রতি কৌরব প্রধান আত্মগ্রাহি চুর্য্যোধন কর্ত্ত ক্রইল যে কৃষণা জিতা কি অজিতা তুমিই ইহার বিধান করহ ধর্মানন্দন ত্র্চন শ্রের পুরঃসর অংধাবদন হইয়া সংব্যান বসন দ্বারা লোচনাননাচ্ছাদন করিলেন ছর্য্যোধন তদ্দর্শনে মদগর্কে হর্ষনাণ হইয়া কর্পপ্রতীক্ষণে প্রফুল বদনে ভীমের প্রতি অপাঙ্গদর্শন ভঙ্গীদারা গজশুণ্ড সদৃশ রম্ভাতরূপম সকল লক্ষণাক্রান্ত বজুবৎ উরুবাসোর্ভোলন পূর্বাক আমাকে দেখাইয়াছিল তদ্ধেত্তক মহাবীর বুকোদর মহাক্রোধে এতদ্রপ কুকর্দ্ম স্বচক্ষে প্রভাক্ষ করিয়া সভাবিদ্যমানে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন ষে উক্ত ভারত কুলের পশু, নির্লজ্ঞপামর যে উরু দেখাইল সমর मधा (महे भक्ष) छास्रदंत स्थीय भक्ति मधि। भवम्म शक्ष मस्य উহাকে সংহার করিব,,অতএব প্রভো এমত অসমীক্ষ্যকারিকে প্রয়েধ প্রদাসার্থে যাইবেন কিন্তু সে পাষ্ণু অবশ্যই তব বাক্যানবজ্ঞা করিবে না এবং তৎসহ প্রীতি করিয়াও কোন উপকরি নাই বরঞ্চ অপকার দর্শে ও সে পাপী অম্মদাদির জুগুপ্সাতেই সতত রত তাহার সাঁধুতা কিঞ্মিত্র নাই যেহেতুক ছুর্জন ব্যক্তি লোকতঃ ধর্মতঃ ব্যবহারে বর্জিত ইইয়া সর্বাদাকাপথগামী হয় স্থতরাং বর্ত্তিমুখ্ অথচ মহদ্যক্তি আর্থানিন্দা ভয়ে তদমুগত হইতে অভিলাষ করেন না সেই হেতুক কুরু সভায় গমন করিয়া প্রীত হওয়া কঠিন' প্রত্যুত অম্মজ্জানে তাহার শঠত। জালে আপনিও বদ্ধ হইবেন "অন্যান্পরিবদন্ সাধুর্যথাহি পরিতপ্যতে। তথা পরিবদন্যান হৃষ্টোভবতি ছুর্জনঃ" যেমন পরের

নিন্দা করিয়া শিষ্ট ব্যক্তি দুঃখিত হয়েন সেইরূপ দুর্জ্জনব্যক্তি পরের নিন্দাকরিয়া আহ্লাদিত হয়েন। হে কৃষ্ণ ইছ জগতী মধ্যে কি আশ্চর্যা ব্যবহার দৃষ্ট হইভিছে যেহেতুক কুরুকুলাধমু দুর্যগাধন অদ্যাপিও সিংসাবলে হিংসারূপ বৃক্ষরোপণ করিয়া তদাশ্রয়ে জীবন রক্ষাও পুণাজনিত স্থফলরূপ রাজ্যাদি স্থথাস্থাদন করিতেছে আর অহিংসা পথাবলম্বী তবাত্মগত যে পাণ্ডবগণ তাঁহারা অংশেষ দুঃখাদি ভোগ করিতেছেন তথাপি পর্যাবসান হয়ন। অতএব পুণাবস্তেরই কাল সহকারে পাপলক্ষণ দৃষ্ট হইতেছে সে যাহাহউক কুরুকুল ধুংসধাতীত পাওবদিগের নিস্তারের পন্থান্তর দৃষ্ট হয়না এবং পাওবেরা দূত প্রেরণ করিয়াও পাপকারি দুর্যোধনকে পুনঃ২নীতিধর্ম বুঝাইবারজন্য অশেষ যত্ন করিয়াছেন তথাপি প্রবুদ্ধ হয়েন নাই ষেমন রোগিজন মৃত্যুকালে ঔষধ ভক্ষণ করেনা ও যেমন অলি বৃশ্চিক বেণুরস্তা বিনাশকালে ফলো দ্ধার করে সেইমত চুর্য্যোধনের আসনকাল উপুস্থিত হইয়াছে তজ্জন্যই স্থল্পরেবাক্য গ্রহণ করেন। কিন্তু তোমার বাক্যা বজ্ঞাকৃতহইলে তত্তৎ পাপ ব্যুহেরপ্রতিফল অবশাই হইবেক ইন্ড্যাদি ক্রেপদকন্যার খেদায়িত বচুনে কৃষ্ণ কৃষ্ণাকে করুণারসাভিষিক্ত বাক্যোক্তি করিয়া শাস্ত্রুমা করি লেন যে তোমার দুঃখ ত্বরায় প্রমোচন ও দুর্য্যোধনাদি অচিয়ে শমন গ্রাসে পতিত হইবে। ' হস্তিনায় শুভ যাত্রাকালীন শ্রীহরি সন্নিধানে পাওব সকলে ঐকমত্য হইয়া ক্ষমাশীল স্বভাবে ইহাও কহিয়াছিলেন যে হে বিপন্নিরাকরিষ্ণু কৃষ্ণ অন্ধরাজকে কহিবেন রাজ্যদেশ বৃত্তি অশ্ব গজ ধন, জন, সমস্তই তাঁহার বণতাপন্ন হেতুক বিসর্জ্জন দিয়া উদা সীন হইয়াছেন এক্ষণে যদিচ দুর্য্যোধন সমুচিত রাজ্যাৎশ না দেন তবে কেবল ইন্দ্রপ্রস্থল বারণানগর হস্তিনার উত্তরাংশে স্থকান্তি বা সিদ্ধি গ্রাম ও তাহার দক্ষিণাস্থেশ পাওব নগর এই প্রশ্বাম মাত্র প্রদান পূর্বাক অরুশিন্ট সাগরাবধি হিয়াচল পর্যান্ত সমন্ত রাজ্য সম্ভোগ

क कन् श्रनर्वितार्थ श्रीषा नाइ यिनगा क्क्रमसात्वा इहार অস্বীকৃত হয়েন তবে এই মহাপাপে চির্ম্থায়িনী রাজলক্ষী অবিলয়েই मवीयभी भछ इटेरवक এवर तांका প্রাপ্তার্থে তাঁহাদিগকে সংহার করি लिए भाभ ए कलक नाई। अनस्त जगवान् उभिष्ठ इहेल यथा যোগ্য সন্মান পুরঃসর সভাস্থ সভ্যানিকায় সমভিবাদন করিতে লাগিলেন अग्वान् তख्य गश्वाग्वाव्यक वहन माधूर्याचाय वृक्ष क्रिया जिल्लिन विषूत्र गृश्ट উপস্থিতানন্তর অধিবাস করিলেন, ঐ দীনহীন বিদুর সং সক্তমনা হইয়া যথাৰ্থ ভক্তিভাব প্ৰকাশ পূৰ্ব্বক অথণ্ড সাধ্য সেবা শুশ্রুষা সম্পন করত কৃষ্ণ মাহাত্ম্য বর্ণনা করিলে স্তুতি বশতঃ সম্মদ সমন্বিত হইয়া নারায়ণ সকৌভূকে কহিলেন ছে বিদুর ভোমার মধুর কথায় কি উদর জালা দূরহয়, আপাততঃ কৃৎপিপাসাভিভূতত্ব নিমিত্ত জঠর জ্বলিতেছে এবং সানানস্তর বিনা জলপানে চিত্তাইস্থ্যাতায় কাতর হই তছি বিধুর ক্রাক্তিতে উদার বিদুর অদার দামোদরের ক্ষুধা मृत कत्वार्थ मेगामद्र सीय शृष्टमात मगाविक रहेया अविभिष्ठ किवल किथि कुर्जि क जिया छत छा छ पूर्तर पिथिया पूर्व के मनामान पूर्शि তান্তঃকরণে ছঃসাহসে তাহাই পদাপতির পদা করে প্রদান করিলে জীপতি দুঃস্থাবস্থাবস্থিত বিদুর দত্ত ত গুলকণামাত্র প্রাপ্তি পূর্বাক করে? করান্তরে বন্ধন করিয়া সন্তুষ্টে মুখব্যাদান করত যথোপিসতাদন করি लেन विपूत ज्यकाल लड्कांग्र नग्रानामीलन ना कतिया क्र थ थे जैकरन निमौलन कितिल অন্তর্যামী নারায়ণ তাঁহার এবস্তু ভাচরণ দর্শনে পরম ভক্তজানে উদীরিত হইল যে অদ্যবাসরে যাহা ভিক্ষায় লক্ষ হইয়াছে তাহীই রন্ধান করিয়া দেহ। অদ্যতব গৃহে অবস্থান পূর্বাক মাধ্যাত্রিক ভোজন ও আমোদ প্রমোদে ইন্টালাপ করত কৌরবের বিবরণ শ্রবণ পুরঃসর রজনী জাগরণ ও কর্ত্তব্যাহ্ন প্রান্ত করিবারই সম্পূর্ণ আকু ঞ্চন করিতেছি। বিদুর ভোজনায়োজন নিমিত্তক কুস্তীকে কহিলে তিনি

সত্ত্বে রক্ষন সমাপনান্তে ভোজনাহ্বান করিলে সাঁত্যকিসহ এক্সিঞ্ मानत्म अधि मण्यामन ଓ आहमनात्य रती उकी हर्सन श्रात विस्मान উদর পুর্ত্তি পরিতৃপ্তি প্রকাশ করিলেন অনন্তর বিদুর কর্তৃক ব্যাহ্ত হইল যে তবীগমনে শকুনি মন্ত্রী পরামর্শ পূর্বেক দুর্য্যোধনকে উপ দেশ দিতেছেন যে পাওবপক্ষে কৃষ্ণ নিতান্তই সহকারী হইয়াছেন অতএব তাঁহাকে বন্ধন করিয়া রাখিলে উহারাবিনা কুণ্ণে অবশাই সমর শায়ী হইবে যেমন বলিকে বন্ধন করিয়া ইন্দ্র দেবরাজ্ঞত্ব করিয়াছিলেন তদ্রূপ ভূমিও রাজ্যভাগ করিবা বিশেষতঃ পূর্মাপর শাস্ত্রমত এই নীতিও আছে যে শক্তকে ছলেবলে কলে কৌশলে দমন করিলে পাপস্পর্শ হয়না। দুর্য্যোধনাধ্যধামে রধানন্দন প্রভৃতি নিভৃত স্থানে উক্তযুক্তি সম্পাদিতা অপ্রিয়া বাণী কর্ণবিবরে প্রবিবেশ হেতুক কুম্ভকার চক্র সদৃশী বিঘূর্ণিতা করিয়া ক্রেধি সক্রকারে কহিলেন পাপা চারি দুর্য্যোধনের ইয়ৎ ০ অহস্কার জিনায়াছে অতএব নুহূর্ত্ত মধ্যে সমুচিত শাস্তি দিয়া কুরুকুলান্ত করিতে পারি। ইতাপদি বিধুর রোষ নিশিত বচনে বিদুর ভীতি বশতঃ কর্যোড়ে পুনরুক্তি করিলেন হে কৃষ্ণ অহংযু দুর্য্যোধন তোমকে বন্ধন করিবেক এমত প্রশক্তি 'ভাহার কি আছে হে স্বেচ্ছাময় বিষ্ণো তুমি ইচ্ছ। করিলে নিমেষার্দ্ধ কালে সৃষ্টি প্রালয় করিতে পার। হে ভক্তাধীন ভগবান ভক্ত জনৈক ভোষণার্থে কেবল ভক্তিপাশেই বন্ধন গ্রন্থ হইতে পার নচেৎ তোমাকে বন্ধ করণের সাধ্য কাহার আছে। তাহার দৃষ্টান্ত একদিন গোকুলে বাল্যমীলা করণকালে ছলে যশোদার ক্রেধি বাড়াইলে তোমার বৃহতী মায়ায় মোহিত হইয়া

হইণ ইত্যন্তে মায়া প্রকাশ পূর্বক মাতৃত্বঃখ দর্শনে মায়াবি স্বভাবে দয়াছাতি প্রসারণ দারা নিজ মায়া পরিত্যাগ করত স্বেচ্ছায় বন্ধন ষাতন গ্রহণ করিয়াছিল। হে আদি নিরঞ্জন পূর্ণব্রহ্মন্ অল্পাতি ছুর্য্যো ধন মিমিত্ত কি কারণ জোধ করিতেছেন সর্কশক্তিমান্ নারায়ণের শক্ত্য তিক্রাস্ত পরাক্রান্ত কে আছে অতএব মায়িক স্বভাবে মমাপরাধ ক্ষমা করুন। কৃষ্ণ বিছরের প্রবোধবাক্যে কোপাগ্নিদ্ধাম মানস বারিতে বারণ করিয়া কৌরবের দোষ খণ্ডন পূর্মাক উক্ত করিলেন যে অচিরে দুষ্টান্দ্রন হইবেক অত্র সন্দেহো নাস্তি। অনন্তর বিদুর পরম পুলকান্তিত হইয়া কৃষ্ণ সাত্যকিসহ নানাপ্রকার কাব্য কৌতুক কথালাপে তিন জনে বহুনিশীথিনী স্থথে জাগরণপূর্বক অবশেষে ক্থাশেষে শেসভমসে শয়ন করিলেন। পরেদাঃ শ্রীকৃষ্ণ প্রভাতে প্রাতঃকৃত্য সমাপন করত গোবিন্দ হৃদি কম্পানারক্তাক্ত বিশ্বাভাতিরিক্ত সবজুনেত্রস্থ কনীনিক৷ 🚆 কুরুরাজ সদনে প্রয়াণ পূর্ব্বক দিব্য রাজুসিংহানোবেশন করিলে नाना जिल्लामा ताज अगृर এवर नातम, लीलका जिल्लामि मूनिशन অন্তের ভবনে উপস্থিত হইয়া যথাযোগ্যাসনে বসিলেন তাহাতে সভার পরমাশোভার পরিসীমায় ইন্দ্রের দেবসভার রুচিও সামান্যা জ্ঞান হইতে লাগিল। তত্রস্থ রাজসভায় শৌরি প্রসঙ্গাধীন কহিলেন হে খুত্র তুমি ত্রিভুবনে অষ্ঠাপাতা সংহত্তা জগতপতি অসৌমাস্থর ভাষিত ্রিরাট্রান্দি কৌরবগণ ওরাজা দুর্য্যোধন একায়নে শ্রেবণ কর ধর্মানন্দন জ্ঞাতি বিরোধ ভঞ্জনার্থে বিনতি প্রকাশ পূর্বাক আমাকে সংপ্রেষণ করিয়াছেন তাহাঁরা সমৃচিত রাজ্যাংশ প্রাপ্ত হইলেই তৃপ্ত হয়েন এবং পরস্পর ভাতৃগণ নির্বিরোধে রাজ্যাদি ভোগ স্থথে নি বৃত থাকেন ইহাই সম্পূর্ণ ैवामना करतन ও छिछि विनिष्ठे পরিশুদ্ধ চিত্ত সাধু পাওবের। আত্মহুর দৃত্ত মন্যানে ছর্জ্যোধনাদি কৃতাপরাধ বৃন্দ মার্জনা করিয়াছেন,, ইত্যা দি বাক্য শ্রুতি গোচরীভূতা হইলে ধৃতরাষ্ট্র ছর্যোয়াধন প্রতি কহিলেন যশোদা মত যতনে বিষল্পনে রৰ্জ্জুআনয়নে বন্ধনে নিযোজন করিলেন ্তে পুত্র শুভংগু কৃষ্ণ প্রমুখাৎ পাওবদিগের বিনয় বচুন প্রবণ করিলা ততই তোমার শরীর বৃদ্ধিহইতে লাগিল দাকূলি প্রমাণ বদ্ধনেও অন্টন একণে তাঁহাদের পূর্বাধিকৃত রাজ্ঞা ধন রল্পগাম নগার্যাদি প্রদান

পূর্বক সমাক্রপে সম্প্রীতি বন্ধ নও ইহলোক প্রাপ্য পূর্ণানন্দ ভোগ কর নচেৎ পশ্চাৎ বহুত্বঃখ পাইবে। এবং পাগুবেরা পাশকীড়ায় যে নিয়ম করিয়াছিল তাহাতেও মুক্ত হইয়াছে তবে অকার্ন্নে কেনইবা ষদ্দ কর এই গহিত অপকর্মে ধর্মে সহাতা না হইয়া বরক সর্বতো ভাবে ইহ সংসারে অপযশ অপকলন্ধ ভাজন হইবা, ছুর্য্যোধন উত্তর করিলেন তাত জীবিতবান্ থাকিতে কি পরৈধিত পাণ্ডব সহিত প্রীতি সংঘটনা হইবেক তাহাদের শক্তি থাকে যুদ্ধ করিয়া রাজ্য লউক। ইতিবাক্যে ধূতরাষ্ট্র নিতান্ত বিরক্ত হইলেন। অনন্তর ভীষা ভোগ কৃপ অশ্বথামা ও নারদমুনি প্রভৃতি সভাসদ্ মহাজনগণও প্রত্যেক্ই প্রবোধ দিতে লাগিলেন হে মলিনাশয় রাজন্ তোমার মানস মলাপ कर्षन ও मार्श्यापि प्लाय विनिर्म्मु क कि इट्रेवर न। यार्श्यक धर्मा শাস্ত্রসম্মত জ্ঞাতি বত্তাপহরণ রূপ কর্মাই অতি অধর্মা জ্ঞান করিতে হয় অতএব তুমি স্বধর্মো স্থিতিকরত উপস্থিতবিষ্ট্রে সম্মতিতে সম্মত হইয়া অধর্মকর্মাহতি ছুর্মাড প্রকৃতি প্রকৃতরূপে পরিত্যার্গ পূর্মক সম্পুতি প্রকৃত রাজ্যাংশ প্রদান করণক পাণ্ডবগণের প্রতি প্রাত কর তাহাঁদি গুকে বিরক্ত করা কদাচ শ্রেয়ক্ষর নহে যে হেতুক পাণ্ডুসন্তানেরা জগ নাওল মধ্যে অজেয় হইয়াছেন ইক্রাদি দেবগণ তোগার স্বপক্ষ হইলেও স্বধর্মে থাকিয়া অতিশীঘ্র ধর্মাধিকারি যুধিষ্ঠির সমিধানে প্রয়াণ পুরঃ সর গণ্ডস্থলে কুঠারি বন্ধান ও দন্তে তৃণচ্ছেদন করত বিনম্ম পূর্বাক পূর্বা পূर्वाभवाध कमा প্রার্থনা ও অদ্ধ বাজ্যাংশ প্রদান ও বাজাকে ইন্দ্র প্রান্থ আনিয়া রাজ্যাভিষিক্ত করিলেই কুশল হইবেক। সর্বশৈষে পরশুরাম ব্যাস পৌলস্তা প্রভৃতি প্রাজ্ঞতম পুরুষ কর্ত্ক পূর্বোক্ত বিবিধ বিধি বিধানে প্ররোচক বাক্য প্রোক্ত হইলেও প্রবোধিত হওয়া

কণীকেরন্যায় প্রবেশ করিল তদ্ধেতুক কাহার কথাই তাহাঁর শাঠ্যো পহত চিত্তে স্থান পাইল না স্নতরাং তৎকালে অন্ধরাজ অধোবদনে চিন্তা করিছেন যে শেষকালে মম দৌর্ভাগ্য বশতঃ কুপুজের কুমতি বৃদ্ধের বলে কালেতে ফল ফলনের প্রাক্কার দেখিতেছি। তথন ও কৃষ্ণ কহিলেন তে কুরুরাজন্ যদাপি আছু রাজ্য প্রদান না কর তবে ইন্দ্রপ্রস্থ কুশস্তল বারণাবত সিদ্ধিগ্রাম পাণ্ডবনগর এই পঞ্জামমাত্র প্রদান করিয়া নিদ্ধ ন্দে, বৈভব ভোগ কর। আমি ভোমাদিগের উতর কুলেরই সর্বাদা হিতচিন্তা করিতেছি অভএব মমবাকো পাও বসহ প্রীতি করাই শ্রেম্কর, কেননা পরাধীন পাণ্ডুপুজেরা তোমাকর্ত্ক বহু কট্ট পাইয়া অরণাদি ভ্রমণ হেতুক ইদানীস্তন একান্তক্লান্ত হইয়াছে কদাচ তবসহ রণেচ্ছ্ক নহে এমত সময়ে ু জ্ঞাতি হনন করা অতি অমুচিত। হে.ছুর্য্যোধন তুমিও অনেক শাস্ত্রাধ্বায়ন করিয়াছ, পৃথিবীতে জ্ঞাতিবধ তুলা আর মহাপাতক নাই অতএব পুনঃ২ বারণ করিলেও অমার বাক্য উপেক্ষা কর। জগৎপতির ব্যাহার প্রাবণে ছুর্য্যোধন মহারোষে উত্থান পূর্বক মুক্তকণে ব্যক্ত করিলেন যে পাণ্ডবকে তীক্ষ্ স্থচাগ্র পরিজ্ঞি ভূমিও বিনাষুদ্ধে দিব না এই অখণ্ড প্রতিজ্ঞা করিলাম। এবিষিধ তাঁহাদিগের সহিত সমরে জয়ী হওয়া কঠিন হইবেক। অতএব 🥻 কঠোর লপিত প্রতীত হইলে নিঃশব্দে রহিলেন কিয়ৎকলি গতে কৃষ্ণ ধৃতরাষ্ট্রকে কহিলেন, আমি উভয় পক্ষের হিতার্থে দূত স্বরূপে আ সিয়া বিছুর মুখে অত্যদ্ভ বাক্য শুনিলাম যে তোমার পুত্র আমাকে বন্ধান করিতে ইচ্ছা করিয়াছিল অধিক কি কহিব "রুফৌদেবঃ কুবৃদ্ধিং দশ্যতি একণে ছুরাশ্য ছুর্যোধনের ক্ষঞ্চে ক্রে ক্ষেত্র দেবাধিষ্ঠান করত কুবুদ্ধিকে প্রদর্শন করাইতেছে হে রাজন্ তোমাপ্রতি দৃষ্টিপাত করত সমস্ত দোম মাৰ্জ্জনা করিতেছি "নতুবা" পাণ্ডবেরাই বা কেন বন ভূমি দূরে থাকুক ব্রঞ্জ ঐসকল বাক্য ক্রাপুরুষ কুরুকুলগতির কর্ণকুহরে ভ্রমণ ও বহুবিধ ছঃখভোগ করিবেশ্ববং আমিই বা ক্রে তব বিদামানে

আগমন পুরঃসর ছর্যোধন কর্ত্ক তুচ্ছীকৃত হইব। যেমন প্রকাণ্ড প্রচণ্ড কেশরী ক্ষুদ্র মৃগকে ও গরুত্বান নাগগণকে বিনায়াদে খণ্ড২ করে তদ্রপা কুরুগণকে এক মুহূর্ত্তেই উষ্ণধৃষ্টি তনয়াগারে প্রকর্ষরাপে প্রেরণ করিতে পারি। ইত্যাদি বাক্য কহিতে২ উচ্চৈঃস্বরে হাসিত্তে২ আরক্ত লোচনে অতিরোষে ভয়ানক মূর্ত্তি ধারণ পূর্বাক দয়াময় দেব মায়াদারা স্থীয়াঙ্গে অপাঞ্চজীতে ত্রিলোকলোক দেখাইলৈন। তাহা তে সমাগত সভানিকায় দিবাচক্ষু প্রাপ্ত হইয়া একতান ছিরদ্টে ভগ বানের বিশ্বসূর্ত্তি দর্শন করত বিস্মিত ও সূচ্ছিত হইলেন। অনস্তর ঞীকৃষ্ণ মহাত্মা মুনি নিচয় ও ভীত্মাদি মহাজনগণের স্তুতি তৎপরতায় ক্রমেইস্বীকৃত হইলনা অনন্তর পঞ্জান মাত্র দিতে কহিলে তৎকর্ত্ত ক • উররীকৃত হইল যে যুদ্ধব্যতীত স্থচ্যগ্রাচ্ছাদিত ভূমিও দিব না এবং মমবাক্য সমুজ্বিতানন্তর সভা হই ত যুগপঁৎসক্রোধে উঠিয়া গেল অতএবই দুর্য্যোধন সহ নিশ্চয় যুদ্ধ করিতে হইবেক সম্প্রতি ইহার প্রবিধান করহ। রাজা যুধিষ্ঠির এবস্তুত আশ্চর্য্য উচ্চবংচ্য প্রবণ করিয়া দুর্য্যোধনের মাৎসর্য্যেও চাতুর্যোর প্রাথর্য্যে যুদ্ধকার্য্যে প্রবর্ত্ত

হইয়া কোপ পরতন্ত্র প্রযুক্ত অবশাঙ্গ হইলেন, পরক্ষণে অর্জ্জু नामित्क कहिलान मूर्याधन मृज्यथ मृजुन कत्र थून २ ममरत्र श्मिज ু হইতেছে অতএব রণসম্বন্ধে প্রবর্ত্ত হও। নিজামুজ সহদেবকে কহিলেন রণ্যাতার শুভদিন নির্ণয় ও কুরুংকতে যুদ্ধার্থে সপ্তা কোহিণী সেনাগণকে স্থসজ্জীভত হইতে আদেশ কর। তিনি ভাত্রস্থ শিরে ধারণ পূর্বক দৈন্য কটকে সংবাদ দিলেন। রবোমুত্ত সেনানিচয় নানাস্ত্র শস্ত্রে স্থসজ্জীভূত হইয়া মহা সমারোহে গগণ স্পদ্ধী হুছস্কার রবে পৃথী কম্পান্থিত করিতে লাগিল। রাজা যুধিষ্ঠির উলক দৃত মুখাৎ কৌরবগণের বিগ্রহান্নিত বাক্য শুনিয়া প্রসন্ন হইয়া বিশ্বরূপ মায়ার বিভূতি সম্বরণপুর্বাক পুনরপি দুর্যোধনকে 🥻 সবিনয়ে দ্রীহরিকে কহিলেন বিনারণে আর নিস্তারের পথনাই অভএব সভাগণ সাহিত্যে নানামত সদুপদেশ সম্পুদান করিলেন তাহাতেও 👹 তদুচিত কার্যা বিধানই কর্ত্তব্য হইল। অন্তঃপ্রজ্ঞ কারুণাময় এীক্ষ্ণ স্থবোধিত না হওয়াতে, পরম ভাজন সভাজন সেম্ভাষণ করত তথা 🖁 তৎক্ষণাৎ যুদ্ধাক্তা প্রদান করিকোন অনন্তর, যুধিষ্ঠিরের অনুমত্যনুসারে হইতে প্রস্থান পূর্মাক কুন্তী ও কর্ণ সহ সাক্ষাৎ ও কুরুসভার সমস্ত নৃত্তান্ত চিত্বারিংশুৎ সহস্র রাজবগ স্বংসৈন্য সমভিব্যাহৃত হইয়া বিরাট নগরে স্থবিদিত করাইয়া সৈনাগণ সাহিত্যে নানা বাদ্যোদ্যম কোলাহলে তিপস্থিত হইলেন এবং পঞ্চকোটি বুখুট ও ত্রিংশৎ কোটি হস্তী ও বিরাট রাজ্যভায় উপনীত হইলেন। পঞ্চপাণ্ডব সমস্ত্রমে বিশ্ব 🦥 ষটিকোটি পদাতি এবং হস্ত্যশ্বার্ত অসংখ্য মহাবীর পদাতিগণ ও জ্বেনের উপবেশনাসন সমর্পণ করত কার্য্যসাধন বিবরণ বিস্তারিত 🖔 প্রাপ্তক্ত মপ্ত অক্ষেহিণী মেনা মহ আগত মহাবল পর ক্রান্ত বিপক্ষ রূপে প্রবণ করণ কারণ জনার্দন সম্বোধন পূর্বাক জিজ্ঞাসিত ইইলে কৃতাপ্ত সম দুর্দ্ধন্তি দৈন্যাবলী সমবেত হইয়া বিপুল বিক্রমে সিংহনাদ শ্রীহরি কহিলেন নরাধ্ম দুর্যোধনের অবাধ্যতার কথাকি ব্যক্ত করিব, 🖁 শঙ্ঘধ্বনি জয়ঢ়ক্কাদি বিবিধ বাদ্যোদ্যম করিতে•লাগিল এবং মহাপ্রভা তোশ্দের প্রাপ্য রাজ্যাংশ প্রদানার্থে বিধিমতে বুঝাইলাম কোন 🦫 বান্বিত ঘটোৎকচ বীর কিম্বদন্তী দার: সমন্ত পঞ্চকে কুক পাণ্ডবের যুদ্ধ বার্ত্তা প্রাঞ্চনন্তর দুই কোটি রাক্ষস পরিবার সহ উপস্থিত হইলেন। পুত্র সহ বিরাট নৃপতি ও পঞ্চাল রাট্ ধৃষ্টদুমু ভোজতনয় জয়সেন শ্রসৈন নৃপ কাশীরাজ শিখণ্ডী প্রভৃতি সমাহৃত সমৃ দ্বিমান্ ক্ষাভুগবর্গ চতুরঙ্গ দৈন্য দলবল সাহিত্যে উপনীত হইলে বৃকোদ্র বীর একদা শত২ বৃণ্ডিজ্ঞসম মহাঘোর শব্দে ত্রিভুবন কম্পমান করিয়া প্রমামোদে পাথোধি সলিলে নিমজ্জ্যান হুইয়া গানন্দে গদাধারীণ করিলেন এবং

किलिय मत्न विख्क रहेयां मिलायमान रहेन धवर किल्र मन देनि खिर শিক শাক্তীত পরশু হেতিক অতিজব বাহিনী এবং দিবা মৌর্কীযুত কৌদণ্ডবাণ ও নরাচ খড়নচর্মা মুদার ভিন্দিপাল পরিঘ কুঠার পরশু শল্য তোমর প্রভৃতি নানাবিধান্ত শস্ত্র ধারণ পূর্বাক রণ বিশারদ বীর গণ সংপ্রহারোক্সভতায় শৌর্যা বীর্যা প্রকাশপূর্বাক সিংহনাদ বাহ্বাক্ষা লন লক্ষোলক্ষনে ও প্রবহনশীল ঘোর বাতক্ষম দারা পদপাংশু অন্ত রীক্ষাজ্যদিত ও নানাবিধ শব্দে শ্রুতি নয়ন সমূহ সম্পীত্যমান হইতে লাগিল। কৌরবামুগত ষষ্টি সহস্র মণ্ডলেশ্বর ভূপতি উরশ্চদ পরি

व्यर्कुन, नकुल महामत ও फ्रोनमीत नक्षनुक वाजिमणा প্রভৃতি किमानि পরিধান পূর্বাক যুদ্ধে প্রবর্ত্ত ইইলেন তাই।দের একৈক রাজার স্থসজ্ঞীভূত হইলেন সর্বাণ্ডো শ্রীকৃষ্ণ স্যান্দনারোহণ করিলেন তদমু সহ একশৃত সহস্র গজারোহী ও প্রত্যেক হস্তির সহ শত২ অশ্বার্ক্ত সরণ ক্রমে রাজা যুধিষ্ঠির সাত্যকি সহযোগে ও জাতৃবর্গ এবং ট্রামা ও তদমুগত একশত ধামুদ্ধী ও একৈক ধন্বি সহিত দশ্ব ফলক অন্যান্য ভূপথর্গ ও অসংখ্য সেনাঙ্গ দৈনিকাদি সমভিব্যাহারে শুভ পীপাণি সেনা ইত্যাদিক্রমে উৎসাহশীল অথচ প্রীতি বিশ্রমভাজন জাতি দিনে রণ্যাত্রা করিলেন। উক্ত পাণ্ডববাহিনী বিরাট নগর হইতে । বন্ধু ধীসচিয সজ্জন কুটুম্ব ও সপ্রতাপ ভূপনিচয় রথকড্যা রোহণ পূর্মক দিনত্রয়ে একশত বোজন প্রথোত্তীর্ণ হইয়া জয়ং শব্দে কুরুক্ষে ত্রয় সুমবেত হইট্বল গজবাজি রথধাজ প্রেচ্র পতাকা পরিশোভিত ভূরিং উত্তরাংশে উপস্থিত হইলেন। অপর পক্ষে দুর্য্যোধনের আজায় দুঃ অন্ত্রশাস্ত্র বিশারদ বিপক্ষ যম স্বরূপ মহাবল পরাক্রান্ত অসংখ্য কুরু শাসন বৈরনির্যাতনার্থে কুরুবৈদা কটকে ঘোষণা দারা একাদশ ট্রিনা শূহের শস্ক্ত ভের্যাদি ও ঢাক ঢোল বাদ্যোদ্যমে মহোদ্ধি অক্ষেহিণী সৈন্যগণকে সমর সজ্জায় স্থসজ্জীভূত হইতে আদেশ করি 🖁 কল্লোল তুলা মহাকোলাহল কল্ শব্দে একদা ত্রিভুবন কম্পানান লেন। অনস্তর মহাবীর ভীন্ন দ্রোণ কর্ণ কৃপাচার্যা ভূরিশ্রবা শকুনি ইইতে লাগিল। এমত সময়ে অকস্মাৎ মহাশব্দে বায়ু বহন, মেঘ কৃতবর্মা অশ্বর্থামা *সোমদন্ত বাহলীক ভগদন্ত শল্যরাজাদি ও অপরা পর রাজবৃদ্দ ও শ্রেণীবদ্ধ শ্বেতাতপত্র পতকাপরিশোভিত দুয়োধন 🎆 শীন, দিমুখ পেচকের ফোরতর ব্রব ও শিশুগণ পরস্পর দণ্ডহস্তে যুদ্ধ প্রভৃতি শত সহোদর সহ কৌরব বাহিনী সংগ্রাম সজ্জা করিলে তৎ করণ বৃক্ষের বিপরীত ফলদর্শন ইত্যাদি অমঁঞ্জল সংযুক্ত অদুত ব্যাপার সঙ্গে কঞ্চুক সরাশন শিরোক্ত সংযুত ও বর্ষিত শস্ত্রাজীবপত্তি সংহতি ইইতে লাগিল। বিদুর তদ্যে অসম্ভটে বিশ্বয়জ্ঞান ধৃতরাষ্ট্র সন্ম ধানে সামুদায়িক বিবরণ নিবৈদন করিতি অন্ধরাজা ব্যাকুল হইয়া শোকাকুলে অক্ষ প্রায় নিরুৎসাহে উপবেশন পূর্কক ছিন্তা করিতে लांशित्लन य पूर्येत मञ्जनांत्र क्रूक्ल धर्म रङ्कूक आश्वरित्रिकन ও অভব্য দর্শন হইতেছে। তদানীন্তন এতদ্রপ নানাপ্রকার অঘট টঘনায় ব্যাসদেব কুরুসমাজ সন্নিকর্ষণে ঝটিতি উপস্থিত হইয়া वृक्षां त्रांकां क किश्लिन कू क़कूल। निक्षा क्या इहेरवक स इक्क কর্মফলায়ত্ত বশতঃ জীব সকল সংসারে ভ্রমণ করিয়া দৈবকর্ত্ত ফলাফল প্রাপ্ত হয় অতএব দৈবকৃত কর্মের খণ্ডন কেহই করিতে পারেন না কি করা যায় পৃথীর যাবৎক্ষত্রিয় একত হইয়া তবংশ ধাংস হেতুক এই মহাযুদ্ধোপস্থিত হইল। হে রাজন্ বিজ্ঞ বিচ ক্ষণ হইয়া কি কারণ শোক করিতেছেন তোমার পুর্ত্তীগণ এই সমরেই निপতन रहेर्वन यिन श्रुल अकन कूपूँशिन वर्ध ও त्र पेर्नन कत्न श्राम

^{*} ভীষ্ম সান্তমুরপুত্র, বাহলীক রাজা তাঁহার ভ্রাতা বালখদেশ ইহাঁর রাজ্য ছিল। ঐ বাহলীক রাজার প্রত্র সোমদত। সত্যধৃতির পুত্র কৃপ ইহাঁর ভগিনী ৷

হয় তবে তোমার দিবা চক্ষুঃ প্রদান করিতে পারি, তাহাতে অস্তারাজা করণা বচনে ব্যাস তপোধনকে কহিলেন, তদ্দর্শন দূরে থাকুক পৃথী মধ্যে এমত কোন ব্যক্তি আছে যে আত্মকুল ক্ষয় প্রোণে স্হ্যতা করিতে পারে। অর্ত্তএব আত্মনঃপ্রসাদাৎ স্বকর্ণেই প্রেবণ করিব ইত্যুক্তানন্তর তাঁহার চরণ ধারণ করিলেন। মগ্যি ব্যাসদেব গোস্থামী ক্ষণৈক চিন্তা করত সপ্লয়কে ত্রিভুবনেক্ষণ যোগ্য দর্শনার্পণ করত ধৃতরাষ্ট্রকে কহিলেন সঞ্জয় দিব্য চক্ষ্ণ প্রত্যক্ষে উভয় পক্ষের সহ্খ্যা লক্ষ করিয়া তোমার সমক্ষে অহোরাত্রের বিবরণ বিস্তারিত রূপে কহিবে 🗓 তুমি গৃহে থাকিয়া সর্ববার্ত্ত। প্রাপ্ত হইবা পরস্ত দিবসে গুমকেতু ও নক্ষত্রো দয় এবং আকাশ অগ্নিবর্ণবদ্ধাতি ও পৃথিবীতে নির্ঘাত উল্কাপাত ও घन मुखली উদয়ে घन२ শোণিত বর্ষণ ইত্যাদি অলক্ষণও কেবল তোশার বংশ নাশের কারণ হই েছ ইহা কহিয়া ব্যাস স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন। অন্ধরাজা তদবধি অনুক্ষণ অশেষোদ্রমে, অসীম **অর্থাৎ কাহারু প্রবণ শক্তি রহিল না। ইতিপুর্বে বিষ্ণুপরা**য়ণ পাণ্ডব শোকার্ণবে নিমজ্জিত ও ভান্তি স্বরূপ আবর্ত্তে পতিত ও বিষাদিত রহি লেন। পার্ফিগ্রাহও পুরোগামী এবং পশ্চাদ্বর্ত্তি রূপে কাব্চিক ভূপতি প্রভৃতিকে লইয়া স্থগ্রেণী পূর্বক বলবিন্যাস করত রাজা তুর্য্যা ধন অসংখ্য দৈন্য সেনাপতি সহ সানন্দে স্থসজ্জিত হইয়া ক'লোন্তক কালতুল্য প্রবলতর জোণাদি মহাযোদ্ধাগণকে সম্ভাষণ ও পিতামহ ভীষা দেব পদে প্রাণিপাত পুরঃসর তাহাঁকে সর্ব্ব দৈন্যাধ্যক্ষ পদ প্রদান করিলেন। দিতীয়কণে পাশুবগণের সহ যুদ্ধে জয়ী হইব বলিয়া মহা निष्ठ रहेत्वन। उदर्गवीन जीवापित मर्सकन मस्याध्या जावाजि প্রায় প্রকাশ করিলেন যে আমাকর্ত্ব কুরুক্ষেত্রে* ক্দাচ অন্যায় সমর

रहेरवंक ना धवर अञ्चरीन ए भद्रभाभा उ जानयुक ७ म्हिजाकारका নিবুজ ও শংখভেরী অস্তাদি বাহক ব্যক্তি দিগকে যুদ্ধে প্রবর্ত হইয়া ्कथन श्रश्न कतिव ना जवर नियम भूर्तिक भवन्भव वशी, भमाडि, भन्न, वास, युगमान वाक्ति गर युक्त रहेरवक। युक्त की ठासूमारत এই धर्म निक्रिण रहेल। ए गुगुरस्र मर्तका जन्मनित्रगाजिका रहेटल उरक्षार त्रां विषय कित्र । जनस्त जारायन मारमत कृष्ण शक्षमी अ मधा नक्त युक्तरांका कतिया धकामण जाक्कि हिनी मिनाशन ও प्रदर्भ छीचा (मव रामा अधि अभव मुख्य छ इट्टा मामाना न दब्ब कथा कि ब्रामिव অমর গণ ও সভয়ান্তরে কাতরে কম্পিত হইল। প্র্যোধন পিতামহাদি সমতিব্যাহারে জয়ং শব্দ করত কুরুক্ষেত্রে উপনীত হইয়া পূর্মখণ্ডে শতযোজন বিস্তীণা ভূমিতে অবস্থিতি করিলে অগণিত পত্তি সংখ্যা রথ রথি গজ বাজী প্রভতির প্রদায় সিল্পু সম,গর্জনে জগদ্ধির হইল বাহিনী কুরুক্ষেত্রের * উত্তরাংশে বুট্টেরা স্থিতি করিয়াছিলেন কিন্ত क्क़रेमना छे शञ्चान इहेर न शांखरवता जश्कार्त्व मुक्षार्थ मणुशामुथि रउनार्थ भूका जिमूरथ फछात्रमान रहेल कू कगरनता अ अनिव्यक्ति रहेटलन। वाष्ट्रा युधिष्ठिव विशक्त शत्कव रेमनाम् वन मुस्य विकल रहेशा श्रविजनीय पृथ्थ मकल स्वत्व कितिलन। रायरः, किमां कर्गामुकः পরং " यिनि गाँउ एक अञ्चाद अधर्मा मञ्चाद ममञ्चाद जम्म দাদির প্রতি স্বতঃপরতঃ সর্বামতে শেহ প্রকাশ করিতেন দেই সাম্তমু

^{*} পূর্বে চন্দ্রবংশীয় কুরুরাজা বহুরূপাকন্যা প্রাপ্তার্থে সূর্ভিবচনে হস্তিনার উত্তরাংশে সরস্বতী তীরস্থ উপবনের উত্তরে ইন্দ্রার ধনা করাতে বছরপা প্রাপ্ত হন এবং ইব্রুবরে ঐস্থান পুণ্যতীর্থ স্বরূপে क् क़ क्ष्मिव मः जा विशेष रम जा विशेष वर्षमान जा है।

^{*} কুরুকেত্রে (স্থানেশ্র) প্রদেশ দিল্লী (হস্তিনা) হইতে ত্রিশ क्लाम माहेल अख्र। ज्ञिक हिं मत्य जी ननी हेश्रत नाम मात्र्य ज मिन वाधिनक मर्जा मत्रिक थे द्यानभावत निक्छ देवशायन जन।

गर्डान महोतन भवाकां छीषा महाणत्र तथाद्वां श्रवंक निक्कद्व শরাসন ধারণ করত সর্বা, দৈন্যাগ্রে সেনাপতি হইয়া পাণ্ডুসস্তান সংহারার্থে সমরে স্মুপস্থিত হইলেন হা তাঁহার স্থাক্ষ বিপক্ষ সর্ম পক্ষে পক্ষপাত ছিলনা সম্পৃতি শক্ষপক্ষে স্বপক্ষ হইয়া অস্মদাদির বিপক্ষ হই ডোন এই পক্ষপাতিত্ব বাবহার প্রযুক্তই সমূহ খেদিত ও পারিতাপিত হইয়া ধর্মরাজ কৃষ্ণকে কহিলেন হে দয়ানয় যাইগর যুদ্ধে ভৃগুরাম পরাজিত হেতুক লজ্জিত হইয়াছিলেন এমত বলবাম্ ভীত্মসহ সংসারের মধ্যে যুদ্ধ করণের সাধ্য কাহারু নাই অভএব ভাঁহার সহিত অদা দদা যুদ্ধোদাত কে ২ইবেক এবং গুরু দ্রোণাচার্য্য ও অদিতীয় মহাবীর ইতি চিম্ভাকরত পদব্রক্তে কুরুদেন্যারণ্যে প্রবেশ করিয়া ভীষ্ম দ্রোণ ক্সের পদাভিবন্দন পূর্বাক কৃতাঞ্জলি পুটে কাক্ 📓 ভিন্যাহারে লক্ষ দৈন্য লইয়া কৃতাঞ্জলি বন্ধন প্রবাদ বিদ্দন জিতে স্তুব করিতে লাগিলেন তাহারা ধর্মের প্রতি সন্তুট হইয়া তিন 📓 করিলেন হে ধর্মাধিকারিন তব শরণাগতহইলাম সম্পুতি প্রসমুহইয়া कत्म है आंभीर्यहम भूतः मत तत श्रामान कति सम्बद्ध जवाजीके मिक मूत्रधित पूर्णन कताहित क्र कार्या हहे। ताका यूधि केत विभक्षण मुक्षा इटेरिक এবং অভিনে অনিম্প্লিংহার পূর্বক সংগ্রামক্ষী इटेवो। अभिज्ञाक शमन করিলে স্বপক্ষীয় রাজুবুর্ক্ত অন্যান্য আত্মীয়গণ সক धर्माताक छेक कतिलान य हेर मरमात जाभनाति पिरान जनकाताका। लिहे हमस्कृष्ठ हहेलन এवर छीमार्क्यून महात्कार्य निजास जमसुरे নাশ্রেশ্য হইবেক না অতএব আশীর্বাদ প্রসাদাৎ অবশাই জয়ী । ইইয়া কৃষ্ণপ্রতি কহিলেন হে হরে বিপক্ষ দলাভান্তরে একেইড প্রস্থি হইব এতজ্ঞা জ্যাল, কিন্তু অরিন্দ্র্মার্থে অস্মদাদির কোন 👹 মুপ্রব্ব কোন্ বুদ্ধিতে গ্র্মন করিলেন তাহা কিছুই বোধ্যম্য হয় না ক্ষমতা নাই যেহেতু চলচিত্ত দুর্যোধন মহাবল পরাক্রান্ত যোদ্ধাগণ 🖟 যে হেতুক ভাহাঁরই বিপরীতা বুদ্ধিতে রাজ্যধন ত্যাগ ও বনবাসাদি সম্বেত হইয়া যুদ্ধে প্রবর্ত্তইয়াছেন বিশেষতঃ তৎপক্ষে আপনারা মহাত্র্থ সম্ভোগ করিলাম অমুভূত হয় সেই মনীষাই অদ্যোদ্য সহায় হইয়াছেন এই সকল অসম্ভাব্য ব্যাপার দর্শনে সর্মদাই চিন্তা 📓 হইয়া এই প্রবৃত্তিই জন্মিয়াছে ইত্যাচক্ষাণ ব্যাখ্যান শ্রুতি গোচরী গ্রস্ত হইতেছি পরন্ত কৌরব পাণ্ডব উভয়দলেরই সহ যুম্মদাদির তুল্য 🖟 ভূত হইলে 🔊 ক্রম্ সহাস্য বদনে উত্তর করিলেন যে ইহাতে কোন मस्या माखु । या हेमानी १ किर्न को तर भक्त ममूमग्र ईहेग्राह्म हेहा । आमक्का कित्र बना धर्माभूख माधू मखम अथह ममुखः कर्ता मस्याजार তেই সমুদয় বিফল সন্যমান করিতে হয় এবং যুদ্ধা সমর্থ হইয়া পুনর্ব 🧖 সক্ষদা সম্ভুগুণাবলম্বী হয়েন সেই নিদানীভূত স্বচ্ছস্বাস্তস্থিত জ্ঞান নান্তরে প্রবেশ পূর্বক রাজ্যাদি লাভবাঞা পরিত্যাগ"করিতে হই বেক। ভীম্মাদি, মহাঝাত্রয় যুধিষ্ঠিতরর প্রিয়বচনে পর্ম হর্ষান্বিত

रहेंग्री किश्लित, नांचूर धर्माजनम जागात नितरभक्त धर्मानरण भूकी धना। रहेल। अन्यर मम्भ भउ२ व्हान उम्रहर छीत्र किसा सुद्रशिष्ट ুহুউন তোমার সহিত রণে কেহই সমর্থ হইবেন না কারণ ত্রিলাকেশ্র मुग्र बीक्ष ज्या धर्म महाग्र जाइन অতএद ''न्डिधर्म स्ट के क्रिया सर्डः कृष्ण खराजकाः,, वार्थार राथारन धर्मा माहे थारन हे कृष्ण এवश राष्ट्रारन कुष म श्राम्य छत्र इहेर्वक। हेजाबि क्यांशकथनास्त धर्मानसन ज्यां रहेर्ज निवर्ज रहेश सीय गिवित्त প্রजागमन कालीन উচ্চঃ स्वत किटिन क्रिरेनमा मध्या यादाँ तो जीवरमञ्चा करतम जाँदाता जीक्रकन দারবিন্দে আপ্রায় লউন যে হেতুক তাঁহার আপ্রিত ব্যক্তির কোন श्रांत कमाश्रिमका नारे। यूथिशित्वत वाका युयूरस्नशिक सीय मम প্রসারণ হেঁতুক তৎপক্ষে স্থপর দলাদল সকলই সাম্য হইয়াছে ছাতএৰ

मित्न हे छे छत्र देम्ना निर्माण कर्तिछ शांति धन (जांना हाँची कीत जिन शांकित। • ••

खब्बि विठादि वीत्रकार्या माधनार्थि गमन कतित्रार्धन। इतिमधा विवास कविति भ शक्षित्रम ७ व्यावशूख जिनमस्य अवक व्यक्त পরপক্ষে যুষ্ৎস্থরাজা যুষ্ৎস্থ ও তৎগৈন্য সাহিত্যে যুধি छিत জয়২ । নিমেষকালে উভয় দলতেই সংহার করিছে পারে। পিতামহ বাক্যে শব্দ করত গোবিদ্দ সন্নিকষে উপনীত হইয়া নিবেদ্দ করিলেন বে 🎆 বিশ্বয়া খিত হইয়া ছুর্য্যোধন সংত্রস্তুচিত্তে অসকৃত্যুক্তি করিলেন অর্জুন অস্মদাদি পঞ্জনের প্রান্তি যাদৃশী করুণা প্রকাশ আছে ভদপেকা অধি 🖁 কিপ্রকারে পরাক্তিত ইইবেক ভদনস্তর ভীম্ম সহাস্যাস্যে প্রভিজ্ঞা করি কামুকম্পা বিতরণদারা এই যুষ্ৎস্কে পর্মতৃপ্ত করুন। পক্ষান্তরে ইলেন দশদিবস যাবৎ যুদ্ধভার গ্রহণ করিলাম প্রত্যহ অর্জুনসহ সমরে রাজা ছর্য্যোধন মুখুৎস্থর গমন হেতুক উপস্থিত সমরে লক্ষ্টেমন্য ভঙ্গ শীয় সৈন্যমুক্ষা করিয়া কৃষ্ণ সন্মিধিতে বিপক্ষের দশ সহস্র সেনা নিধন দর্শনে অস্থারোহণে বিষাদিতমনে ভীত্মনন্নিধানে, সমাবেদন করিলেন যে 🔭 করিব। ভীত্মের তাদৃশ পর কীণিত উক্তি রাজা ছর্য্যোধনের কর্ণগহর হে পিতামহবর ধর্মারাজ রণছলে পদার্পণ পূর্বাক কি মন্ত্রণা করভ লক্ষ হির স্থাবহ রূপে সম্পুরেশ জন্য সন্তোষকালাবিধি পরিগতমনা হইয়া रमना लहेशा शिल आश्रानिह हेहां विहातन निर्मातन व्यवधान क्याम्। निर्मात्र किविद्य शमन कतित्व महात्कालाहत्ल मञ्जापि विविध वारमामान তৎ শ্রুত্বা ভীষ্ম কহিলেন যুখি ঠির অভিবন্দনার্থে আসিয়া প্রত্যাগমন ইহুইতে লাগিল। কিয়ৎ কালাতীতে উভয়দলের রথী পত্তীত্যাদির সময়ে মধুরাণরপে ধর্মবাণী প্রয়োগ পূর্বক সর্ব যোদ্ধাগণ সম্ভাষণ জিদশদিগ্ ব্যাপ্ত অতুল ছোর নাদে হুল স্তু লু লু সুলসংগ্রাম স্থলে অর্জু ন क्रिल अवशीन हिमक्त क्त्रवर स्थाउन वहन कित्रव विकित्र विस्त्र द्यादां इव श्रूक ध्रम्क ध्रम्भाव श्रीव इहेग्रा तथनियस् एव नियुक्त অনেক মহামতি রথির মতি বিলোলায়মান্ হইল কিন্তু ধর্মপুত্র মুখা কিন্তু কহিলেন হে দয়ানিধে উভয় দলমধ্যে কিঞ্ছিৎ কালের विनिर्शठ छेक मश्यां विक प्रभूतक्षांन युगुङ्खत गर्माछिक श्रातम (श्कूक कि कोत्रव मश्युकार्थ कर्तित भमन शृह्य देविवार्छ। श्रात्व कृती কেবল তিনিই প্রাণভয়ে পরিপস্থি গণের শরণাপন হইলেন তাহাতে যিমুনাতীরে কর্ণের সান কালেতৎসাক্ষাতে কহিলেন। ছর্কাসার দত্ত ভেক্তিকদাচ ছংথ জ্ঞান করা উচিত নহে কেন্না আগার বিক্রম তুমি শিক্ত প্রভাবে স্থ্যাস্থান করাতে তাঁহার সহ সঙ্গমে তোমার উৎপ্রক্তি বিশেষরূপে অবগত আছু মমাগ্রে স্থরাস্থর বৃদ্দ সমর করিতে আদি ইইয়াছৈ অতএব হে পুল্র আমার কুমারীকালে তুমি জন্মিলে অখ্যাতি লেও প্রতিজ্ঞা লঙ্খন হইবেক না এবং উপস্থিত জাহবে তাহা স্বচন্ধে ভিয়ে যমুনায় বিসর্জন দিলে রাধা পালন করিল এই হেতুক তব সোদর্য্য দেখিবা যে এইরির নিয়ম ভঙ্গ পূর্বাক আত্মপণ রক্ষা করিব। ছুর্য্যোধন ভাত্গণ সহ মেলন কর, কর্ণ কহিলেন মাতঃ ছুর্য্যোধন শৈশব কালা পিতামহদেবের বাক্যে পরিতুই হইয়া কহিলেন ব্যাপনশীল কোণী নিধি পালন ও রাজ্যদান করাতে নিত স্ত বাধ্য আছি এবং অর্জুনবধে মণ্ডল মধ্যে এমত কোন ধমুর্ধর আছে কি না যে এক রথারোহণ করত প্রিতিজ্ঞা করিয়াছি স্থতরাংসতাভ্রম্ভ ইইবে না। কুন্তী কহিলেন তবে এই উভয় পক্ষের অন্তাদশাক্ষোহিণী দৈন্যাণী জয়ী হইতে পারে ভীন্ম সতা কর অপর চতুর্জাতাকৈ নম্ব করিবা না তথন কর্ণ সীকার পূর্মক উত্তর করিলেন যে আমি যদি মনঃ সংযোগ পূর্বাক যুদ্ধ করি তবে এক উক্ত করিলেন মাতঃ আমার সহ কি অর্জ্জন সহ তোমার পঞ্চপুত্র

निमित्स तथ साश्रम करून्। उथाविध कृष्ठ स्टेटन शार्थ वीत नर्सात्य পিতামহ আচার্যা মাতৃল দ্লাতৃপুত্র পৌত্রাও সুজন বন্ধু অমাত্য প্রভৃতি প্রত্যেক বিপক্ষ যোদ্ধাগণ দৃষ্টানন্তর বিষয়মনে মলিন বদনে ও রোগাঞ্চ শরীর কম্পানে কর হইতে শরাসম স্থলিত ইইয়া काउदा करूगावहरम क्छा कि कहिएलम या मिक शतिवाता पिरक इमन করিয়া কাহার ্নিমিংগুই বা রাজ্য স্থে ভোগ করিব। এই অসার সংগারে রাজ্য লোভ প্রযুক্ত গুরুবস্কু স্বগোত্র বধে মহাপাপ সঞ্চয়ার্থে निमभ इ उनार भका दत्रक भूनर्यन वारम आयोग कता है ध्यायकत, धव सिध भारकारकिकानिक वारका उदेक्षवाजात जाविक रहेगा क्षरवास वहान कृष्ठकर्न्तु क छेनी विछ इडेल, जहकात शूर्यक युक्क वृत्ति जमानमन করিয়া সমুধ রণে অস্থথে বিমুখ হওয়া কখন উচিত নহে। যদিস্যাৎ জ্ঞাতিবধে পাপজ্ঞান করিয়া ক্ষত্রিয় ধর্মা বিদর্জ্জন পূর্বাক যুদ্ধে নিবর্জ্জ হওতবে ছর্য্যোধন খলস্বভাবে উজ্জ্বল সুখে ব্যক্ত করিবে , য ধনপ্তম অস্মদাদির দলবল দৃষ্টিপুর্যুর সভয়ে, পলায়ন পরায়ণ হইল। হে পার্থ কেহু কাহাকে নম্ভ করিতে পারে না এবং কেহু কোন জনের শ্রক্তেত্র, দেখ ইহু সংসারে কর্মানুসারে মানববর্গ পুনঃ২ গভায়াত করত অশেষ ক্লেশ ভাগী হয়, যেমন দেহিগণ দেহধারণ করিয়া কৌমার যৌবন জরাবস্থা প্রাপ্তানন্তর দেহান্তর পরিগত হয় তাহাঠত মনীষিণণ কথন শোচিত হয়েন না তদ্রপে অনিতা দেহ বিনাশে জীব ध्तरम कमा ह इयु ना खु जुतार हैनि इख वा न हिन है है न में दे खानकत অপর যেমন লোকে জীর্ণ বসন পরিত্যাগ পূর্বক সূতন বস্ত্র পরিধান করে, সেই মত জীবাত্মা একদেহ ত্যাগ করিয়া অন্য শরীরান্তরে সঞ্চার হয়েন অতএব কি কারণ স্তব্ধীভূত হইয়া রথোপযুৰ্তাপবেশনই বা করি তেছ চিবল্প শত্রু পরাজয় করিয়া নিজ কীর্ত্তিরক্ষা কর, বিশেষতঃ চতু र्मण लाक याव्यक्ष विमामान आहण्डाहा मकलहे आभाव मूर्जि प्रथ

जाशयनि ।

वृत्कत मरधा अध्ये अनमीत गरधा खुतनमी अर्था अधि अ मूनि मरधा नात्रम उक्शिल उ प्रवगरधा प्रवज्ञाक এवर ভোষার্রদিগের মধ্যে আমি তুমি মহামতি ইত্যাদি অনস্ত অখণ্ড ব্ৰহ্মাণ্ড আমাতেই ব্যাপ্ত আছে। এব मु ज नाना अकात राश कथरन अ अर्जुन मनः मरायाश ना कतार् 'शून क़िक कितिला सन धनक्षत्र वह मिनाममूम्य शूर्विह आगाकर्त्र, क इंड ইইয়াছে তাহা সত্য বোধ কর তুমি কেবল নিমিত্ত মাত্র হও। পার্থ কহিলেন প্রভো যদ্যাপি সেই নষ্ট বাহিনী প্রত্যক্ষে দৃষ্টকরি তবে সত্য জ্ঞানে প্রত্যের হয় তাহার কোন ব্যত্যয় নাই অনন্তর শ্রীকৃষ্ণ স্বাসাচি কে দিব্যচক্ষু প্রদান পূর্বাক আত্মশরীরে বিশ্বরূপ দশন করাইলেন অর্থাৎ स्मिर्विम अक आकारण अर्थ रहेल। तिव गणी प्रहे ठक्। मुथ रेवश নর ও তারাগণ দন্ত, ইন্দ্র দেবরাজ বাছ। ব্রাহ্মণ হৃদয় নাভি সিক্ষ্ পৃষ্ঠে বস্থময়। দশদিক জজ্বা, পাতাল চরণ, শৈলগণ অস্থি, তরুগণ্ লোম মাংস্ক্রপ ধরণী। ইতাদ্ত সমস্ত বিশ্বব্যাপক বিরাটমূর্ত্তি ধারণ করিলেন তাহাতে সকলেই বিস্মিত হইকুরেন। অজুন ভগবানের সেই অত্যাশ্চর্যা ভীষণাকৃতি সন্দর্শন'করত লোমহর্যণ ও ভীতি যুক্ত হইলে নারায়ণ বিস্তার বদন ব্যাদান পূর্বক তদভাত্তরে অথিল ব্রহ্মাওও এক্সি নীকিনী হত পতিত দেখাইলেন তাহাতে অতিশয় লজ্জিত ও চমৎকৃত জ্ঞানে বিনমুভাবে বহুতর স্তব করত পার্থ উক্ত করিলেন হে সর্বাসংসার ব্যাপক ত্রিদশেশ্বর বিষ্ণো ব্রহ্মাদি দেবগণ তোমার অনম্ভ মাহাত্মা বর্ণ নাক্ষম হয়েন তাহাতে আমি অতিমূঢ় নরজাতি কি প্রকারে তবানস্ত শক্তি সীমার অস্ত করিতে শক্ত হইব এবং অপরিচ্ছিন্ন নিরঞ্জনের অপার মহিমা স্থাক স্থাবিদিত হওনেরইবা সাধ্য কাহার আছে অন প্রতাসযুক্ত অর্জুনকে সান্তুনা করিলে তাঁহার প্রত্যাদেশিত বাক্য প্রতীতি পূর্ববি পর্ম কৌতুকে ধন্ত্র্বাণ গ্রহণ করত পঞ্ম দিবস যাবৎ খোরতর সমর,করিলেন তাহাতে তিপক্ষের সংখ্যাতীত দৈন্য হতাহত

সার

ও রাশীকৃত মৃতশ্ব ভূমি পতিত রহিল। ভীম প্রতিজ্ঞান্ত্র শেষ যুদ্ধে প্রতাহ দশ সহত্র দৈন্যু নিধন করিয়া শিবিরে প্রত্যাবর্ত্তন করেন। यक्षे मिवरमत गुरक्त जीवावीत गरा कारण विक्यु मञ्जू ज भूक्त अरमाग् कतिरंग की कृष्ण का ज जिल्लू न अ ममुनाय भाखन नाहिनी अञ्चानि मि তাবদন্ত্র পরিত্যাগ করত বিমুখী হইলেন কিন্তু তীম ক্ষতিয় ধর্ম বিরুদ্ধ অস্ত্রতাগে অস্বীকৃত হইয়া গদাহস্তে সাহসে নির্ভর্করত দণ্ডায় गान थाकार्ड कृष्ध উिष्ममानम সত্ত্র রথত্যাগ পূর্বক তীম শরীরাচ্ছ। प्रम क्रिया भोषात्र विश्व उठक अर्ग क्रियम। এवन्त्रकात छङ वारमना वावशादत जीवा नित्य रहेश। 'मर्गनमार्गद निमग्रहरेया' जग বানের স্তব করত পাণুপুত্র গণের ধন্যবাদেই কিয়ৎক্ষণ রসনা যাপন कतिरलन পরে বেলাবসানকালে যুদ্ধকরিয়া অর্জ্রনের কবচ চ্ছেদন পূর্বাক দশসহত্র রথি বিপাতকরত প্রতিজ্ঞাপুরণ করিলেন। সমস্ত দিবস ভীম বিষ্ণুশক্তি গ্রাহণ পূর্মক ভয়ানক রণ করত গদাঘাতে কোটিং कूर्तरेमना ७ শত मर्शाभ्यम् किला ताजाक निभाज क्रिलन উক্তাহ্বে ভীম গদাগ্রে উনপঞ্চাশদায়, প্রবেশ হেতুক গদার ঘূর্ণনে मूर्विश्वतार्भिख इडेन। अमाभि मिडे घूर्वन वा नाम धकरयां जन छिक्क भर्याख्याकारण वहन इहेट्डिइ जीवा यर्क नाम विक्त कर्तेज मन् ছাজার রথি নিপাত করিলেন। রণ নিরস্ত হইলে সংসার সার শৌরি সন্ধ্যাবসানে সহদেবকে জিজাসা করিলেন যে কলা কি প্রকারে রণ সম্পন্ন হইবেক সহদেব কর্ত্ত উদীরিত হইল ছুর্যোধমাদেশিত বাক্যে বদ্ধ হইয়া পিতামহদেব পরেদ্যবি অস্মদাদি পঞ্জাতাকে বিনা শার্থে প্রতিজ্ঞী করত সীয়ত্ণ হইতে মহাকাল সংজ্ঞক পঞ্চবাণ লইয়া শিবির বহিদারে অবস্থিতি করিয়াছেন ইতিবাক্যেরাজা যুধি ঠিয় চিন্তার্থবে আসক্তমনা হইয়া বহুবিধ বিলাপ করিতে অইগিলেন অন ন্তর গ্রীহরি দয় প্রকাশ পূর্বাক শোক্ষেমুগ্ধ পাওবকুল রক্ষার্থে সদ্যু জি

ক্রমে স্বাসাচিকে সমভিব্যাহারী করত ছলনা দারা উক্ত পঞ্চবাণ व्यानयन निमिक्त पूर्वियाधन निर्वाम भगन क्रिया मृज्याता उरमभीत्भ সংবাদ দিলের । রাজা তৎক্ষণাৎ অজ্জুনকে আহ্বান করত শিবিরান্তঃ পুরে দিব্যাসনে বসাইয়া জিজ্ঞাসিলেন কি হেতু গণর তৈ আগত হইয়াছ তবাভিল্যিত বিষয় ব্যক্ত করিলে সহ্যিতান্তঃকরণে অবি , लम्राम गामात्र्य मण्यानम कतिय। अङ्कून कहिएलम शूर्व्य यथन আসরা পঞ্চজনে কাম্য বনে অবস্থিতি করিয়াছিলাম তৎকালীন অস্ম मामित् भेरवाम आश्र रहेग्रा छूछे मित्रिश्वत প्रतागर्म आभनात अर् रेलश्रया अपमान कताहेवात निगिष्ठ ७ जीया आन वाजी ज मर्करयाता ও ভূরিং দৈন্য সাহিত্য স্থসজ্জীভূত হইয়া স্বান্ধ্র পৌরজনে প্রভাস তীর্থ সান যাত্রার সজ্বোষণায় ছলতাক্রমে গমন করিয়া ছিলা। তথায় গন্ধর্ক বীর্ববের চিত্ররথ ও বিবিধ বিচিত্র পুষ্পাদিদারা বিভূষিত স্থরন্য , পুল্পোদ্যান ভঙ্গকরাতে তদাত্তা শ্রবণ পুরঃসর গন্ধর্কবীরগণ সন্মিলিত হইয়া তোলার সৃহ ঘোরতর সংগ্রাম করিল তাহ্যুতে কর্ণাদি মহাযোদ্ধা গণ তাহাদের অসহ্যাস্ত্রে ব্যথিত ও শরিতাপিত হইয়া রণ ভঙ্গ ও আতক্ষে পলায়ন করিলে গন্ধর্ম নিকর কর্তৃক স্ত্রীগণ সহ বেন্ধন গ্রস্ত হইয়াছিলা সেই মহারণ সংক্লিট বৃত্তান্ত প্রেষ্য প্রস্থাৎ প্রবলকরেও রাজা युधिष्ठित দেবের আদেশান্সগারে যুদ্মদাদির বন্ধন মোচন করিলে সমূহ পরিতুষ্ট হইয়া বর প্রদানে স্বীকৃত হইয়াছিলা কিন্তু তদানীন্তন সময়ান্ত্সারে মম মনোভিশাষিত বর প্রার্থনা ছিল অতএব মহারাজ অদ্য সেই বাঙ্নিষ্ঠাদ্বারা সত্য পালন করত তোমার মস্তক মুকুট প্রদান কর।, ছুর্য্যোধন অগেণি কিরীট আনয়ন পূর্বক সমর্থণ করিলে অর্জন সহযে নিরোপরি ধারণ করিয়া তথা হইতে ভীষা সনিহিত इहेल उद्भृत्के प्रायाधन ज्ञा जिनि क्हिलन वर्ছनिमाग्ज इहेगाए

मातावनि ।

এখন কি হেতুক আসিয়াছ পার্থ স্মেরাননে উক্ত করিলেন হে পিতামই স্বহস্তে পাণ্ডবগণ সংহার করিয়া রণজয়ী হইব অত্তব সেই পঞ্ সহা कानवान आमारकरे मिडनै। जीया अयका गामा उरमुनार महाकान স্থারপ কাল শর সমর্পুণ করিলে ধনঞ্জয় বিপুল পুলকান্বিত হইয়া এইণ করিলেন। এই সময়ে পাণ্ডবদিগের মহাকাল নাশক বিশিথ প্রাপ্তি मन्भन कना दर्ययुषे दर्या बीक्ष अधका भिउ दर्दिन, जीवा जाँदिक • माल्युक्रव कत्र जिनवार्ग श्रिज्ञ जिन्न रहिष्क मत्नाष्ट्रश्य माजिनग्री সহাতায় ও তাঁহার আশ্চর্যা চাতুর্যাকার্যা ধার্যা করত সমাক্পুকারে ভাষিত হইল ভালহ কৃষ্ণ ভোষার পণভঙ্গ না করিয়া কলা রণ ভঙ্গ দিব ना ইহাই পুনরজীকার করিলাম,, অনন্তর গ্রীহরি তদাক্যবগত হইয়া সলজ্জিত মানসে তাঁহাকে সান্ত্রা করিয়া তদ্রাক্তেই অর্জুন সহ ঐ সহা কাল পৃষৎক লইয়া পাণ্ডব শিবিরে গমন করিলে তাঁহাদের মৃত শরীরে প্রাণ সঞ্চার হইল। অন্ট ম দিবস প্রভাষ কালে স্বীয় ভূণীরোদ্ঘাটন , পূর্মক দিব্য বাণ গ্রহণ করিয়া আমরণ পণে মহারণে প্রবর্ত্ত হইয়া সন্ধ্যাপর্যান্ত অবিপ্রাক্ত তুমূল সংগ্রাম করিলেন তাহাতে বিপক্ষের কোটিং সৈন্য বিনাশ হইতে লাগিল এবং ভাহার প্ৰিন্তল কোপাগ্নি প্ৰজ্ঞালত হইয়া যৎকালে লিপ্তকাদি বিবিধ বাণ বিক্ষেপিত হইল তুখন পাণ্ডব পক্ষের কোন যোদ্ধাই তিষ্ঠিতে পারিল না তৎদিনে মহারথী সকলেই ভীত ও অসম্ভাবিত রণোমত সাহ্দে সহসা সন্দৰ্শিত হইয়া সন্মুধ রণে বল বিক্রম প্রকাশ পূর্বক বহু পরিশ্রমেওঃযুদ্ধ কুশল হইতে পারিলেন না এতদ্রেপ সংআমা সময়ে শেষে অৰ্জুন ভীত্মের স্তীক্ষবাগাম্বাতে অচেতন হইলেনু এবং কৃষ্ণ শরীর ক্ষত বিক্ষত হইয়া অনিবার্যা প্রহারে অভিরান্তঃকরণে পুনঃ পুনবিক্তি ইষুসহিষ্ণু হইয়া দিগ্দাহ দাবাগ্নির ন্যায় মহা ক্রোধ বিশিষ্ট,কম্পিত কলেবর সন্ধিসংহারক সূর্ত্তিধরিণ করত সর্বা

मात्रावि ।

যোদ্ধা সাক্ষাতে খ্ৰাহইতে লম্পপ্ৰদান পূৰ্মক ভূমিপতিত হইয়া রথ ठक গ্রহণ পুরঃসর√ভীত্ম বিনাশার্থে ধাবমান হই লেন। ভীত্ম उৎক ণাৎ শরাসন শর ত্যাগ করিয়া মৃত্যুরে কর্তিলেন কৃষ্ণ পূর্বে প্রতিজ্ঞা ক্রিয়াছিলা যে ভারত যুক্তে অস্ত্র ধারণ করিবা না অদ্য ক্লেন পাণ্ডব সাহায্যে ব্যগ্ৰ হইয়া মহাপ্ৰকোপ ৰশতঃ অনিত্যচিত্ত জন্য কুরুকুল निः (भिषार्थ अवर्ड इडेमा यपि इं कम्लाक निरंशिक इरत मम वाका গ্রহণকর তবে এইক্ণেই আমাকে সংহার করিয়া নশ্বর সংগার যন্ত্রণা হইতে বিমুক্ত করত কৃতকার্য্য হও। কিয়ৎক্ষণ গতে অর্জন চেতন পাইয়া এবস্তুত অন্ত কোধ দর্শনে বিশায়াবিষ্ট ও অগোণে কৃষ্ণ কর গ্রহণ পুরঃসর অসীম রোষোপশমন এবং রথোপর্যারোহণ করাইয়া পুন্যু দারম্ভ করিলেন ভীষ্মও ধনঞ্জয়কে বাণে ব্যথিত করিয়া পূর্ব বদশ সহস্র সেনা হত ও জয়ধানি করিলেন। নবম বাসরে অর্জুন ভীষ্মের তথা অন্যান্য রথি গণের ভয়ক্ষর সংঘটিত সংগ্রামে,পরস্পর विशक शक्कत लकर रमना कछोटक मः इंड इंड लागिल ও अनिवार्या পদাতিদেনা নিচয় সমস্ত দিনব্যাপ্ত অক্ষান্ত যুদ্ধে ব্যস্তত্ত্ব ও কত বিক্ষত জলিতাঙ্গ হইয়া কেহ্২ পর্যাবসন্ন কেহবা অত্যন্ত ক্ষুত্ ফা প্রযুক্ত অধিকতর সুশীতল জলপান করণানস্তর বাক্ শক্তিহীন হইল কাহার অনব্রত অনিবারিত কালঘর্দ্ম হইয়া ধরাপতিও মাত্রেই শমন সদনে যাইতে হইল। রণোমাধিত বিকলাঙ্গ সেনাসমবায়ের অঙ্গ প্রত্যঙ্গ শোণিত নদীর ভয়ঙ্কর স্রোতঃ প্রবাহে পতিত হইলে চামুণ্ডাদি দৈবী যোগিনীগণ সঙ্গেলইয়া সেই বেগে প্রবাহিতা রক্তাক্তা তটিনী সমীপ বর্ত্তিনী হইয়া কুরুক্তেরে ক্ষত্রিয় যুদ্ধক্তে ক্ষয় প্রাপ্ত পতিত নরমুঞ মালা গ্রন্থন পূর্বাক পরিধান করিলেন কেহ বা কৌতৃহলাবিষ্ট হইয়া অথও খত্ত প্রসহ গজ মুগু গ্রহণ করত কর্ণকুতল স্থরূপে ধারণ

করিলেন। কেহবা পর লইয়া মহাকুতুহলে শেনীত পান করিতে লাগিলেন ইতাদি অসমূত ব্যাপারে যোগিনীগণীলিপ্ত হইল শেষ সম্পূহারে ভীন্ম দশ সহস্ত্র রথি নিস্দন ও জয় শশুধুনি করিলেন। অনন্তর ছঃখ্যানল সন্তপ্ত যুধি ঠির মহোদিগুচিতে রণসজী পরিহার পূর্বাক উক্ত করিলেন হৈ গোবিদ্দ হা কি অধর্মা, মম কুবুদ্ধি বশতঃ কৃত কুকর্মের মর্মা না বুঝিয়া বিগ্রাহ্ প্রবর্ত্ত হইলাম, হা কি নিগ্রহ, অনলে পতঙ্গপতিতবৎ পিতামহের দারুণ প্রহারে আতারকার প্রয়াসাভাবী প্রযুক্ত আতক্ষে দৈন্যচয় পীড়িত ও মৃত হইল অতএব আর সমর সিদ্ধ সাধনের প্রয়োজন নাই আজা হইলে অস্মৎ পঞ্চলাতা পুনর্বনারন্তরে গমন করিয়া তপস্যায় নিবিউহই জীকৃষ্ণ রাজার খেদ বচন প্রবণ পূর্বাক তাশেষ প্রকারে শান্তিপ্রবোধ প্রদান করিয়া সৎপরামর্শ দিলেন ষে সত্যবাদি জিতেন্দ্রিয় ভীম্মের ইচ্ছা ব্যতীত মৃত্যু হইবেক না ইহা জগদিখ্যাত আছে অতএব তাহাঁকে প্রাণ বিয়োগোপায় জিজাসিলে অবশাই সত্য কহিবেন। অনন্তর পঞ্চভাতা গোবিদ্যের সহিত ভীষা ॰ শিবিরে উপনীত হইয়া প্রিতামত চরণে প্রণিপাত পূর্বক কহিলেন যে আপনার অভুল্য শক্তিতে অস্মদাদির বছল দৈন্য ক্ষয় ইনবল হই তেছে অত্তীব তব সহ আছবে বিক্রম প্রকাশ করত জয়ী হওনের যোগ্যতা কাহারও নাই সম্পুতি করপুটে এই নিবেদন করিছেছি মে অস্মদাদির প্রতি স্থেম্বিস্বিতা ব্যবহারে তব মৃত্যপায় কহিলে নিশ্চিত নিশ্চিন্ত হই। ভীষা পরাৎপর নারায়ণ পদে প্রণতি পূর্মক স্তুতি বাণী প্রায়োগ করত যুধি ঠিরাদিকে ক্লিম্ট দেখিয়া উক্ত করিলেন, পূর্বো মম প্রতিক্তা আছে যে স্ত্রীক্তাতি দেখিলে কখন যুদ্ধ করিতে প্রবর্ত্ত হুইব না তদ্ধেতুক তোমারদিগের বিজয় কারণ কহিতেছি মহাবল পরাক্রান্ত দ্রপদ তনয় শিখণ্ডী পূর্বে নারীছিল দৈব নির্বান্ধে পুরুষ জাতি হইয়াছে অতএব সেই অমঙ্গল ধাজা শিখণ্ডিকে অগ্ৰেব্ৰা কৰিয়া

সারাবলি। ধনপ্তার তীক্ষ্বার্থে আমার শরীর বিদ্ধা করিবেন আমি তাহাকে পেথিয়া কদাচ অস্ত্রগ্রহণ করিব না পার্থও গৌরব উপেক্ষা করিয়া আমাকে 🖐 নিপাত করিলে ে যে অনায়াসে চুর্য্যোধনকে পরাজয় করিতে পারিবা। 'ज एका ल अर्ज्जून कृष्ध निर्वोक्तन कत्र कि हिलान आमि धावकना श्रूषक সমর করিয়া গুরু বৃদ্ধ পিতামহকে কদাচ নই করিতে পারিব না অব , , শেষে কৃষ্ণের বহুতর প্রবোধে ও উপরোধে পিতামহ ব.ধ স্বীকৃত

হইলেন। দশমদিবম পার্থ সংগ্রামে উপস্থিত হইব। মাত্রেই ভীম্মের ञ्जीक्ष्मात क कि विक कर निवास कर १२ व्योध र्या ७ कर १२ मुमूर्य इहेगा ক্রধৃত ধকুঃশর স্থলিত হইতে লাগিল। কিঞ্চিৎ কালানন্তর রণার্স্ত

পার্থ পুনশ্চেতন প্রাপ্ত হইয়া উভয়ে বহুক্ষণ যাবৎ তুমূল সংগ্রাম করিলেন। কিন্তু ভীত্মের সুশাণিত শোণিত প্রদর্শক শরে অসংখ্য

পাণ্ডব সেনা সংহার হইলে যোদ্ সমুদয় আয়ুদোয় রক্ষার্থে ব্যস্ত হইয়া তাবতেই রণস্থলে শ্রেণীভঙ্গ ও রণোপেক্ষা করত পলায়ন করিল

उम् सिकृष का मक्कार्वि निमन्न २७७ हेर माधनार्थ मिथि छिक जान য়ন পূর্বাক রথস্থিত করাইলেন অজ্ঞুন মহাচক্রি চক্রপাণির, আদেশে

চক্রান্তে সমরে প্রবর্ত্ত হইয়া শিখণ্ডির পশ্চাদ্বর্তী দণ্ডায়ুদান সুরংসর প্রাণু পণে দিব্য দিব্যায়ুধ সন্ধান করত পিতামহের সর্বাই সিম্বিদ

করিলে রক্ত স্রোতে রথাভিষিক্তান্তর মৃচ্ছিত সুইয়া ভূমিতলে পতিত रहेलन। गरांजा जीवा मान्मनार्तार भिथि धिक मन्मनंन भूर्वक नित्रष्ठ

হইয়া একেবারে পাঞ্চ ভৌতিক মায়া পরিত্যাগ পুরঃসর বিনীতি ভাবা

পন্ন ও অফুক্ষণ সর্বাবিশ্বেশ্বর নারায়ণ ধ্যান করত ধরাসনে স্মিবিষ্ট হইয়া অধোবদনে প্রক্ষেপিত তাবদস্ত প্রহার সহ্য করিলেন ঈদৃশ

ব্যাপার দর্শন পূর্বাক দেবগণ প্রভৃতি ধন্য২ প্রশংসাদারা পুলকিত হইলেন। ভীষা সমরশায়ী হইয়া উত্তরায়ণের অপেক্ষায় শরশয্যায়

রহিলেন। তাঁহার পতন হেতুক তৎকালে কুরুপাণ্ডুসস্তানেরা উভয়

माताविता ।

দলের বোদাগণ সাহিত্যে সর্বা জনেই ভীলের সমীপে আগমন পুরং
সর আভিশয় রূপে শোকে অন্থির হইলেন। এবং ছুর্যোধন বছ
বিলাপ করত রণ ভূমিতে অপূর্বি বস্ত্রময় গৃহ নির্মাণ পূর্বাক্ত তম্মধ্যে
পিতামহকে রাখিয়া তাঁহার রক্ষণার্থে কতিপয় দল সৈন্য স্থাপন করি
লেন ইতি।।

সারাবল্যাং দ্বিতীয়ঃ পরিচ্ছেদঃ সমাপ্তঃ।

অধ তৃতীয় প্রিক্সঃ

भव्रमित आङ्कादन बाखा हर्याधन कर्ड महावीत खानागर्या म्बाश्डिए निवृक्त रहेगा श्रिका कवित्वन य जनमा क कार्य मन्द्र कर्वीत अञ्चर्धात्रण कतिरण त्रण निवर्क इड्राज्यवर अनुश्रद्धत अञ्चलात्र 'রাজা যুধিতিরকে ধৃত করিব। অনন্তর সহান্দে ছ্যেলধন্থিতামছ সমিধানে যুদ্ধান্ত্ৰসতি গ্ৰহণাৰ্থে গমন ক্রিলে ভীমা কহিলেন" তুমি , , কথন কুষ্ণ সহায়ি পাণ্ডবগণকৈ প্রাজয় করিতে শক্ত হইবা নী অভ এব ভাঁহার দিগের সমূচিত রাজ্যভাগ প্রদান পূর্বক একণেও প্রীভি কর, রংশ রক্ষাহেতুক বিহিত হিত বচন কহিলাম। যদিচ মমবাক্য অনিষ্ট কর বোধ হয়তবে দ্রোণকে জিজ্ঞাসা করিলে কিশেষ'বিজ্ঞাত হইতৈ পারিবা। ছ্র্মোধনের মতের বৈলক্ষণ্যে কুর্ম হইয়া দ্রোণ ও जीवात कशितान, आगि अगाधात्र निमर्भन अमर्भन कतारेगा विलक्ष প্রবোধ দিয়াছি তথাপি ইহাঁর চিত্তে দিব্য জ্ঞান প্রদান করিতে পারি নাই ফলিতার্থ হতাদরে কিছুই প্রবণ করিবে, না। যেমন চোরা না मात्न धुर्माक्राहिनी ও अमठो त्रम्शी विविध চেটা बात्रा कथन मठी पाना र्य ना এवर दोशी मृज्यकारण उषध जकद कैरत ना उफान वारतर कृववा वर्षित प्राधिम अञ्चानाक्षकात्त्र পতिए रहेगा क्विन कृत्ति কেই অসক্দাশ্রম করিতেছেন স্থত্রাং কাহারু বাক্যই প্রহণোপুযোগ্য হয় না অধিকন্ত অবজ্ঞাকৃত হইয়াথাকে ইহা শুনিয়া রাজা জোণের কটুক্তি অসহিষ্ণুতায় বৈমুখহইয়া কহিলেন আমার সহিত সমরে অমরে কাতরে পরাভূত হয় ইদানীং কি নিমিত্ত শত্রুত্তয় করিব এবং অকো তে সমস্তক্ষিতি পালন করিয়া মৃত্যুভয়াতিরিক্ত পাণ্ডব বাধ্য ইওনাপে কা মরণই শ্রেমকর জ্ঞান করিয়া অভিছঃখে কর্ণ ছঃশাসনাদিকে সঙ্গে लहेगा तल अवंदि इहेलन अनस्त जूवन विजयी जानागर्थ निक পায় হইয়া ভীতি সাহচর্য্য রথোপর্যারোহণ পূর্বাক রণস্থলে উপনীত ও किंगिक्रीले ठक्कवार तहना कतिलान। পাछद्भाक जिक्रमञ्ज

আজায় ভীম সেনাপতি ইইয়া রণকেতে মকরবূহি রটনা পুর্মক দণ্ডায় मान इडेटलना याकाशन वजनम ध्यू येकात अ मुरुपूर कृषात नम করত যুদ্ধে উপস্থিত হইলি উভয় দলের প্রস্পার স্বসমান রাজগণ कियं काल ममें वाधा रहेलान अवर्णाय छा नार्क तन महायू क तन क्षित्व वस्टिनग इडाइड इहैन। विडीय मित्न अरम्थ ममस्य अर्जून महक्तम द्वर्याधनामित आर्याधान जीमाड्यू न कर्क क श्रेष्ट्रत देनना क्या • হইলে রাজা বিপন্ন হইয়া দ্রোণকে কহিলেন হে গুরো আপনাকে মহা রখা দেখিয়া সেনাপতি করিলাম কিন্ত বুঝি পাওবোপরোধে যুদ্ধে মনঃ সংযোগ হইতেছে না যেহেতুক আপনার শিক্ষিত অস্ত্র শিক্ষায় দীক্ষিত অর্জুনবীর তবাতো অসংখ্য সেনা সানন্দে সংহার করিতেছে এ কি আশ্চর্যা আপনি ভাহা দণ্ডার্যান হইয়া প্রভাক্ষতঃ দেখিতেছেন দ্রোণ মহারোষে ছুর্য্যাধনকে কহিলেন আমি বৃদ্ধ,ভিক্ষুক ব্রাক্ষণ আমার যদ্ধকরার কি প্রয়োজন। 'যদিচ তবাসুরোধে প্রবর্ত্ত হইয়া প্রাণপণে . রণ সম্পন্ন করিতেছি তথাপি যশোভাজন হইলামনা অতএক এ স্থলে তिष्ठेन हे উচিত नर्द हेश के शिया श्रीय थियश्रुल अश्रणामारक नहेग्रा त्तार्भका कत्र उथारहेट श्राम कतित्वन। प्राणायन मर्प्राथन হ্যথিত ইদয়ে অভিব্যগ্রে দ্রোণপদাগ্রে একাগ্র চিত্তে পতিত হইয়া রোদন করত উক্ত করিলেন গুরো তাবাশ্বাদে এ পর্যান্ত জীবনো জীবনাব স্থান করিতেছে অতএব ক্রোধী হইলে আর নিস্তারের পথ নাই ইত্যা ছ্যুক্তি প্রবণে তিনি রোষ পরিহার পূর্বক কহিলেন, যে সময়ে ধনঞ্জয় সম্বাধ না থাকে সেই ক'লে আমাকে সংবাদ দিলে অবশাই যুধিষ্ঠি রকে ধৃত পুরঃসর বন্ধন করিব তুমি কোন চিন্তা করিও না বিশেষতঃ ভোষার কাভরোজিতে নিতান্ত বদ্ধ হইলাম। 'ভূতীয় দিবস নার্মায়ণী

সেনাবলির সেন্।পতি হইয়া ত্রিগর্ত্তরাজকীয় স্থশর্মা ভূপতি অর্জুন সহ

সমর সাধন করিতে লাগিলেন । এ দিকে দ্রোণাদি মহাযোদাগণ

मात्राविण।

তুমুল সংগ্রাম কণ্ড বিষয় ও বিপন্ন করিয়া লক্ষ্পাণ্ডববাহিনী নিতান্ত কৃতান্তের করাল বদনান্তরে প্রক্রেপ করিলেন। তদানীং অন্য গতান্ত রাভাবে যুধিষ্ঠির মহোৎ কঠিত ও অপরাশীর পাণ্ডব সহ অন্থির ইইয়া अভिम्छाक कहिरमन भूख वह अनिवार्या तत् । जिमा छिन्न अनाम। ज প্রদর্শন হয়না অতএব চক্রবৃহ প্র:বশ পূর্বক অদা যুদ্ধ করিয়া প্রমানাদির কুরা নিবৃত্তি করহ। জ্যেগতাত কাক্যে অভিমন্য প্রতি বাক্য প্রদান করিলেন যে আনি ব্যুহ প্রবেশ করণের সন্ধান অনুবগত নহি কিন্তু নির্গমোপায় উদ্দেশাশক্ত প্রযুক্ত ভবিষাতে কিপ্রকারে আমার উদ্ধরণ হইবেকণ রাজা যুধিষ্ঠির কহিলেন আপাততঃ ব্যুহ প্রবেশ পুরঃসর পাণ্ডবকুল রক্ষা কর পরিণামে ভীমাদি মহা ,যোজা বীরগণ তৌশাকে অবশাই রক্ষা করিবেন তজ্জন্য ভীতি যুক্ত হওয়া क उंवा नरह, অভिমন্থা বীরবর তদাজা শিরোধার্যা পূর্বক মহা বিক্রম প্রকাশ করত মহা রণস্থলে পদার্পণ মাদ্রেই ব্যুহ দারস্থ জয়দ্রথকে পরাস্ত কল হানি করিয়া সপ্তর্থি মধ্যে প্রবেশ পুরঃসর যুদ্ধোদ্যত হইয়া একেশ্বর ভাবং মহারথিকেই অনুষ্ঠির করিতে লাগিলেম। ভীমাদি মহাবীরগণ বাহ বহিদারে জয়দ্রথ সহ আহবে অস্ত্যু গ্রন্থ ও তাসিত হইয়া সমীচীন স্থাত্ন সাধন করিলেন ভথাপি ঐ নিদারণ ছুর্জেয় রিপু দমন করিতে পারিলেন না প্রত্যুত সকলেই পরাভূত হইলেন এবং বাহ প্রবেশক পথা প্রাপ্ত বিধায়ে অপায় সিন্ধু পতি তানন্তর উপায়ের দিক্ষু বিধি বন্ধু কে স্মরণ পূর্বক মহাদ্দেন ধৈয়াসম রণে ক্রুদ্রন করিতে লাগিলেন। এ দিকে অতি মনোহর রমণী মোহন ন্বকলেবর পীতাশ্বর পরিধায়ী অভিমন্ত্য স্থমন্ত সংজ্ঞক সার্থির রথা রোইনে একেশ্বর, ধমুঃশর গ্রহণ প্রুরঃসর স্থৃতীব্র শরাঘাতে কুরুসৈন্যা त्रगांनी मध्या त्रगरका महोत्र कत्र कत्र तक तक नि श्रेवाहिक क्राहेरलन এবং তিনি মুমর স্থলে পিঞ্জর মধ্যে বিহঙ্গবং আবদ্ধ হইয়া ও কটাক্ষে লক্ষিত প্রথর তর শর বিক্ষেপে বিপক্ষ পক্ষের লক্ষ্য সেনাবলির বক্ষঃ কক্ষ ভিদ্যমান করিয়া মহারথী বীর সকলকেই পরাজ্য় করিলেন এবং

কতশত যোদাকে পাস্ত্র প্রহারে হত করিলেন। মথন তিনি মীনবন্ম হাযোদ্ধা জালে বদ হইয়া আবদ্ধ অদ্ধে শক্তি সাধ্যে ভুরিং বিপক্ষ মধ্যে অস্থিরচিত্তে অভন্তর্শসূত্র হণ পূর্বক এক রথে পরিভাষ্যমাণ হইয়া তাবৎ দৈন্য হতাহত করত দুঃশাসন স্থত উল্লুক কুমারঞে নিপাত করিলেন তখন কৌরবেরা হাহাকার শব্দে বিলাপ করিতে लाशित्वन। प्रशामन शुक्रणांक मर्स मूना मिथा जुन्। मर्था । শ্রেয়ঃ জ্ঞানে বছবিধ বিলাপ করিলেন তচ্ছবণে ছুর্য্যোধন পুজ লক্ষাণ ও পদাবীর দম সকোধে ধন্থধারণ পূর্বাক অতি বেগে অনুক্রমে যুদ্ধোদ্যত হইবা মাত্রেই অভিমন্ত্য তাহাঁদের সকুওল মস্তক ছেদন করিলেন। রাজা পুল্রদয়ের শোকে অধৈর্য্য ও ভূমি পতিত হইয়া রোদন করত অতি ব্যস্তে গদাহস্তে সংক্রস্তে আর্জুনির প্রতি ধাবমান হইলেন কিন্তু অভিমন্তার স্থতীক্ষুদশ ভল্লাস্তাঘাতে অন্তর্বাথিত হইয়া भुगालित नगाग्र भलाग्रन कितिलन भत्रकाल पृष्ठ विकारी कियारमु अकि মুম্যু অকুতোভয়ে ছুর্য্যোধন প্রভৃতি একশত সহোদরের তাহন গুলান বিনাশ করিলেন এবং ভাঁইার বীরু দর্পেন্দুরুকুলের গুরুগর্ম থর্ম হইতে লাগিল ও তাহার অসীম সাহসে শৌর্যাবীর্য্য প্রকাশে স্থাসে তাব তেই নিরাশ হইতে লাগিল এবং তাঁহার মনঃ সংযোগে শর প্রয়োগে ক্রমণ অনেক যোদ্ধার প্রাণ বিয়োগ হইল যথন তিনি বিবিধ অস্ত্র চর্যা দারা বিঘূর্ণিত বেগে বিচরণ করিতে লাগিলেন ও তাঁহার রণোপপম প্রভাব প্রদীপ্ত হইতে লাগিল তখন শত্রুগণ বিষয় ও নিদারুণ প্রহারে ব্যাকুল হইল। উক্ত ষোডশ বর্য বয়স্ক বালকের যুদ্ধে কৌরব পক্ষে তিন কোটি রথা ও ছয় বৃন্দ মদমত কুঞ্জর এবং সপ্তপদ্ম বাজী সহ অশ্বারোহী দৈনা ও অসংখ্য পদাতি নিপাত হইলে অগণিত প্রাণী বর্গের শরীর বিগলিত শোণিত সাগর তরঙ্গে আতক্ষেকবন্ধাণ সম্ভরণে ভাসমান হইল। তথন শকুনি পুত্র ছঃসাহসে রণে প্রতি ইইলে অভিমন্তা বীরবর অবহেলে তাহাঁর শ্রবণ নাসিকা মুও, খণ্ড > পূর্বাক ছেদন করিয়া অথও দোর্দণ্ড ভুজদণ্ড সার্থক করিলেন। আর্জুনির ঈদশ যুদ্ধে হুর্যোধনের আশস্তরিক আশস্কাত্ত মহাসক্ষটে পতিতানশুর

जादाविं। নিয়াশিত প্রায় সমূহ ভয় ও থেদ সহকারে শেকাবিল নয়নে মানি स्टिक स्नानि वहर्ष द्यांवरक कहिर्जन आहार्या धकाकी भिष्ठ कर्गानि মহারথী গণুকে সমরে পরাস্ত করিয়া বছনী সমা মন্ত করিতেছে তাহা अहरक প্রত্যক করিয়া ও বিপ্রকৃষ্টরূপে কেনই বা নিরস্ত হইতেছেন। অমুমান করি বালকের প্রতি সুহ প্রকাশে অদ্য আমার সর্বাশ করি रवन याश्रहें एक अकर्ण निक्ष्य श्राप्त इंडेल या आत नगरत अय नाहे দ্রোণ ক্রোধে উক্ত করিলেন হে রাজন তব কর্মা অমুক্ষণ করিলেও काब येग लां व नं है वत्रक प्रांचार्शन कित्रिं विलक्षन नक्षम इ ७ ० वर সৃতার বশতঃ কটুভাষ্টে পটু হও ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ ভোষাতেই ঈক্ষণ হইতেছে যদিচ পূর্বে ভোমার সহবাসে প্রাণ বিনাশাশক্ষা হইত ভবে. কেন জিঘাংসক হস্তে পতিত হইয়া দুর্দ্দশাগ্রস্ত হইব এবং ডুমি রাজা হইয়া শিশুর সহ যুদ্ধে কেন পলায়ন পুরঃসর জীবন রক্ষা করি য়াছিলা অত্এব দুর্য্যোধন সত্যাবধারণ পূর্বাক ইহাও মন্যুশান কর একু ষ্ণের ভাগিনেয় অভিমন্তাকে ন্যায় যুদ্ধে নিধুর করণের ক্ষমতা কাহার নাই, তখন দুর্য্যোধন মহাপাপ ভুজ্জৈ গ্রাসিত হইয়া কহিলেন যেমম শমন সুরূপ সর্বাশক শিশুর বধ সাধনার্থে একদা সপ্তর্থী 'একগতেজ-পরিরেইটন পূর্বাক যুদ্ধে প্রবর্ত্ত হইলে অবশাই অভিমন্তা নিপীত হই বেক। তাহাতে জোণাদি মহাত্মা নিচয় রাজার ছনীত যুক্ত বচন প্রবণে চমৎকৃত জ্ঞান করত ভদমুরূপ অন্যায় কর্মকরণে অস্থীকৃত হইলেন তথাপি রাজা আত্মকুল ক্ষয়ার্থে অলক্ষণীয় লক্ষণে নির্ভর কর্ত অহুজা প্রদান করিলেন স্তরাং রাজভরে অগত্যা ট্রোণ কৃপ অশ্বামা কর্ণ তুঃশাসন শকুনি এবং স্লয়ং রাজা ছুর্য্যোধন ঐক্য হইয়া শিশুসহ রণো দাত হইলেন। আর্জুনি অতুলা পরাক্রমে ছাতিমান্ ভয়ানক বিশিখ लिक्स भारती व्याक्षिण कर्म व्याक्षिण कर्म विष्य क्षित करिए वाशित्वम । धवर যুগান্ত কাল প্রলয় পবন প্রবাহ্বৎ বিবিধাস্ত প্রহার ছারা ক্রমেং মহাবীরগণ সপ্তবার মুচ্ছিত ও পরাজিত ইইয়াও, আন্তরিক যন্ত্রণা भाहेशा शूर्स मञ्जना माफलार्रार्थ थस्थान मील क्मांत्रक प्रकृतिक হইতে বেষ্টন করিয়া বিষমান্ত্রাখাতে সমাক্ প্রকারে আকী র্ণ করিলেক

उथन ७ जिन तान विक्थ इहेटलन ना यारहफू जो होते हैं मूल मर्मान ছিল যে সমরে পরাজায় হওয়া ক্ষতিয় ধর্মা নহে। পেষে কেহ রথ কেহ অশ্ব কেত্রা সার্থী ও ফেল্খমূর্বাণ কাটিয়া অভিমন্তাকে নির্স্তাকরিল এবং তাঁহারশসুদয় গুনাও হত হইল তথাপি তিনি জীতনা হইয়া স্বীয় ধর্ম সারণ পূর্বক অসি চর্ম ধারণ করিয়া রথ হইতে স্বচ্ছদে বিশ্প প্রদান পুরঃসর ভূমি গত হইলেন। মহারথী সমবায় বিশাম বিশাস নেত্ৰ হইয়া ভাঁহার প্রতি বাণ ব্যণ করিতে লাগিল তাঁহার শ্রীর वार्वार भक्षकी जुना इहेन, उथन अजिनि मिर्छात्र मही महिमाथिका রথচক্র ও পদমুষ্টি প্রহারে বিপক্ষের বহু দৈন্য নিহত করিলেন তিনি আমরণপণে প্রাণ সমর্পণ করত ও পরাধীনতাকে তুচ্ছ জান করতঃ त्रामाक रहेशा कुलस वक मग महाभमा धातन পूत्रमत का जिल्ला প্রকাশে কুরুলৈন্য সমাজ মধ্যে आমাণ হইলেন। একপ্রকার মৃত্যু গ্রাসে পতিত হওনকাল পর্যন্ত সমুখ যুদ্ধে মহাবীর্যা প্রকাশ করিতে " कि कि उत्त नारे किन्छ वृद्ध निर्गातन न सान सनवर्गा उर्जू में प्राची সমর্থ হইয়া দুঃশাসন পুতা কর্ত্ক সাদাঘাতে অভান্ত প্রাপ্তানন্তর অভিমানে নয়ন নিঃস্ত অন্বর্ত রক্তধারা বর্ষণে স্কাঙ্গাভিষ্তি হইলে কৃষ্ণশারণ পূর্মক প্রাণভ্যাগ করভঃ তৎক্ষণাৎ চক্রলোকে, গমন করিলেন। উক্ত অভিনন্যর সমর সুখ্যাতি পতাকা অনুরাগ প্রভঞ্জন হিলোলে উভ্ভীয়মান হইয়া সাধারণ যোদ্ধাগণের হৃদয়ে বিলক্ষণ রপে নির্লেক্য হইতে লাগিল। কুরুক্তেরে উত্রাংশে অজুন নারা য়ণী সেনাগহ রণ করত নাঁনাবিধ অমজল দর্শন ও অঘটঘটন হেতুক উकार्टन ও एककर्णां इहेश कर्णर वाक्तूल इहेर्ड लागिरलन এবিষধকালে দূর হইতে কুরুদৈন্য গণের জয়ারনি শ্রবণ ও স্থীয় দৈন্য মধ্যে নিঃস্তব্যে হাহাকার স্থা প্রবেণাত্র সত্র শিবিরে প্রভ্যাগ্যন পুরঃসর অভিমন্থার শোকে সমূহ বিষ্ণ হইয়া আক্ষেপযুক্ত বিস্তর বাক্য উक्ত कति एक विश्वन, उर धारण की क्षा अ वर्षिय छे अपन माना সাত্ত্রনা করিয়া কহিলেন যে "একবৃক্ষে সম্ক্রিটা নানাপক বিহঙ্গমাঃ। প্রভাতে দশদিকং যান্তি কাক্ষ্যা পরিবেদনা,, ॥ অর্থাৎ রাত্রকালে यमम नानाजाि अकि भव এक তে वामकत् उ आ एक मकर छ स्थाि लिकि प्रभाविक भी खान करत एक श हेर मर्गाद की ववर्ग गणाया छ করণ হেতুকু স্বৰ্দ্ম ভোগাবসানে প্রাপ্তক্রেলে নিধন হয় তাহাতে কাহার কি কেননা আছে। তৎকালে সত্যবতী পূল্র ব্যাসদেব তথায় উপ স্থিত হইয়া অর্জুনকে কহিলেন। বিধাতা ত্রিভুবন সৃষ্টিকরিলে প্রাণী , পণ পৃথিবীতে পরিপূর্ণ হইল। পুণ্যবলে কোন প্রাণীই পতন হরেন না ज्ञात्क शृथी अम्बाजात मानायमान इहेट नानिन। जम्बलाकतन নারাগ্নণ সচিন্তায় হুহুছার শব্দ করত এক অতিদীর্ঘ নিশ্বাস পরিত্যাগ क्रिंडिलन डांश्रांड अतमें व्यक्षिमरत्रत नामां अथ श्रेड धक पूर्ण घटेन अग्रिमी कना उर्शक इड्या मधायमान इड्न अलू जाँशाक करि स्ति (य " मृजुाक्तभा मृर्डिए हर्जुर्मभभूति शतिस्थामार्ग इउठ काल প্রাপ্ত জনকে সংহার কর,, তদবধি এই অনিতা সংসারে কালসহকারে প্রাণী সংহার হইডেছে অতএক ক্ষয়ণীয় শরীর সন্তাধ্ণম প্রযুক্ত खाजिमश्रात निभिन्न (कन প্রাচুর্যা ছঃখ मस्राद्धि শোক মোহে মুখা হই তেছ। ব্যাস বিদায় হইলে যুধি छैत বজুা ছিনিগত সমস্ত বাৰ্ত্ত। স্থবি मिछ रहेश व्यक्त म्हत्रा शिक्षि विद्या कि तित्वन य कर्मि विर्वास বন্ধ করাতেই মমপুজ নিধন হই য়াছে অতএব কল্য তাঁহাকে বধানা করিয়া পুনরাগমন করিব না যদ্যপিও বিনা বিকাশে স্থ্যাস্তগত হয়েন তবে প্রজ্ঞান নথা সীয়াঙ্গদক্ষ করাইব। এই কটিন পণে কৃষ্ণ সমূহোৎক ঠিত হইয়া অর্দ্ধরাত্যবসানে সঙ্গোপনে সঞ্জয়কে সঞ্ লইয়া কৈলংশ শিখরে হরপার্বতীর সন্নিধানে উপস্থিত হইয়া বছবিধ স্তুতি মিনতি করিলেন হে ব্যবাহন শড়ো তব বিভূতি সকল সহস্ৰহ প্রকারে পৃথী বিস্তারিত হইতেছে জয়দ্রথ বধার্থে দৃঢ়তর পণ সাধনার্থে সম্পূতি ফ্রেম্গ্র হইতেছি তাহার সিদ্ধান্তমতি প্রদান হইলেই কত কার্যাহই মহাদেব স্কৃতি পরতন্ত্রায় সন্তোষিত হই গে ক্ষাজুনকৈ বর अमान क्तिलान य অতি শীঘু জয় प्रथ वश्च क्तिया कू क़कूल क्षय किति। তাহাতে কোন, সংশয় নাই; অধিকন্ত অজুনকে কহিলেন তোমার সাহায্যার্থে কুর্রুগণের সহিত স্থাং যুদ্ধও করিব। দরিজ্ঞন ধনলাতে

বে প্রকার অতান্ত সন্তাই হয় তজেপ বাঞ্চিতবর প্রাপ্তে কৃষ্ণ ধনঞ্জ महामन्त्र हिट्छ छथा रहिट विमाय रहेग्रा मर्सकत्नत वाशाहरत सीय শিবিরে পুনরাসতি করত ছুক্ত শয়ন করিলেন।

চতুর্থবাসর প্রাতঃকালে পাওবেরা সূচার যুদ্ধ পরিছদ পরিধান পূর্বক কৃষ্ণ সমভিব্যাহারে রণস্থলে উপস্থিত হইলেন । পরপক্ষে মহা वीत दिश्वाचार्या मर्क मना शतिश्रष्ट शूर्वक षामण क्यांण वाशिया युक .. • ক্ষেত্রে স্কুবিপুল সর্কাঙ্গস্থনর দিবাাদ্রত ব্যুহ রচনা করতঃ তদভান্তরে দুর্য্যোধনসহ অতি সাবধানে জয়দ্রথকে রক্ষা করিলেন। অজুন ক্ষীরব प्लवल नितीक्रण कंत्रज कांज्य इड्डिलांशित्नन छथन कृष्य मर्थादाद्य উक्তि क्रिलिन यि भिक्नुनमन निधनोर्थ अममर्थ २७ ज्य अमा अग्र যুদ্ধ করিয়া ক্রুবংশ ধ্বং স করিব তজ্জনা কোন সন্দেহ করিহ 'নাইত্যু ক্তানন্তর দারুকের প্রতি আদেশ করিলেন যে "শাঙ্গ ধন্তরাদিসহ মমর্থ সুসজ্জিত করিয়া রাখ আমার শঙ্খধৃনি প্রবণ মাতেই যুদ্ধন্তলে রথ लहेया याहेवा,, श्रीकृष हे जिंग एक मान श्र्यक व्याजित व विर्ति दथ मक्षालन कत्रज्ञ निशृष् गृष्ट्यादा उभिष्ठ् इहेटलन, घातत्रक त्यांगा ্রিম্পে প্রথম করাতে কিয়ৎকাল সেই বদ্ধ অদ্ধে যুদ্ধ করিয়াও মহা বীৰ্যাবন্ত অজুন বিক্ৰান্ত দোণ কর্ত্ব আক্ৰান্ত বিধায়ে শেষে প্রান্ত र्टेल्स जनखर क्रिय छेश्रामण जाहीर्यात मिक्निजारा गंमन शूर्यक বহুল সৈন্য বিনাশ করত দোণের পশ্চাৎ রথ চালাইয়া ব্যহভেদ পুরঃসর তন্মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন তন্নিরীক্ষণ করত দ্রোণ ক্রোধ সাহচর্য্য প্রচুর প্রাগল্ভা পূর্বক কহিলেন "পার্থ মমাত্রে এখন পলায়ন করিলা বটে কিন্তু দেখা যাউক কতদূর গমন করিতে শক্তা হও। ভর্জু ন ভীত হইয়া স্তব্ধচিত্তে নমুভাবে প্রণাম পুরংসর উক্ত করিলেন গুরো তব সমক্ষে সমর করণোপযুক্ত প্রশক্তি কাহার আছে অত্পব্ মুমদোষ मार्जन। करून। श्रार्थत हे छा जि वा जिए जिल्ला प्राप्तान श्री के महारमा একপাশ্বে রথ স্থাপন করিয়া পথ প্রদান করিলে, ধনঞ্জয় হর্ষোৎ ফুল্লান্তঃকরণে ধনুর্বাণ ধারণ করত আকর্ণ সন্থান গুরুণ পূর্বাক বছ रमना विनाभ ଓ अश्रथामा এवः कर्नाक श्रमः मृष्ट् ज करिया अि

সারাবলি। সাহসে নির্ভর করত'ছয় কোশ পর্যান্ত ব্যহান্তরে প্রবিষ্ট হইলেন পরি মধ্যে মহাহ যাক্ষ্যাণকে অচেতন করিয়া কোটিং সেনাচয় ক্ষয় করিলে কুরুদলে হাহাকার রব ধুনিত হইতে লাগি ইসনোরা কুত্ ফাভিভূত্য নিমিত্ত বেলা বিতীয় প্রছরের সময়ে রণে ভঙ্গদিয়া পলায়ন করিল। वामि अर्जू नक कर्शन এই ममरा भूकि। क्वीकी को अञ्जलनार्थ मझत সমর স্বলে উপনীত হইয়া কৌরব পক্ষীয় অনেক দৈন্য তিশূল যিতি নিপাত করিলেন তাহাতে তাবৎ যোদ্ধাবীরগণ বিস্ময়ান্তিত হইয়া বিশ্ব স্তবের অন্ত সূর্ত্তি দর্শন করত পলায়ন করিতে লাগিল। তৎকালে জ্রীকৃষ্ণ ধনপ্রথকে কহিলেন যে 'কি ঞ্বংকাল ভূমি স্থিতহইয়া যুদ্ধ কর, যেহেতুক বাণাঘাতে ব্যথিত অশ্বগণকে তৃণজ্ঞল ভক্ষণ করাইয়া সত্তরে ত্ব সন্মিধানে উপস্থিত হইব,, পার্থ নিতান্ত সংশয়াকুল হইয়া খেদ সহ কারে উক্ত করিলেন হে প্রপন্ন ভয় ভঞ্জন হরে এস্থলে তৃণকারি প্রভূ তির কোন সম্ভাবনা নাই, অতএব বুঝি এই মহাসঙ্কটে অস্মদাদিকে ছলনা ঘারা পরিত্যাগ করিতে মানস করিয়াছেন, হে দয়াময় মধুস্থদন তব দর্শন হেতুক অন্থদয় হৃদ্য় উদ্য় হয় এতদ্রপ অনাথ স্বামী যে আপনি সম্পতি কেন সমূহ ছুঃখে নিমগ্ন করাইবেন। ইতুর্গিক এবন সুথকর বোধে কৃষ্ণ উক্ত করিলেন, অর্জুন ভোগরা পঞ্চাতা ও যাজ সেনী ভক্তি করণক আমাকে ক্রয় করিয়া বাধা মাখিয়াছ অতএব ভক্তি ক্রযা হ্দয় শৃঙ্খল বন্ধন কি কথন মুক্ত হইয়া একদণ্ড নিমিত্ত স্থানান্তরে তিষ্ঠিতে পারি অনর্থক ছঃখ জনিত করুণাক্লিন্ন বচন পুয়োগে পুয়ো জনাতাব এক্ষণে স্থিরচিত্ত হও। অনন্তর অনন্তির স্বেচ্ছার এক অপূর্ব পুষ্ঠলশীল সরোবর হইল ভাহাতে করুণানিধান কৃষ্ণ রথাশ্ব লইয়া শোণিতাদি ধৌত করত কচ্চরত্ব দূরীভূত ও উক্ত বাজিগণকে বারিপান করাইয়া ত্ররায় সমর ভূমিতে আগত হইয়া দেখিলেন একাকী অজু নের প্রতি প্রতিপক্ষ পক্ষীয় যোদ্ধা সকলেই প্রাণপথে বিশ্বলাস্ত্র প্রক্ পণ করিতেছে তখন অবতরণ শীল অর্জুনকে রথারোইণ করাইলেন। ताका यूधि छेत् इटे প্রহর বেলা পর্যান্ত অজু নের কোন বার্তা প্রাপ্ত বিধায়ে ভাবনাকুলিতান্তঃকরণে বিক্রিয়া ভাবাপন্ন ছইলেন যে একে

श्रत भार्थ गुरु পुरवम कित्रिया हिम ना खामि वा अखिमनुत मन्भ महा সঙ্কটেই পতিত হইলেম ইত্যানি চিন্তায় চিন্তিত চুইয়া অচিন্তনীয় চিন্তামণির স্মরণ পূর্বাক উক্তেসন্ধানার্থে সাত্যকী বীরকে প্রেরণ করি লেম। তৎকালিন সাত্যকী ফ্রোণাচার্য্যের মহন্তয়ে রাজাকে রক্ষা কয় ণার্থ তৎ সন্নিক্ট নিযুক্ত ছিলেন তিনি নৃপাদেশিত বাক্যে পার্থের অবেষণ নিমিত্ত গমন সময়ে যুধি छित সদেশে ভীমাদি যোদাগণকে, স্থাপন করত কঠিনবাহ দারে উপস্থিত হইলেন। কৌরব পক্ষীয় যোদ্ধাবীরগণ অর্জুন শিষ্য সাত্যকী সক্ষ্মন পূর্বাক সন্মিলিত শুইয়া একদা অসংখ্যাস্ত্র বিক্ষেপণ করিলে তিনি তাবদিশিখ উচ্ছন্ন করিয়া স্বীয়াস্ত্রে ছঃশাসন শকুনি প্রভৃতিকে অচেডন করিলেন, তাঁহারা অস্থিরচিত্তে সমর পরিত্যাগ করিতে লাগিলেন লাত্যকীর অতি বিচক্ষণ সার্থী সমীরণ সদৃশ সম্বেগে রথ প্রচালন করিয়া মুহূর্ত্তিক কালাত্যয়ে পঞ্জোশ উত্তীর্ণ হইয়া অজুনের চ্জিধুজ নিরীক্ষণে মহানন্দার্থবে মগু হইলেন এবং ধনুমানু সাত্যকী শাণিতশর ব্যুণে,লক্ষ্ কৈরিব ধুজিনী বিনাশ করিতে লাগিলেন প্রানম্ভর ভূরিপ্রাবা তৎসহ রণেপ্রাবর্ত্ত লান ইহয়া বহাকোধে সাত্যকীকে বাণাঘাতে সৃচ্ছিত করিয়া ভাঁহার বক্ষস্তলে উপবেশন পূর্বাক চিকুরাকর্ষণ করত খড়গ প্রহার দারা বিনা শোদ্যত হইলে জীকৃষ্ণ তদ্দর্শনে অর্জ্জুনের প্রতি ঈঙ্গিত করিবামাত্রেই চতুর চূড়ামণি পার্থ সমর্থ প্রকাশ পুরঃসর স্থার্থ সম্পাদনার্থ সোমদত্ত অপত্য ভূরিপ্রবার হস্তদয় তৎক্ষণাৎ ছেদন করিলেন ইতাদ্ভ যুদ্ধ দর্শনে যোক্ সমবায় চমৎকৃত জ্ঞানে বিক্ষুক্ত হইয়া ভূরিপ্রবার অতুল্য পরাক্রমে ধন্য২ অগণ্য প্রশংসা ও অজু নের অন্যায় সম্র 'এবংকাঘট্য ব্যবহারে হাহাকারশব্দ করিতে লাগিলেন কিন্তু তৎকালে সামান্য ভুরি প্রবারসহ বিগ্রাহে সাত্যকীর ঈদৃশীদুর্গতি প্রাপ্তিও যুদ্ধে প্রাপ্ত হওয়া অত্যাশ্চর্যা বৈধিষয় কারণ এই যে পুর্বের বস্থদেবের পিতৃ গ্রাদ্ধকালে তৎপিতৃব্য শিনি সূহ সোধদত্ত ভূপতির বাক্কলহ হেতুক মহাযুদ্ধে চপেটাঘাতে সোমদন্তের দণ্ডোপমদন্ত ভগ্ন হইল্পে তিনি ক্ষুক্তিত্তে মহা দেবের তপস্যা করিলেন বছদিবস পর্য্যবসিত ইইলে শিব প্রসাদাৎ বর

প্রাপ্ত হইলেন যে তব পুদ্র শিনিস্কভবে পরীদীয় করিবেক। ভদ্মেতুক উক্ত যুদ্ধোসভিকৌ তৎ কর্ত্ত্ক পরাজিত হইলেন। ভুরি শ্রুবা রণস্থলে অতি তুঃথেপতিত হইয়া বিষদৃষ্টি পুর্বাক অর্জ্জ নকে কহিলেন বিতথ সমরে কুলাঞ্চার আমার হস্তছেদন করিলা কিন্তু এই মহাকিলিয়ে অব শारे छोत्रांत नित्र निलास गमन कतिए हरेएक। পভरांलू मांजाकी চেতন প্রাপ্ত হইয়া ভুরিশ্রবার কেশাকর্ষণ প্রবিক খড় গদ্বারা ভচ্চরীর খণ্ড বিখণ্ড করিলেন। কেরবসগ্মহা কোপিত হইয়া সাত্যকীর প্রতি वान विंदिक श कतिरलिकिनि कर्णि विख्व अठारिक ना इहेर क्लोशिरलन, কিয়ৎকাল গতে প্রন শেততন প্রাপ্ত হইয়া দৃঢ় সাহসে উপান করিয়া বিপক্ষপক্ষীয় শূরগণ জক্ষকরত বিশাল শরসন্ধান প্রবিক সপত্র গণকে অচেতন ও জর্জ্জরিত করিলেন। তৃতীয়প্রহর বেলাবলান হইলে সাত্য কীর অনাক্ষনে যধিষ্ঠির মহোৎ কণ্ঠিভহইয়া ব্যগ্রচিত্তে ভৎপর্যোষণার্থে ভীমকে প্রেরণ করিলেন। মহা তুর্জ্বর ব্রুকোর্দর বীরবর সহর্ষে লোমা ঞ্চিত হইয়া বিচক্ষণ বিশোক সর্বেষ্টাকে আহ্বান করিলে ক্রিলি, অসু জ্জাবৃত রুগ আনয়ন করিবা মাত্রেই অশাস্ত তুর্দ্ধাস্ত ভীমবর বৈর সজ্জ সংঘাতনার্থ স্থেয়সী শেমুষী।স্থত শ্বান্তসঞ্চালন পুরঃসর অরগতি ক্রমে তদারোহণে নানাবিধাস্ত্র পরিগ্রহণ থূর্বকে সমীর বিজিতবং সত্র বেগে ব্যুহ্মধ্যে প্রবিষ্টানন্তর রণমত্ত প্রমত কেশরী সম উমাত্ত হইয়া আবদ্ধ বর্তম স্বচ্ছন্দে মুক্তব্বত মনস্কারে লক্ষ্ণ ২ বিপক্ষপক্ষ পৃতনা কটাক্ষপাতে হতাহত করিলেভীম ভয়োপদ্রত সৈন্যচয় হতাশায়নিরা শিত হইতে লাগিল। ইতিমধ্যে তদীক্ষণে দ্রোণবীর সরোধে অন্তদ্বার রোধ করিলে ভীম ভবিষ্যতে অপরাধ ভীতি মন্যামানে ঘন ২ ঘনাবৃত ঘনধুনি সদৃশ াভীর ভাষে গুরু সকাশে ছুর্গমাবৃত বর্তুম ত্রিত মুক্ত নিমিত্ত উপরোধ করাতে অঞ্চিত গুড়াৎ গ্রার্কে গর্জন করিয়া উচি লেন। এই প্রচিত্র কার্য্য আচার্য্য সমীপে ভীক্কতা ফভাব পরিত্যাগ প্রবিক প্রভাবান্বিভ পৌরুষত্ প্রকাশ নাকরিলে সাহসের হাসতা হয

किमिटक्ट किवाद विष्विक भाषाद्य क्षवन वायु क्षावादिक क्त्राहेशा छिए, घाण्टवर्ग भगन क्रिल्ल कुरू रेमनाग्रन त्यारगयाद्रभ कीवन वकां य अना मिशक्षताल श्रविष्ठे इहेटन जीम आर्शकार्भ কৃষাগ্রে উপস্থিত হইলেন। মহা ২ যোজা নিবহ তাঁহার অক্ষান্তিগতি প্রতিরোধীহইতে পারিল না। বৃকোদর পথিমধ্যে কর্ণকৈ বৃত করিয়াও অর্জ্জ নের পণ পালনার্থে পরিত্যাগ ক্রিলেন। উক্ত দিবস থেকেশ্বর जीय महीयमी नकावनधी इरेया विश्वत्मत हजूत क्या हिनी (मनी ज्या দুর্য্যোধনের অষ্ট্রনবতি সহোদরকে নিপাত করিলেন। সাত্যকী সহ অর্জ্জন পরস্পার একায়নগত হইয়া চতুরক্ষেতিনী কুরু সৈন্যগণকৈ যমা লয়ে দিলেন। ব্ৰাজা তুৰ্য্যাধনের হৃদয়ে ভাতাদির বিশাল শোক স্বৰূপ শূল বিদ্ধা হেতুক অসহা বেদনায় ধুল্যবন্ত হিত ও মোহিত হইলেন छांश्रत मिळ मिलिल कलाधी ७ कि मिया के विष्ण ७ व्हेल । इंकु कि सू সমন্ত্রিত সৈন্যামাত্য সম্প্রোহ বিচিকিৎসায়ুক্ত হইয়া রীজার উদুশীদশা. দর্শন কবত হাহাকারধানি করিতে লাগিলেন। অভিপ্রিয় কর্ণ রাজার ্ শত প্রাস কায় প্রতি চক্ষ বিকেপ করত বিপ্রলাক্ষেপার্গবে নিমগ্ন হইয়। मृष् সংকল্প श्रुक्तिक श्रेन यएक मनार्भाव कित्रिब्बन धवर क्रमभः मर्छवात পরাজিত ও লর্জিত হইলেও ঢুঃসাহসে ভর করত নিঃসাধ্বস ভীমকে নিরস্ত করিলেন তথাপি তিনি রণস্থলে পতিত মৃত হন্দী অশাদি শব स्खाम ও রথ র্থাঙ্গাদি প্রহারে বিরাম করেন । নাই, অদ্বিতীয় কর্ণবীর ও তৎসমুদায় ছেদন করিয়া স্বীয় শক্তি প্রকাশ পুরঃসর প্রচণ্ড ২ বান প্রক্রেপণ করত ভীমের অখণ্ড প্রতাপ চূর্ণ করেনও ভাঁহার শরীর ছিম ভিন্নহইয়া সর্বাঙ্গে রুধিরবর্ষণ হইতেলাগিল অবশেষেতাঁহাকে সমর৷ শক্ত সদাৰ্শন কৰিয়া অতিশীল্ল হস্তদ্য ধৃত করত বিশিধাপমান স্কৃচক বাক্য প্রয়োগানন্তর মাড়া কুন্তীদেনীর বচন (আমার পঞ্চ পুত্রকে নষ্ট করিও না)স্মরণ হইলে ভীমকে পরিত্যাগ করিলেন। তৎকালে এক্ষ

পাথকে কহিলেন দেখ অদ্য ব্কোদর কর্ম কর্ত্ক আতিণাযাৰপে তির

ম্ত ও তাঁহার উপহাসে সংশ্বাপন্ন ও মর্মাপীড়িত হইয়াছেন,

অর্জুন ও ভীমের ছুরবস্থা বিদ্যানানে বীক্ষণ কর্মত বিষয় বদনে ছঃখ পর্কাবিক্ত বাক্যোক্তি করিতে লাগিলেন। ভীম ম্য়মারে সলজ্জায় রথারে হেণ করিলে পর পার্থ মহাক্রোধে স্থতী ব্রতীর বিক্ষেপে কৌরব দিগের অসংখ্য হয়, মজ রথ পদাতি খণ্ড২করত চতুদ্দ গু বেলার শিষ্ট थाकित्छ नगस विनास दिनास दिना छ दिन । अक्षा अक्षा कित को दिन के दिन को दिन को दिन को दिन को दिन को दिन को दिन के दिन के दिन को दिन के दिन को दिन के दि কিয়দাুর, হইতে গোপায়িত জয়দ্রথ পার্থের রথ বৈজয়ন্তী সমীকণ कतिया ममूर ज्य नक लिए रहेया निस्ति श्राम्य कतिल। नोतायन ভিধিলোকন করিয়া অভিশয় ভাবানাত্ত্বিত হইলেন। পরিশেষে ভগ বান্ পাণ্ডুকুল রক্ষাথ স্থদর্শন মহাচক্রদ্বারা স্বর্যাচ্ছাদন করিলে আক স্মিক রজনী সমুদয় হইল। তখন চুর্য্যেধনও জয়দ্রথ সানন্দে জয়২ ধনি করত পাশুব সমিধিতে উদয় হইলেন। অর্জ্জনের প্রতিজ্ঞানুসারে ম্বাং প্রাক্তির বিবিধ সৌগন্ধি কাষ্ঠ শ্রেণী পূর্বক সংস্থাপন করত অগ্নি প্রদান করিলেন তাহাতে দ্রাণ ভর্পণয়ুত হুতানিন স্ফুলিঙ্গ কদম্বগগণ गार्श छेष प्रीयमान् इहेट लाशिल, প্রবল প্রবাহিত শ্বনন महकाद् গোর নির্বোষে প্রচণ্ডৰূপে ধনঞ্জয় প্রজ্ঞালিত হইলে ধনঞ্জয় গোবিন্দ দৈশে সংজ্ঞার সন্নিহিত হইয়া শর চাপ করাকর্ষণ্ খুর্বাক ধারণ করিয়া সপ্তবার শোচিক্ষেশ বেষ্টন করত প্রবান হরিমুখ নিরীক্ষণ ও কিঞ্জিং কাল স্থিতি করিলে চুর্য্যোধন সাহাস্থ্যবদনে কহিলেন 'পোবক প্রেশে বিলম্ব হইলে শেষে প্রাপঞ্জিক মায়ার বৃদ্ধি হইবেক অতএব চক্ষুম্ দ্রিত করিয়া শীম্র ঝম্প প্রদান কর ,, অর্জ্জন চুর্ন্যেধনের উষতীবাক্য শ্রবণে উক্ত করিলেন,রাজন্! তুগি জয়দ্রথ লইয়া গৃহে গমন কর, আগি এখনই অগ্নিতে আত্ন সমর্পণ করিব,, অনন্তর অর্জ্জন সমিধানে জয় सर्थाक मृष्टे कितिहा क्ष मछ्टे इरेशा पूष्टे जतिहे मटे कत्नार्थ स्माना চ্চাদন মুক্ত করিলে জগসাণ্ডলে স্ভানুকিরণজাল পরিব্যাপ্ত হইল हेलाक्श वाशित पर्नात প্रावनामाश बाखता वक ईरेश मितियारश কৌরবদল সংত্রাস্থৃক্ত এবং ২ামঠ পৃষ্ঠবং কঠোর কৃষ্ণের সন্ধটি কপটি वाहिक कतिए वक्तम इहेगा मिहे अश्विकिको विसम मक्दि कि कि

मृष्ठे रुरेटनम । क्रम्भक् दुन जकाविष्ठे कृष्ण करिएनम मृद्ध अर्क्क् म ठाति দণ্ড বেলাবশিষ্ট আছে অতএব আর কেন জয়দ্রথ বধে বিলম্ব করি তেছ, ঐ পাপিষ্ঠের মুণ্ডছেদ করিয়া ভূমিতলে পতিত না হয় এতজ্রপে বারে ২ কাম্যবনে উহার পিতা সিন্ধু নৃপতির ভুজান্তরে প্রক্ষেপণ করিলে রক্ষা পাইবা * পাথ এবস্ত তাদেশে তথাবিধ কার্য্য সম্পাদান করিলে সন্ধ্যার সময়ে গুণসিন্ধু সিন্ধুরাজার সন্ধ্যোপাসনায় হস্তবদ্ধ জলাঞ্জলি মধ্যে মৃত মুগু পতিত হইবা মাত্রেই তিনি সত্রাসে তমুগু ভুমগুলে বিক্ষেপ করিলেন তাহাতে সিন্ধুর স্বীয় মস্তক ছিন্ন হইয়া ভূমিতলে পতিতও জীবনের শেয় জলাঞ্জলি দত্ত হইল। অর্জ্জুন অবি লম্বে সাত্যকী ভীম সহিত প্রনবেগে ব্যুহ বহির্গত হইয়া নৃপ সমীপে উপনীত হইলেন। মুধিষ্ঠির অত্যন্ত হাষ্ট্রচিত্তে আলিঙ্গন প্রদান পূর্বক উপবেশন যোগ্য দিব্যাদন দিলে কৃপানিধান ভপ্তান্ জয় দ্রথের মৃত্য বিবরণ শ্রবণ করাইলেন। বিপক্ষপক্ষে রণক্ষান্ত না হইয়া তুর্ব্যোধনাজ্ঞায় লক্ষ্ণ উলুকা প্রজ্ঞালিত করিয়া রজস্থাদয়ে সমীকস্থলে সমাগত হইলেন তৎ সমীক্ষ করত বাহিনী সাহিত্যে পাণ্ডবগণ ও আলোকাভাবে শত ২ উলুকা জালিয়া মহারণেৎসাহী ইইলেন। রাজা যধিষ্টিরকে ধৃত করণাশয়ে দ্রোণাচার্য্য অতুল্য পরাক্রমে অনীক সম্পন্ন করাতে ভীম পরাস্ত হইলেন তৎপরে সমরামুরাগী অতিবলী দ্রোণ স্বকার্য্য সাধনার্থ মহাবল প্রকাশ প্রবিক্ রাজাকে ধৃত করণোদ্যত হইয়া নৃপতির শরীর নীরাঘাতে ছিন্নভিন্ন ও মুচ্ছা পন্ন করিলেন যৃধি ষ্ঠির রথত্যাগ করত ভূমোপবেশন পূর্ব্বক শোকাবিষ্ট হইয়া উপায় চিস্তা করিতে ২ ঘটোৎকচ মহাবীরকে দেখিয়া যুদ্ধ করণাথ দূঢানুজ্ঞা দান করিলেন। হিড়িম্বানন্দন জ্যেষ্ঠতাতাজ্ঞায় নিমেষঝালাভ্যস্তরে ব্যহ ভেদ করত দৈন্য নির্ত্তারালে প্রেবিষ্ট হইলে ভদনুসরণক্রমে ভীম

প্রভৃতি ভাবৎ মহাযোগ্ধা কুরুলেন্যারগ্যচারী হয় যা সৃষ্টি প্রলয় প্রায় মহামারারস্ত করিলেন। ঘটোৎকচবীর উৎক্ট প্রভাপে তুঃশাসন পুত্র দে: ষণকে সংহত করিয়া ভজ্জনকের কবচষ্টেদ পুরঃলর বক্ষোভেদ করিলে খরশর শরীরে প্রবেশ হেতুক মোহিত হইলেন, কর্ণাশুপ্রমা অতি কোপে উগ্রমন্তি ক্ষতি করত সমিতি স্থলে উপস্থিতি মাত্রেই ভীষণভীুমতনয়ের অসহ্যবাণে প্লীড়িত ও মর্দ্যাঘাতী হইয়া রণে তঙ্গ দিলেন তদ্দ্ ষ্টে তাবদ্বাহিনী সেমানীসহ পলায়ন করিল। ভীমনন্দন স্বীয় বিক্রমে দৃঢ়গদা ধারন পূর্বাক অসংখ্য রাক্ষস বৰাথনী ও কোটি ২ কৌরব সৈন্য সংহার করত শেষে অলম্ব ওতদাত্মজ অলায়ুধকে বিষমায়ুধ প্রহার করণক নিপাত করিলেন। অনন্তর পাণ্ডাকে নিধন করত যুদ্ধস্থল হইতে দাদশ যোজনাস্তরে নিক্ষেপ করিলে বিপক্ষীয় যোজাগ্র ঐকাগ্রাচিত্তে একদা বিবিধাস্ত বর্ষণ করিতে লাগিল,ঘটোৎ কচের শরীরে শত ২ প্রক্ষেপিত বাণ শূলবদ্বি ইইয়া অজমরক্তর্যব ধারা ধারাধর বদ্ধরণী পতিতা হইতে লাগিল, তাঁহার কায়ু লোহিড वर्ष প্রাতঃ প্রভাকর প্রায় প্রদীপ্ত হইল, তাঁহার সিংহধ্বনিবৃদ্ধোর গভীর গর্জন ব্যোমাস্তাবলম্বী হইতে লাগিল। তচ্চ বলে অরাতি সমু হের শ্রবণ শক্তি রহিত লইল তিনি রাগ্রপ সাগর তরকোমান্থিত হইয়া অসীম সাহসালম্বন পূর্ব্বক বিপক্ষ বিক্ষেপিত অখিলান্ত্র নিবারণ করত কোটি ২ দৈন্য দেনাপতি হতাহত ও ত্বিদ্যোদ্ধাকে পরাভুত করিলেন। রাজা ছুর্যোধন তদবলোকনে প্রত্যুহ ব্যুহ পরিগত হইয়া শোকাকুলে ভাঁহার হৃদয় শুষ্ক ও চিন্তাজ্ঞরে কম্পিত কলেবরে অস হ্যান্তাপে বিষম গাতাগ্নি প্রজ্ঞালিত হইতে লাগিল। এমতকালে कर्न जिल्ला के अरति । अरुपी * योग मंस्रीन पूर्विक घटिं। ९कटा वटका ভেদ করিলেন তিনি ঘোরতর তিশিব্লাবৃতা তাম্সী দ্বিতীয় প্রহর সময়ে সংহার হইলেন। তাঁহার দ্বাদশ যোজন বিস্তীর্ণ দীর্ঘ কলেবর সমরস্থলে পতিত হইলে কৌরব পক্ষের বহুপত্তী মদ্দিত হইল ভগ্নিরীক্ষণে উত্য * कर्न हेस में छ धाक्यां ही खंख कार्का म निधवार्थ खंख नां शिवाहि जाने।

घटिं । कि वर्ष।

^{*} স্মরহর জয়দ্রথকে এই বর দিয়াছিলেন, যে ব্যক্তি তোমার ছিমশির ভুমিতলে নিক্ষেপ করিবে তাহরিও তৎক্ষণাৎ মুগুছেদ হইবে
এজন্য ভগবান অর্জ্জ নের প্রতি উক্তাদেশ করিলেন

দলেই হাহতোশিরছে ক্রন্দন করিতে লাগিলেন। পুত্র নিধন হেতুক ভীমের হৃদয় মধ্যে প্রচুর প্রখর শোক প্রনঃ ২ প্রবাহিত হইয়া রোদন করিতে ২ অধৈর্য্য হইলেন। পরক্ষণে শোকাভিরত ভীম রিপুরুষ বিনা भाश প্রচণ্ড চণ্ডকাপে দীপ্তিমান ছইয়া অখণ্ড প্রেজাপে স্বীয় হস্তে অজেয় গদা ধারণ পুর্বক সমস্ত রজনী রণ সাধন করিলৈন। ভাঁহার গদাঘাতে প্রতিপক্ষীয় বাহিনীগণ ও রুখীচয় সমস্ত বিভাবরী জাগরণ হেতুক রণ কাতরে ও ক্ষা তৃষ্ণায় তাঁহাদের অধরোষ্ঠ শুষ্ক হইতে नाशिन। छाँहात्रा वरुखत कर्र सीकांत्र कतियां ७ ममद्र निर्धत করত ক্রমশঃ নষ্ট হইতে লাগিলেন, তুর্দ্ধর্য তুর্য্যোধন ভুপভয়ে কম্পিত कारा ठ्यूमयूर फूत्र हुष्टे उद्योगियंत्र वात्रवामयथ रहेटनम, यर्कम्यमील ধনঞ্জয় সর্বজন সম্বোধন করতযুদ্ধ নিবৃত্তি করিলে অশেষ ক্লেশ প্রাপ্ত সমস্ত দৈন্যানী ও রাজাগণ অগণনীয় ধন্যবাদ ভাষণে তাঁহাকে বিজয়া শীর্বাদ প্রদান করিয়া নিদ্রাবিল নয়নে অচেতনে শবাকারবং পত্তিত হইলেন ত্সাধ্যে কেহ ২ ভূমিতে কেহ ২ শ্বান্নির চুর্গন্ধামোদিত স্থানে ক্রেহ্বা শ্বোপরে অঘোর নিদ্রিত হইলেন, পার্থ সমূহ খেদ সহকারে তুর্য্যোধনকে শতাধিক ধিক্কার পূর্ব্বক স্বীয় দলবল সাহিত্যে শিবিরে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। পঞ্চিমদিবস প্রত্যুষে কৃষ্ণার্জ্জুন বৈর প্রতীকারথে শংসপ্তকগণ সমীপে গমণ করিলেন। এদিকৈ স্বসমান যোদ্ধাগণের সমরে পরস্পর্পেকীয় জাতৃজ্যু পরাজ্য হইতে লাগিল, বীরত্রেষ্ঠ ভগদত্ত অসম সাহসে ভীমসহ মহাসংগ্রাম ও বহুল পাণ্ডব বাহিনী নিপাত করিলেন শেষে ভীমের প্রতি আস্তরণীদি স্থার্জনাবৃত মদোৎ কট যূথনাথ প্রচালন করাইয়া মহারোষে স্তক্তীক্ষ্ দল বাণ প্রক্ষেপণ পূর্বাক তাঁহার গদা ছিম্ম করিলের্ন, ভীম অতি কোপে ঘীলদগ্নি সমিড ধাবিত হইলে ভাগদত্তের, উদান্ত হস্কীবর চীৎকার ধনি করত ভতো থিত করিয়া তাঁহাকে বেষ্টনাথ অগ্রবর্তী হইল, ভীম ও মন্ত্রমাতণ্ডের পশ্চাৎ পদন্বয় দৃত মনঃসংযোগে তৎক্ষণা খাৱণ ও সক্ৰোধে আকৰ্ষণ করিলেন,কিন্তু করিও যথাসাক্ষথ্যেস্বপদাক্ষণ করিভেলাগিল; অবশেষে

मात्रावित ।

ভীমকে বিপাকে পতিত দেখিয়া বোজাগণ সঞ্জিত যুধিষ্ঠির অতাম্ভ ব্য মচিত্তে হাহাকার ধানি করভ,উপস্থিতানন্তর তাঁহাকে উদ্ধার করি लाम, जिनि किश्वकान विद्याम श्रेत्रश्मत महावल वीर्याधकारन कति कृष স্থলে দারুণ মৃষ্টি প্রহার করাতেই কুঞ্জরবর অসহ্যাঘাতী ও ভূীক্ত इहेंगा गंगन गाल हो कांत्र सक कब्रड ज्या इहेटड প্রস্থান করিল। नातायन जुतिक गिकिक्तम तथ हालाहेयां जनमञ्जूष ममूथवर्की इहेटन তিনি অর্জ্জুনকে দেখিয়া মেঘে বারি বর্ষণের ন্যায় বিশিখ বর্ষণ করত मिट्टे विकिथ हिंख रखीक हालारेया मिल्लम, मिख्यत वायूरवर्ग त्राथी পরে পতিত হওনোমুখ সময়ে গ্রীকৃষ্ণ অন্তির হইয়া একপার্থে স্থান্দন স্থাপন করিলেন; পরে পাথের নারাচাঘাতে করিকুম্ভ বিদীর্ণ इरेगा পতिত रहेण। जगमञ्ज उरक्तनार त्रथात्राह्न श्रुक्त नियमार्घ काल अर्ज्यान्य अकिथ जावमान वादन २ ज्नवरक्षमन किन्निया पृष् विक्राय जनस्मिन निकास दिक्षवास প্রয়োগ করিলে পাথ নিমিন্ত कृष চিস্তান্ত্রিত হইয়া ভাঁহাকে পশ্চাদ্ধাগে রাখিয়া বক্ষঃস্থলে অস্ত্র গ্রহণকরি লেন, অনস্তর বৈঞ্বাস্তের তেজ বিস্তুতেই লিগু হইলে পার্থ অপুর্বান্ধ চন্দ্র পৃষৎক বিনিযোগ করিলে কিপ্তবাণ দারা ভগদত্তের শরীর দ্বিখণ্ড হইয়া রখোপরে পতিত হইল। মহদ্রিশ্ব নিধন হৈতুক পাশুবেরা মহা নন্দিত হইলেন কিন্তু চুর্য্যোধন ভগদক্তের মৃত্যুতে নিভাস্ত শোকোপ ক্রাস্ত হইয়া চিত্তাইস্থোতায় ক্রমশঃ হতাশ হইতে লাগিলেন। চুর্বার বীর্যা দ্রাণাচার্যা ক্রোধননে রণোদ্যত হইয়া পাগুৰদের মহা ২ যোগ্রা মণকে পরাস্ত ও বহুল দৈন্য নষ্ট করিলে দামোদর প্রতারণা পূর্বাক দ্রোণকে কহিলেন " অদ্য তোমার অশ্বথামা ভীম হস্তে নিধন হই য়াছে,, দ্রোণ ইয়া শ্রবণ পূর্বকে অতিশয় বিশ্বিত হইয়া উক্ত করিলেন অমরবর প্রাপ্ত পুত্র নিধন হওয়া জুত্ব্যুসম্ভব, কিন্তু যথিষ্ঠির কহিলেই সত্য প্রত্যায়, হয় যেহেতুক দ্রোণের ইহা দৃঢ প্রতীত ছিল যে ধর্মারাজ क्रमां गृयां जायां कि दिए योगा इरेक्न ना छल्ताः जिनि जन् বাক্যোক্তি করিতে অস্বীকৃত হইলে, ভীম স্মৃতি রোমে দ্রাণকে কহি- ভরদাজপুক্র জোণের বধ।

दलन " अथथोगो निन्ध्यहे रू रहेश्चाटक जागि यथीर्थ अवभे जाकि। দ্রোণ অন্তন্ত্রাসিত হইয়া ও সিঞ্চিত নীরবশ্বিখ্যার অস্থায়িত্ব প্রয়াত সংশয়ে বিশেষ ৰূপে প্রত্যয়, না করিয়া উক্ত করিলেন, ধর্মাপ্তল কহি ছেই সত্যজ্ঞান করি। অনস্তর নারায়ন অত্যস্ত কোপিত হইয়া প্রন যুধিষ্ঠিরকে কহিলেন যদি অসভ্য কথনে নরক গমনের আশকা কর ভবে প্রকারান্তরে দ্রোণের প্রত্যয়ার্থ অশ্থামা হত কহিয়া, ইতিগজ लघूयत ऐक कतिलारे मण रहेरवक, यरर्ज्क जीम कर्ज्क पूर्वाप নের অশ্বামা নামক হস্তী ও যথার্থ হত হইয়াছে। অনস্তর 'যুধিষ্টির শ্বনঃ২ কৃষ্ণ বাক্যাল্লজ্ঞানে ভীত ও বিষাদিত হইয়া ছলতাযুক্ত সভা কথনে ও বিস্তর অধর্মজ্ঞানে সমূহ বিপদে পতিত হইয়া প্রনঃ২দ্রোণের প্রশে " অশ্বামা হত ইতিগজ লঘুস্বরে, কহিলে প্রত্রের মৃত্যু সত্য প্রত্যয়ে মহাশাকে চক্ষুঃসলিলে শরীর সিক্তানস্তর উচ্চৈঃসূত্রে ক্রন্দন করত বামকরে ধনুধারণ প্রবিক কণ্ঠ তলে স্থাপন করিলে ধনুও ণে অশ্রুপতন্ হইতে লাগিল, কুঞ্জের বাক্যে পার্থ ও দুঢ়শর সন্ধান পূর্বাক কালসপ্তভানে ধন্ত্রণ চ্ছেদন করিলে দ্রোণের কণ্ঠতল হস্তস্থ ধনুবির্দ্ধ হইয়া ঘোর যাতনায় সায়াহনি সময়ে রথোপরে পতিতহইলে ধৃষ্ট ছাসু শত্ত্বরে খড়ন লইয়া ভাঁহার সিরশ্ছেদ করাতে তুর্য্যোধন মহচ্ছোকাভি মানে সমগ্র যোদ্ধা সম্বোধনে কহিলেন এই মহাবিপদে কোনজন কি প্রকারে ইষ্টার্থোদ যুক্ত হইবেন। কর্ণ কহিলেন আমি পাণ্ডব্যাণকে অনায়াদে ধৃত করিব। ঈদৃশকালে অশ্বামা আগত হইয়া পিতৃ মৃত্যু সংবাদ শ্রবণে বিশাল শোকে প্রতিজ্ঞা করিলেন যে ধৃষ্ট ত্যুসুকে নিহত না করিয়া আর ধন্ত্রাহণ করিব না। ষষ্ঠ দিবস রাজা দুর্য্যো ধন শকুনির পরামর্শে মহাবীর কর্ণকে সেনাপতিত্বে প্রাভিষিক্ত করি लान। अयुर्वान कर्न पिरा करा भित्रिक्षान भूर्विक छ्लि कि तन क्लि নিরীক্ষণ করত উদ্যমবজল ধর ধনি তুল্য গম্ভীর স্বরে রণ্যেৎ সাহী হই লেন ভাহাতে যোদ্ধাগণ চমৎকারে গতিহীন স্থিরনেত্র রহিল। পাণ্ডব वाहिनी घोत्र : ' मःकूल म्हल ममाग्रं इरेशा गुरंक व्यवर्छ मार्कारे

ভীমসেন কুলুত দেশের নৃপতি ক্ষেমধূর্ত্তিকে গদীঘাতে হত করাতে কর্ণ সরোষে বহুতরায়াসে লক্ষ লক্ষ পাগুবদৈন্য সংশার পূর্বক নকুলকে ধৃত করিয়াও কুন্তীর বটন সারণ হইলে তাঁহাকে প্রত্যাগ করিলেন। সপ্তম দিবসে কর্ণবীর শল্যরাজাকে সার্থী পদে নিযুক্ত করিলেন,এবং দাবানল তুল্য অত্যুগ্র প্রভাপশালী কর্ণের শাণিত শর প্রক্রেপণে প্রতিপক্ষীয় সেনাবলী জাজ্ঞলামান জ্বলনে অতি শুষ্ক তৃণ পতিত ন্যায় সম্রশায়ী रहेरिक लागिल, हेडा **मगवलाकन शूर्यक युधिकित न**शिक कर्न मह রণোদ্যত হইয়া শেষে অসহনীয় শরে জর্জারিত ও মূচ্ছিত এবং পরা-জিত হই য়া শিবিরে গেলেন। রণে ভঙ্গ সৈনোরা অর্জুন সমীপে সমাগত হইয়া ভূপতির ছুদশা জ্ঞাত করাতে তিনি ভীতচিত্তে শংসপ্তকগণ ' সহ যুদ্ধ বারণ করিয়া কৃষ্ণ সাহিত্যে যুধিষ্ঠির সন্নিধি উপস্থিত হই লেন। রাজা তাঁহার বাচনিক কর্ণের অক্যাবস্থা প্রবেণে মহা জুদ্ধ হইয়া তাঁহাকে বিৰিধ ভৎসনা করত কহিলেন, 'খিক্ধিক্ অৰ্জুন অক্ষ গাণ্ডীব র্যন্তঃশর ও শ্রীকৃষ্ণ নিয়ন্তা এবং ভুবন সংহারক হরদত্ত দিব্যাস্ত্র সত্ত্বেও কর্ণ ভয়ে পলায়ন করাই বিচ্ছিত্র কার্যা হইয়াছে। শৃণুরে বর্ষর তুমি গাণ্ডীবের যোগ্য ধন্তর্ধর নহ, ইদানীং অগোণে কৃষ্ণকৈ গাণ্ডীব দেও। মধুমথন মুরারি মহারথী হউন, তুমি সারথী হও। ইত্যাদি অযোগ ছুর্মাণী শ্রবণ পূর্মক ছুর্মার পার্থ মহাক্রোধে উশর্ম্ ধবৎ প্রজ্ঞুলিত হইয়া রাজাকে খণ্ড খণ্ড করণার্থ পুনঃ পুনঃ খড় গ লইয়া খণ্ডপ্রালয় উপস্থিত क्रिलान। प्रालुक्ष अर्জन कि निका क्रा कि क्रिलान, मर्थ! क्रा छ इ ७, कमां ठ छक्र जन कि वध कर्छवा न हि। धन अग्र कि इलिन, य वाकि जामाक গাণ্ডীব পরিত্যাগ করিতে কহিবে তিনি মহাগুরু হইলেও নিতান্ত আমার বধ্য হইবেন, ইহা নিশ্চয়' প্রতিজ্ঞা আছে এবং যে জন দোষ অনবগত ত্মথচ অপমানিত বাক্য প্রয়োগ করে, শাস্ত্রান্তুসারে তাহার মর্ণই বিধেয়। যদ্যপিপেণ লজ্মন ও গুরু ছেদন উক্তোভয় কর্মেই মহানরকে গমন করি:ত হয় তবে কেন নিষেধ করেন। অনশেষে মহদ্রুখাভিমানে হস্তম্ব অসি আতা গলদেশে প্রদান করিতে প্রবর্ত্ত হইলে কৃষ্ণ সংশয়াপম

ভরদাজপুক্র ছোনের বধ।

रक्षन " अश्रथां मा निन्ध्य है रू रूरेग्नार्फ आमि यथार्थ अन्नभक आहि। দ্রোণ অন্তন্ত্রাসিত হইয়া ও সিঞ্জিত নীর্বশ্বিখ্যার অস্থায়িত্ব প্রেয় ক্ত সংশয়ে বিশেষ রূপে প্রতায়, না করিয়া উক্ত করিলেন, ধর্মাপুল্র কহি ছেই সভাজ্ঞান করি। অনন্তর নারায়ন অত্যন্ত কোপিত হইয়া পুন যুধিষ্ঠিরকে কহিলেন যদি অসভ্য ক্রংনে নরক গমনের আশকা কর ভবে প্রকারান্তরে দ্রোণের প্রত্যয়ার্থ অশ্বামা হত কহিয়া, ইতিগজ लघुत्रत ऐक कतिलारे मणा रहेरवक, यरर्फ्क जीम कर्ज्क पूर्वाभि নের অশ্বধামা নামক হস্তী ও যথার্থ হত হইয়াছে। অনস্তর যুধিষ্টির পুনঃ২ কৃষ্ণ বাক্যাল্লজ্ঞানে ভীত ও বিষাদিত হইয়া ছলতাযুক্ত সভা কথনে ও বিস্তর অধর্মজ্ঞানে সমূহ বিপদে পতিত হইয়া শ্বনঃ২ দোণের প্রশে " অশ্বামা হত ইতিগজ লঘুস্বরে, কহিলে পুলের মৃত্যু সত্য প্রতায়ে মহাশাকে চক্ষুঃসলিলে শরীর সিক্তানন্তর উচ্চৈঃস্করে ক্রন্দন করত বামকরে ধনুধারণ প্রবিক কণ্ঠ তলে স্থাপন করিলে ধনুও নে অশ্রুপতনু হইতে লাগিল, কুঞ্বের বাক্যে পার্থ ও দৃঢ়শর সন্ধান প্র্বিক কালসপ্তভানে ধনুগুণ চেচ্দন করিলে দ্রোণের কণ্ঠতল হস্তত্ত ধনুবির্দ্ধ হইয়া ঘোর যাতনায় সায়াহনি সময়ে রথোপরে পতিতহইলে ধৃষ্ট ছামু শত্তবে খড়ন লইয়া ভাঁহার সিরশ্ছেদ করাতে ছুর্য্যোধন মহচ্ছোকাভি মানে সমগ্র যোদ্ধা সম্বোধনে কহিলেন এই মহাবিপদে কোনজন কি প্রকারে ইষ্টার্যোদ যুক্ত হইবেন। কর্ণ কহিলেন আমি পাণ্ডব্যাণকে অনায়াসে ধৃত করিব। ঈদৃশকালে অশ্বথামা আগত হইয়া পিতৃ মৃত্যু সংবাদ শ্রবণে বিশাল শোকে প্রতিজ্ঞা করিলেন যে ধৃষ্ট ছামুকে নিহত না করিয়া আর ধনুপ্রহণ করিব না। ষষ্ঠ দিবস রাজা দুর্য্যো ধন শকুনির পরামর্শে মহাবীর কর্ণকে সেনাপতিত্বে প্রাতিষিক্ত করি लान। अयुर्वान कर्न पिया करा भित्रिक्षान धुर्सक ठलुप्ति तक तन क्या

নিরীক্ষণ করত উদ্যমবজ্ঞল ধর ধনি তুল্য গম্ভীর স্বরে রণ্যেৎ সাহী হই

লেন ভাহাতে যোদ্ধাগণ চমৎকারে গতিহীন স্থিরনেত্র রহিল। পাশুব

वाहिनी घोत्र : ' मःकूल म्हल ममाग्राज इरेग्रा युर्वेश व्यवर्क मार्किर

ভীমসেন কুলুত দেশের নৃপতি ক্ষেমধূর্ত্তিকে গদীঘাতে হত করাতে কর্ণ সরোষে বহুতরায়াসে লক্ষ লক্ষ পাণ্ডবদৈন্য সংশার পূর্বক নকুলকে ইত করিয়াও কুন্তীর বটন সারণ হইলে তাঁহাকে প্রত্যাগ করিলেন। সপ্তম দিবসে কর্ণবীর শল্যরাজাকে সারখী পদে নিযুক্ত করিলেন, এবং দাবানল তুল্য অত্যুগ্র প্রভাগশালী কর্ণের শাণিত শর প্রক্ষেপণে প্রতিপক্ষীয় সেনাবলী জাজ্জামান জ্বানে অতি শুষ্ক তৃণ পতিত ন্যায় সম্রশায়ী হইতে লাগিল, ইহা সমবলোকন পূর্মক যুধিষ্ঠির নপতি কর্ণ সহ রণোদ্যত হইয়া শেষে অসহনীয় শরে জর্জেরিত ও মূচ্ছিত এবং পর্গ-জিত ইইয়া শিবিরে পেলেন। রণে ভঙ্গ সৈন্যেরা অর্জুন সমীপে সমাগত হইয়া ভূপতির ঘুদশা জ্ঞাত করাতে তিনি ভীতচিত্তে শংসপ্তকর্পণ : সহ যুদ্ধ কারণ করিয়া কৃষ্ণ সাহিত্যে যুধিষ্ঠির সন্নিধি উপস্থিত হইলেন। রাজা তাঁহার কাচনিক কর্ণের অক্ষয়াবস্থা শ্রেবণে মহা জুদ্ধ হইয়া তাহাকে বিবিধ ভৎসনা করত কহিলেন, ধিক্ধিক্ অর্জুন অক্ষ গাণ্ডীব র্যন্তঃশর ও শ্রীকৃষ্ণ নিয়ন্তা এবং ভুবন সংহারক হরদত দিব্যান্ত সত্ত্বে কর্ণ ভয়ে পলায়ন করাই বিছিত্র কার্যা হইয়াছে। শুণুরে বর্ষর তুমি গাণ্ডীবের যোগ্য ধন্তর্ধর নহ, ইদানীং অগোণে কৃষ্ণকৈ গাণ্ডীব দেন্ত্র मधूमथन मुत्राति महात्थी रुछन, जूमि मात्रथी रुछ। ইত্যাদি অযোগ ছুৰ্মাণী প্ৰৰণ পূৰ্মক ছুৰ্মাৰ পাৰ্থ মহাক্ৰোধে উশৰ্ম্ ধ্বৎ প্ৰজ্ঞ লিত হইয়া রাজাকে খণ্ড খণ্ড করণার্থ পুনঃ পুনঃ খড় গ লইয়া খণ্ডপ্রলয় উপস্থিত क्रिलान। प्रांलु कृष्ठ अर्द्धन क्रिका क्रिला क्रिलान, मर्थ ! क्रांख रूउ, कमां ठ छक्र जन कि वध कर्छ्या न हि। धन अग्र कि हिलन, य वाङ जामाक গাণ্ডীব পরিত্যাগ করিতে কহিবে তিনি মহাগুরু হইলেও নিতান্ত আমার বধ্য হইবেন, ইহা নিশ্চয়' প্রতিজ্ঞা আছে এবং যে জন দোষ অনবগত অ্থাত অপমানিত বাক্য প্রয়োগ করে, শাস্ত্রাতুসারে তাহার মর্ণই বিধেয়। যদ্যপি পিণ লজ্জন ও গুরু ছেদন উক্তোভয় কর্মেই মহানরকে গगन कतिः ত হয় তবে किन निरम्ध करतन। अन्नरमस्य महाद्वर्थ जिगान হস্তম্ব অসি আতা গলদেশে প্রদান করিতে প্রবর্ত হইলে কৃষ্ণ সংশ্মাপয় মানসে তাঁহার অসি গ্রহণ করিলেন, অর্জুন কহিলেন, হে দয়াময় গোবিনা! গুরুনিন্দারূপ ধর্মবিহীন কর্মা কেন করিলাম? আপাততঃ আত্মতাতী হওয়াই উচ্ছিপ্রায়শ্চিত বিধি। কৃষ্ণ হাস্যবদনে উক্ত করি-লেন, ইহার উপায়ান্তর আছে, শাস্ত্রসমত আত্মপ্রশাংসা করীই মরণ তুল্য হয়, তদ্বেতুক বারশ্বার স্বীয় গুণাসুবাদে তব প্রতিজ্ঞায় উদ্ধার হওয়াই উচিত, অর্থাৎ গুরু গর্হণ ও তদ্ধোদ্যত এবং প্রতিজ্ঞা লজ্ঞান জন্য দেখির প্রায়শ্চিত্ত জীবিতবান্ ব্যক্তিতেই বর্ত্তে, মৃতব্যক্তির প্রতি কোন প্রায়-শিচন্ত বিধান নাই। তথন পার্থ স্থকীয় প্রশংসা করিতে লাংগিলেন। ইহ সংসারে মম তুলা গুণনিধি ও ধন্তর্ধর বীর দিতীয় নাই, কেননা আপন বাহ্বলৈ সমরে চতুর্দিক জয়ী হইয়াছি। ইত্যাদি শ্লাঘনীয় বাক্যোক্তি কর্তে সলজ্জায় ধর্মপুজের চরণে পতিত হইয়া পুনঃ পুনঃ স্থাপরাধ ক্ষমা প্রার্থনা করিতে লাগিলেন, রাজন্! আমি কলুষ কবলিত কায় প্রাপ্ত হইয়া মহাপাপযুক্ত বিগহিতকর্ম করিয়াছি, অধুনা কৃত কল্যাধরাজী মার্জনা করিতে, আজা হউক। ধর্মানুপতি কৃষ্ণের প্রবোধে অর্জুনের প্রতি প্রসন্ন হইয়া প্রীতি বচনে প্রোক্ত করিলে তিনি জ্যেষ্ঠের পদস্পশ প্রাক কর্ণ বধার্থ প্রতিজ্ঞা করিয়া রণস্থলে উপস্থিত হইলেন। নদমত প্জ সম বীর বৃকোদর ছঃশাসন শিরে গদাঘাত ও তাঁহাব রথাশ সংচূর্ণ ক্রিয়া করবাল প্রহার দারা বক্ষো বিদীর্ণ করত প্রণামুসারে কর্ণ কৌরব বিদামানে রাক্ষসমূর্ত্তিতে তাহার শোণিত পান করিলেন। কর্ণ ক্রোধমনে ভীমাদির প্রতি দৃঢ় স্থতিগ্ন শর প্রয়োগে বহু পাণ্ডবানীকিনী সংহত ও অর্জুনকে লক্ষ্য করিয়া বাণ সন্ধান করিলেন। দামোদর তচ্ছর নিবারণাসমর্থ পার্থকে রক্ষার্থ সক্ষোচিতভাবে রথাশ্বাদি ভূমিগত করি-লেন। পশ্চান্তদাণে অর্জুনের মৌলিস্থ কীরিট ছেদন ° হইয়া ধরণীতলে পতিত হই। অনন্তর শ্রীকৃষ্ণ ভূমি হইতে রথোদার করিলেন, পার্থের প্রক্রিপ্ত রুদ্রবাণ দারা কর্ণের রুথচক্র পৃথীগতা হইটো তিনি অজুন ममील मुश्र्विकाल निगिष्ठ युक्त कमाल्यार्थना कतिलन ; धनक्षत्र ठाँशत পূর্ব্য ব্যবহার স্মর্ণ পূর্ব্যক জ্বলিতাঙ্গ হইয়া সন্ধ্যাকালে লোহিতবর্ণ পট-লাছন্ন সমুজ্জুল পট সঙ্কাশ ঘোর মেঘাবলী গগণমণ্ডৱো শোভমান হইলে

বিনামুরোধে সূতীক্ মহাশর সন্ধানে কর্ণকে সুচ্ছিত করিলেন এবং বাবে বাবে তাঁহার সর্বাদ সমৃত হইয়া অসহা যাত্লায় পতিত ও ভূমিশায়ী इटेलन। मृह्द अयाज मम्भामनीय तालामार्गे महावीत कर्लन गृह्या**उ** ছুর্য্যোধন বিষম শোকগহনে পতিত ও হা কর্ণ! সূ কর্ণ! ইত্যুক্তা বছবিধ विलिशिত वांका अर्थिया इटेलिन। हो कर्ग! त्रम्बल मखनां खत न्रांग বৃচ্ছন্দে প্রবিচরণ করত অরাতি পক্ষীয় প্রচুর দৈন্য সংক্ষম করিয়া অস্মৎ मश्रक्ष একেবারে বিচ্ছেদ পরিচ্ছেদ ধারণ পূর্মক স্বর্গ নিলয়ে প্রয়াণ করি-ला, मन्त्रेि जागि मर्काजाजात जातीमाम रहेलाम । जरम मित्र নৃশংস শ্বভাবশালী ছুর্য্যোধন মদ্রাধিপতি শল্যকে সেনাপতি পদে নিযুক্ত ক্রিয়া সমরস্থলে উপস্থিত হইলেন। প্রভাতে পাওবেরাও যোদ্ধাব্যুহ সহ রণে প্রবর্ত্ত ও শল্যের তিগ্নাস্তে ব্যথিত হইয়া যুদ্ধাসমর্থ প্রযুক্ত শ্রীকৃষ্ণ আদেশে নিতা হাট ভীমাদি যোদ্ধাগণ সমবেত হইয়া অপরিদীম পরা-ক্রমে মহা মহা বাণ সন্ধান পূর্বাক শল্যকে নিজ্পীড়ন করিলেন, নারামণ यूधिष्ठित्रक कि इंडलन, এই সময়ে উহাকে ঝটিড়ি नघे करा। तांका विषा-দিত হইয়া ভাবিলেন, যে বাবে পীড়িত ও বিকারিত ভাবাপন্ন মাতুলকে अन्। एत वथ कर्ता कर्नाठ कर्न्डवा नरह, किन्छ नचे ना क्रिलिंड मिष करें এবং কুষ্ণও প্রকৃষ্টরূপে স্পষ্টই রুষ্ট হইবেন, এমতকালে বিশ্ব হৈতুক কুষের পুনঃ পুনঃ প্রত্যাদেশে শেষে প্রথরতর ক্র নিকর পরিবৃত উদ্য-দারণ প্রচণ্ড প্রভাকরোদীপ্ত মধ্যাহ্নকালে রাজা যুধিষ্ঠির শক্তি শেলা-ঘাতে শল্যকে নিপাত করিলেন। কুরুরাজা এতাদৃশ অন্যায় সম্রে একে-বারে দৃঢ়রূপে জীবনাশা ত্যাগ করত শোকস্লিলাদ্র নয়নে নিতান্ত নির্কিণ্ণ হইলেন। শকুনি সহ সহদেবের মহারণে উভয়েই উভয়ের শরে জর্জরিত শরীর হইয়া পতিত ও মৃচ্ছিত হইলেন, কিঞ্ছিংকালাতায়ে সহদেব সম্বিত প্রাপ্ত হইয়া শকুনির কেশার্যণ পূর্বাক পশু সদৃশ ধৃত করিলেন, তখ্য তিনি হতজান, কম্পিত কায়, একান্ত অমুপায় হইয়া

* ধৃতরাষ্ট্র, সঞ্জয় প্রমুখাৎ শুনিলেন ছুর্য্যোধন পলে একাদশ কোটি রথ ও তিন কোটি হস্তী ও দিপত্ম অশ্ব ও তিন কোটি পদাতিক। পাঞ্জব পক্ষে এক সহস্র হস্তী, কক্ষ পদাতিক বর্ত্ত্যান আছে। সচকিতনেতে চতুর্দিপকলোকন পুরঃসর শুক্তপায় রহিলেন। সহদেব ठाँशत जक्तीए। अन्यक्तिपुरक कूर्णनामि श्र्वाजनीय। प्रस्त प्रथ ममूर মারণ করত শকুনির দপোপশান্ত্যর্থে আদে হস্তদ্বের অসুলার্রধি বাছমূল পর্যান্ত খণ্ড খণ্ড পূর্বাক পশ্চাচ্ছিরশ্ছেদ করিয়া প্রতিজ্ঞা পূর্ণ করিলেন, তিনি মৃত্যুশ্যায় শয়িত রহিলেন, অতএব সময়প্রাপ্ত হইলে ধর্মাধর্ম প্রযুক্ত স্বকর্ম ফলভোগ অবশাই হয়। অনন্তর পাণ্ডবের। রণে ভঙ্গ কুর সৈন্যগণের পলায়নকালে যে যথায় যাহাকে সমুখে প্রাপ্ত হইলেন তাহা-কেই নিপ্রতি করিয়া জয় জয় শব্দে সমরজয়ী হইলেন। যেমন গুঁজারণ্য মধ্যে দাবানল প্রজ্জুলিত হইয়া বন দক্ষ করে ও যেমন সংহাদ্ধি অগাধ জল গোষণ করে, তদ্রাপ সিংহ সম স্বভাব কোপন তেজস্বী কৌরবের দল बल शांख्य कर्ज् क 'साधिष इहेल। पूर्याधन এই সমুদায় विश्वायकत ব্যাপার বিলোকন করত উৎকান্তঃকরণে অশ্ব হইতে অক্সাৎ ভূম্যবতরণ পূর্মক বিবিক্তবত্মে পদব্রক্তি পলায়ন করিলেন। পথিমধ্যে সঞ্জয় সহ চলিফুন্পতির দৈবাৎ সাক্ষাৎ হইলে নানা কথনানন্তর, তাহাকে বিদায় দিলেন। বিয়োগভাজন তুর্যোধন-কৃত কুষীদ সম্পদাদির প্রতি বিরাগ প্রকাশ পূর্বজ অপার সমুদ্রের বিষম তরঙ্গোল্লন্ফিত ফেণিল ফুল্লসলিলে শতিত হুইয়া বিশ্বলচিত্তে দৈপায়ন হুদান্তরে গদা প্রহারে জলবিদারণ করত প্রবেশ করিলেন। রাজবিশ্রের সঞ্য় বিমুগ্ধ হইয়া পরাবৃত্তিকালে कुल जिनी क्उवमा नर नाकार रहेल नमस वार्डी वाक कविलान, ভাঁহারা ঐ দহে উপস্থিত হইয়া কৌরবাদর্শনে উচ্চৈঃস্বরে বিলাপ করিতে लाशित्वन, जुलांव उष्ठाना लक्षानसङ् स्वर्ण काविमा প্राथ स्नानमुर्था-ত্তোলন পূর্বক তাহারদের প্রমুখাৎ রণ শেষ বার্তা প্রবণ করিলেন। সঞ্জয় হস্তিনায় উপনীত হইয়া ধৃতরাষ্ট্র সমীপে ছর্য্যোধনের পলায়ন ও রাষ্ট্রোপদ্রত বার্ত্তা জ্ঞাপন করিলে একদা সর্ব্বা ছঃখোপস্থিত হেতুক সঞ্জয়-क कि रिलन, रागन शक्त होन शकी उजनहीन भीन, श्रुग्हीन (पर, फल हीन तृक, उफाপ প্রাণহীন মম দেহ পতন প্রায় হইল। হায়! হায়! পঞ্চতত্ত্ব ধারণাধীন এতদ্রাপ মহৎকর্ষেত্র কেন পঞ্জাতাস প্রকাশ হয় না, এ কি কঠিন কায় ধারণ হইয়াছিল। হা পুত্রগণ! শোকান্ট সন্তাপিনী

শকুনি বশ্ব।

অবোধনী কামিনী বধূনন ধানাথিনী হইয়া কি প্রকারেই বা প্রানধারন করিবেন? হে সঞ্জয়! আর যে ক্ষনিবার্য্য শোক সুহ্য হয় না, হৃদয়ালয়ে কি বিষমাগ্নিই প্রজ্বলিত হইতেছে এবং অমূত্ত হয় আমার গ্রহবৈশুনা প্রযুক্ত রাহ্যপ্রস্ত স্থাংশু বছ্ণোংশু তনয় কুর্ত্ত ক কুরুকুল করিলত প্রযুক্ত রাহ্যপ্রস্ত স্থাংশু বছণোংশু তনয় কুর্ত্ত ক কুরুকুল করিলত প্রযুক্ত রাহ্যপ্রস্ত স্থাংশু বললে কলা প্রদান কিয়া ঘোরতর তিমিরাবৃত ক্রিয়ারে, অত্এব ইদানীং অনলে কলা প্রদান কিয়া ঘোরতর তিমিরাবৃত ক্রিয়ারণাস্ত্রের প্রবেশ করাই মৎপক্ষে শ্রেয়ার্মর হইল। অম্বরাজের নিবিছারণাস্ত্রের প্রবেশ করাই মৎপক্ষে শ্রেয়ার্মর হইল। অম্বরাজের বিলপিত বাক্য প্রবেশিত্র সঞ্জয় কহিলেন " মুর্যোধন মুক্তমভাবে ও প্রবিবেলনা সঙ্কল্লে নিভর করাতেই তাবন্নই হইল।" ইতি সারাবল্যাং তৃতীয়প্রিছেদঃ।

পাওবেরা সংগ্রাম সমাপ্ত পূর্বক রণগুপ্ত মহীপালের উদ্দেশার্থে হস্তিনা প্রভৃতি নানা স্থানে দূত প্রেরণ করিলেন। চরচয় দূরাদূর গমন পুরঃসর স্ক্রাম্ম্ক্রারপে ইতস্ততোমুসন্ধানেও কৃতকার্য্য হইল না, ভীমের তোষণ হেতুক মূগয়ার্থে প্রেরিত ব্যাধগণের প্রমুখাৎ কুরুক্তের পূর্বাংশে দ্বৈপায়ন হুদে ছুর্য্যোধনের অবস্থিতি বার্ত্তা প্রবর্ণেতির পাণ্ড বেরা সদৈন্যে তথায় উপস্থিত হইলেন। ইতিপূর্বে দ্রোণী কুপ কৃতবর্মা को तंव मूल मिक इडे या की मृष्ड मार्ज श्रम यू का माधन करित्वन ज्या जान-বিষ্ট ছিলেন, তাঁহারা দূর হইতে কটকের ভীষণ নিনাদ ও বিবিধ व्राम्तानाम खनिया প্রস্থান করিলেন, ছুর্য্যোধন বার্যাবাস্তরে প্রবেশ করাতে ধর্মাত্মজ ভূপাল কৃষ্ণাদেশৈ তৎপ্রতি কটুবাণী প্রয়োগ করিতে লাগিলেন। তৎপ্রত্বা স্বধর্মত্যাগী কৌরব উপরত স্পৃহ হইয়াও ধর্মের দর্পিত বাক্যে মর্মাব্যথা পাইয়া পৃথিবী নিজ্পাণ্ডবা কুর্ণাশয়ে হেমগিরি সদৃশ দীপামান শ্রীরে স্থ্রণ খচিত লৌহ গঠিত কঠিন গদা ধারণ পুর্বক जुक्ता क क विषाद कत्र रेमनाक श्रवादाशम नीता जा रहेर उथान করিলে ভাঁহার কর শোভাকর প্রদীপ্ত প্রভাকর বন্মহামুদ্ধার দৃষ্টি পুরঃ-সর পাওবেরা অত্যন্ত সশঙ্ক হইলেন। অপর্যাপ্ত বল রক্ষিত কৌরব রাজেন্দ্র ভীম সহ গদাযুদ্ধ পণ করত মহাক্রোধে এক শৃঞ্জ পর্কতোপম দণ্ডায়মান হইলেন। ভীমও আঠ সাহসে বহুক্ষণ যুদ্ধ করাতে ছুর্য্যোধন जीम मरुक मरान कर्नामाय भूतामित लम्क भूनान भूतिक छेथिछ जीम कर्ज्क छूर्स्याधरमत छेक दक ।

হইবামাত্রেই ভীম শ্রীনাথের ইঙ্গিতোপদেশে কৌর বৈর উরুদেশে বজু সম গদা প্রহার করিলে তিনি গুরুতরাঘাতী হইয়া ভূণি পতিত হইলেন। শাস্ত্র নিষিদ্ধ নাভির অধঃস্থলে গদা প্রহার হেতুক নানা ততীর্থপর্যাটক বলদেব ভীমের প্রতি অতি কোপিত হইলে কৃষ্ণের প্রবোধে ক্রোধ সম্বরণ পূর্বাক তথা ছইতে প্রস্থান করিলেন। ভীম কুরুরাজের মস্তকোপরে বাম পদ প্রহার করাতে শিরোমণি ভগ্ন ও ভূমাংপ্লুত হইতে, লাগিলেন ব তদ্দে যুধিষ্ঠির ভীমকে বহু তিরক্ষার করত ভ্রাতৃ বধতাপে রোদন করিতে করিতে বেলাবসানে স্বলৈন্য রথী সমবায় সঙ্গে লইয়া শিবিরে গেলেন*! অনত্তর কুপ, অশ্বত্থামা, কৃতবর্দ্মা ঘোরাজকার নিশাকালে ছুর্য্যাপ্তন সহ সন্মিলিত হইয়া নৃপতির উরুভঙ্গ দৃষ্টি পূর্বাক শোচিত হইলেন। জেণী পাণ্ডব নাশার্থ প্রতিজ্ঞাত হইলে কৌরব তাঁহাকে সৈন্যাপত্যে নিযুক্ত করি-লেন। প্রাগুক্ত তিন বীর সেই ঘোরা রজনীতেই পাণ্ডব শিবির বহির্দারে উপস্থিত হুইলে কুপাচার্য্য, ভাগিনেয় দ্রোণীকে কহিলেন, পাণ্ডব পক্ষীয় নৈন্যসামন্তাদি যুদ্ধ পরিশ্রমে স্থানিদাবস্থায় আছে, এক্ষণে তাহাদিগকে নষ্ট করা কর্ত্তব্য নহে, দেখ ছুর্য্যোধন ছুর্মতি বশগা হইয়া অসৎপথে প্রদার্পণ পূর্কক বিলক্ষণরূপে তৎপ্রতিফল পাইয়াছেন, অতএব সৎপস্থা-ব্রলম্বী হইয়ো বৈপরীত্য স্পৃহাতে উপরতি হও। দ্রোণী তাঁহার প্রতি-বোধিত বাক্যাবজ্ঞা করত দার-রক্ষক, মহাদেবের সমীপে স্তুতিমিনতি পূর্বাক দারমুক্ত প্রার্থনা করাতে তিনি অস্বীকৃত হইলে তৎপ্রতি বায়ব্যা-স্ত্রাদি বর্ষণ করিতে করিতে তুণশূন্য হইল, তথাচ ভবভয় ভীত পরতাতা ভগবন্ ভূতেশ ভীতিযুক্ত হইলেন না, স্নতরাং দ্রোণ স্নত সবিশ্বয়ে তাঁহার পরিচয় জিজ্ঞাসা করাতে শিব স্বরূপতঃ বাক্যোক্ত করিলেন, দ্রোণী শঙ্কর পূজা পূর্বাক শিবের হস্তস্থ অসি ও ন্বারমুক্তি পাইলে শিবি-রান্তরে প্রবেশ করিয়া আদে খৃষ্টছামুকে বধ, পশ্চাৎ পাণ্ডব ভ্রমে দ্রো-পদীর পঞ্চপুত্রের শিরশ্চিন্ন করত অন্যান্য তাবৎ যোদা ও নৈন্যগণকে নিপাত পুরঃসর ছুর্য্যোধন সমীপে আগত হইয়া ঐ পঞ্চ শিশুর শির

* রণ সমাপ্তে কৃষ্ণ সাত্যকী সহ পাণ্ডবেরা রাত্রিযোগে হস্তিনায় গমন করিয়াছিলেন।

ममर्भन कतित्लम, ताक्रा महाहर्ष छीभनीत विजीय शूख्वत जीमाकृष्ठि गूछ ভীম জ্ঞানে করচাপে ভিলবৎ চূর্ণ করিয়া ভাবিলেন, এ কখন ব্কোদরের मुख नट्ट, अन्रत ठेजूर्यस्क जनायाम ज्य क्रिया किटलन, द्ध खोिन! अक भा खरवत वह मुख कथन नरह; डाँहाता क्रीविज आहिन, হা! পাণ্ডव সন্তানদিগকে नचे করিয়া कि অকার্যাই করিলা, হা! কুরু কুলে জল পিও দিতে কি একজনকেও রাখিলা না? কুরু পাওব উভয় কুলই নির্মংশ হইল। ইত্যুক্তি করত বহু বিলাপে অধৈর্য্য হইয়া হর্ষ বিষাদে নশ্বর শরীর পরিত্যাগ করিলেন। পরদিন প্রত্যুষে অশ্বখামা কৃপ কৃতবর্গমা বীরত্রয় প্রাণভয়ে নগরাভিমুখে গমন করিলেন। পাণ্ডবপক্ষীয় शृक्षेष्ठ) ये गांत्र योगिनी एउँ एको भीत विषय मरहा तका लि भव मधा লুকায়িত ছিলেন, তিনিও প্রাতঃকালে হস্তিনায় উপস্থিত হইয়া যুধিষ্ঠি-রাদির সমীপে যুদ্ধবার্ত্তা বিজ্ঞাপন করিলে শ্রীপতি সাত্যকী সাহিত্যে পাওবেরা সশিবিরে আগত হইয়া মৃত পুলাদি তথা ধৃউছাম বিরাট , নৃপতীত্যাদির পতিত কায় দৃষ্ট্যনন্তর মহা বিষাদে ক্রুদন করিতে লাগি-লেন। পুজাদির শোকে ধৈর্যাহীনা দ্রোপদীর বাক্যে বন্ধ হইয়া ভীমসেন অশ্বামার মুকুট ছেদনার্থে প্রতিজ্ঞা পূর্বাক' যুধিষ্ঠিরের তাদেশে নকুলকে সার্থি করিয়া যুদ্ধতাতা করিলেন, পশ্চাৎ জীহরি সহ রাজা সদৈন্য वाामालाम भगन পूर्यक भनामिত छोगीक मात्रगर्थ छम्यूक- इडे. नन। দ্রোণস্থত সভয়ে ভীমের প্রতি ঈষিকাস্ত্র পরিত্যাগ করিলে কৃষ্ণের উপ দেশে পার্যন্ত ঐ প্রলয়ানল প্রায় বাণ ব্যর্থ করণার্থ ঝটিতি সম্বরণান্ত্র প্রাগে করিলেন। উভয়ের মহাস্তে নারদ ব্যাস অধিষ্ঠান পূর্বক যুদ্ধ ক্ষান্তি করণ অমুষতি দিলে বৈজ্ঞানিক অজ্জুন স্বীয়ান্ত বারণ করিলেন। দ্রেণী কহিলেন, আমার অনিবার্য্যান্ত পাণ্ডবনাশ ব্যতীত প্রত্যাবর্ত্তন হইবেক না, অতএব মম বাণে উত্তরার গর্ভস্থ পুত্র মন্ত হউক। পরি-খোষে ব্যাসের উপদেশে অশ্বতামা স্বমস্তক মণি ছেদন পূর্মক পার্থকে দিলে নিজীক্তাপরাধে যাবজ্জীবন শিরঃপীড়ায় বড় কন্ট পাইয়া অন্থির চিত্তে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন এবং তাঁহার ঈষিকান্ত্র উত্তরার গর্ভে প্রবেশ পুর্ম্মক অন্তরাপতা নম্ভ হইলে একিষ্ণ তদন্তরে উপক্রাম্ভ হইয়া পুনর্গর্ভ জীবিত করিলেন। এই প্রকারে উনবিংশতি দিবদে ঘন রস করণক ছতাশন নিবৃত্তিরৎ অস্ত্র বর্ষণ শান্তি হইল। অনন্তর ব্যাস নারদ उ किक्छ मह भाउद्योग यभिविद्य भगन कविद्या ग्रंकोमत जीवे শিরোমণি দ্রে প্রীকে দিলে তাঁহার পরিতাপ দূর হইল। অফীদশ দিবস পর্যান্ত কুরুকেত্রের যুদ্ধে ধ্র্যোধন হত হইলে সঞ্চয় আদান্ত সমন্ত বৃত্তান্ত शृज्यों में मीरिश शाक करितल श्रुटकार मृजूरिक ल्यांक विश्व इंडरना । অনন্তর গান্ধারী প্রভৃতি অন্তঃপুরবাসিনী তাবনারী সহ ধৃতরাই কুর-किनीय युक्त इर्टन भगम कतिर्देशन। तिष्ठमहिनागन य य भिष्ठि शुष्टापित मृडलिश कर्मान जीविष्ठाः इंदेलन धेवः जीश्तरात्र कन्नम्भान मिन्यिमिन्यां इंडेट स्थित, क्रिमकार्त भाकमेख नामादी भवीता!-বৃত ভয়ক্ষর সমরস্থল দৃষ্টান্তর বরাঞ্জপোপেত ছুর্যোধনের মৃতকায় বি-লোকনে রোদন করত কহিলেন, দেখ কৃষ্ণ! ঐ রাজা ছুয্যোধন সমরশায়ি হইয়াছেন, যিনি স্থানিশ্বিত অত্যুক্ত হেমপর্যান্ধেপিরি যূথী প্রভৃতি পুষ্প বিকীরিত ভূক্ষফেশ নিভাশযাগ্র শয়ন করিতেন, অদ্য সেই তমু খুলায় ধুষরিত ও শোণিত শোভিত হইল। আহা! মরি মরি । মহা প্রস্থ পুজ্র একবার সুষুপ্তি ত্যাগ করত ভীম সহ সুদ্ধ কর, তোসার সেই স্থাদর স্মেরানন দৃষ্টি করি। অনন্তর শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাকে সান্ত্রনা করত বিস্তর প্র বোধ দিলেন, শেষে গান্ধারী তাঁহার পাক্ষিকতাও চতুরতা প্রতিপন্ন করিয়া অতি থেদে অভিশন্সতি দিলেন "যে প্রকার আমার অন্তর্দাহ হইতেছে তদ্রপ ভোমারও ছুরবস্থা হইবে, অর্থাৎ জ্ঞাতি কর্ত্ত যছুবংশ নিপাত ইইবে" গ্রিহরি অলজ্যা সতীর বাকো খেদিত ও নিতাম্ভ ব্রীড়াব-লখী হইয়া নিজ মায়া দারা গান্ধারীর শোক মোচন পূর্বক অন্তর্মাজার প্রতি, যুদ্ধে হত পতিত ব্যক্তিগণের দাহাদির উপদেশ দিলে তিনি তৎ-কার্য্য সাধনার্ধ যুধিষ্ঠিরকে অন্তুর্গতি করিলেন। ধর্মপুত্র উভয় পক্ষের মৃত সঞ্জন কুটুম্ব নিমন্ত্রিত ভূপতি প্রভৃতি ও সৈন্য সেনাপতি তাবজ্জনের শরীর সংকার করত অন্তোষ্টি ক্রিয়াদি সম্পন্ন করিয়া ঐক্ফ সহ রথারো-হণ পূর্বাক শুভক্ষণে হস্তিনায় পুবেশ ক্রিলেন। মহারাজা ফুর্ঘিষ্ঠির রাজ-थानी उ कि ग्रिकियम अविश्वि शूर्यक कूर कि जी गर्भा मर्भार भवागा।

क्विनीत निद्रामिनिष्क्रममार्थ युक्त।

গত ভীষা শান্ত নধবীর সমীপে গমন করিয়া মনোছঃখে অন্থির হইবেন, তিনি পৌলাদির মুখাবলোকনে মহানন্দিত সুইয়া নানা প্রকার যোগ কথন পুরঃসর পূর্বা নির্বান্ধ সহকারে মাঘীয় সিতাইটমীতে ধ্যানযোগে নব জলধর রুচি শ্রীমন্নারায়ণ নিরীক্ষণ করত স্বীয় শরীর পরিত্যাগ পূর্মক দিব্যরথে স্বর্গপুরে প্রস্থান করিলেন, তদীক্ষণে যুধিষ্ঠিরণদি ক্রন্দন করাতে ু ব্যাসদেব তাঁহারদিগকে সান্ত্না করিলেম। রাজা যুধিষ্ঠির তীষোর শরীর ভস্ম করিয়া সহোদর ও জ্ঞাতি প্রভৃতির বধ প্রায়শ্চিত্তার্থে অশ্ব-মেধ মহাযজ্ঞ সম্পন্ন করত ভাতৃগণ সহ সসাগরা পৃথীপালন ও একাধি-পত্য-রূপে ৩৬ বর্ষ রাজত্ব করিয়া অজ্জুনের পৌত্র পরীক্ষিতকে হস্তি-নায় রাজ্যভার দিলেন এবং শ্রীকৃষ্ণের প্রপৌত্র যতুবংশের শেষ অনিরুদ্ধ তনয় বৃষ্ণিবংশধর বজানামক এক ব্যক্তিকে মথুরাপুরী হইতে সত্রে আনাইয়া কৃষ্ণের উপকার স্মারণ পূর্বাক স্বীয় কৃত ইন্দ্রপ্রস্থনগরে ভাঁহাকে রাজ্যভার দিয়া অতুল বিভবাদির প্রতি বীত্তর্গন প্রকাশ করত পঞ্চলাতা দ্রোপদী সহ হিসালয়ের শিলাময় পথোতীর্ণ হইয়া শিখরপর্যান্ত বেগে গমন করিতে করিতে, অকস্মাৎ যোগুলুফ হেতুক উর্দ্ধ হইতে আদে দ্রোপদী পরে সহদেব, নকুল, অজুন ধরাতলে পতিত ও হত হইলেন। অনন্তর সোমেশ্বর পর্বাভান্তরে রেবানদীর উত্তরে রত্নময় স্কুন্দর গিরি দর্শন ও সোমেশ্বর শিবাচ্চ না পূর্বাক উদ্ধাগনন করিতে করিতে স্থশীতল মহাহিমানিতে ভিদামান হইয়া ভীম অধঃপতিত ও মৃত হইলেন; তছ্ন-ত্তরাস্যে সৌগন্ধী গন্ধমাদন পর্বতে একাকী ধর্মারাজ গমন পূর্বক অপূর্ব্ব মরকতময় মহেশ-লিঙ্গ পূজা করিয়া কিয়দূরে কিন্নরপুরী ও তছত্তরৈ ১৪ সহস্র শিবলিঙ্গ স্থাপিত লিঙ্গালয় গিরিতে বৈতরণী সরিন্নীর পার হইয়া বৃক্ষমূলে উপবেশন ও বিশ্রোগ করত স্বর্গ দার দর্শন করিলেন, তথা হই-তে এক যোজনান্তর স্বর্গপুর অবশিষ্ট রহিল। যুধিষ্ঠির স্বর্গ দারে গমন করিলে দারিমুখাৎ সংবাদ পাইয়া ইন্দ্র বিপ্ররূপে ও ধর্ম কুরুর মূর্ত্তিতে ছলনা করিয়া তাঁহার ধর্ম ও দয়ালুতা ব্যবহার দুষ্টে তুক্ত হইলেন। তৎ-পরে রাজা ইন্সালয়ে গমনোত্তর দিব্য প্রজ্পক রথারোহণ করিলে মাতুলী… मज्द तथ ठालाहे या दिवकू केष एम छेलनी छ इहे जन। युधि छित छथा य

ব্রহ্মলোক, কৈলাশপুরী, বিষ্ণুধাম দর্শনামনন্তর অন্ধাকারময় যমাধিকৃত দক্ষিণভাগে থমন পুরঃ ব কিছুই দেখিতে না পাইয়া হতজ্ঞানী হইলেন। স্থাপ্ত ভীষাদি ভাঁছাকে সন্তাযণ করিতে লাগিলেন। তথন ধর্মাজ নরক দর্শনের কারণ জিজ্ঞাসিলে শ্রীকৃষ্ণ উত্তর করিলেন যে "দ্রোণ বধার্থে অভিমন্তাকে প্রেরণ করাতেই গুরুবধ পাতকে যমালয় দর্শন করিলা" (কিন্তু জনমেজ্যের প্রশ্নে বৈশন্পায়ন মূনি কহেন যে "অশ্বত্থামা হত, ইতি গজ," লঘুস্বরে উক্ত করাতেই গজ শব্দ দ্রোণের কর্ণগোচর না হইয়া স্বীয় পুজের মৃত্যুজ্ঞানে মহাশোকে রণে প্রাণ সমর্পণ করেন। সেই মিথ্যাবাক্য কথন পাপে যুধিন্ঠিরের নরক দর্শন হইল) পরে ধর্মানন্দন কৃষ্ণাজ্ঞায় গরুভারত হইয়া শ্বেতদ্বীপন্থ সরোবরে সান তর্পণ করত অক্ষছায়া নিমেষ রহিত দেবশরীর প্রাপ্তানন্তর তথা হইতে নারায়ণ দ্র্মীপে উপনীত হইলে অন্টাদশাক্ষোহিনী সেনা সেনানী ও ভীম্ম দ্রোধনাদি মহাত্মাগণ তথা জ্ঞাতি বন্ধু কুটুম্ব ও ভীমার্জুন প্রভৃতিকে দর্শন করত অপারানন্দে নিত্য স্থা হইলেন।

মহারাজা দুর্যোধন দৃঢ় প্রতিজ্ঞা পূর্ব্বক দুষ্টমন্ত্রী শক্নির কুমন্ত্রণায়
যৎসামান্য বিষয় প্রদানে অস্থীকৃত হইয়া পাণ্ডব সহ ব্যতিহার সংগ্রাম
করণ বিষয়ক অবিবেচনীয় সঙ্কল্ল যাবজ্জীবনপর্যান্ত ত্যাগ না করিয়া
যেমন অবোধ পতঙ্গ দীপ-শিখার নিকটে যাইতে উদ্যোগ করে এবং
সমাগ্রপে তাড়িত হইলেও যাবচ্ছিখায় পতিত হইয়া বিনফ না হয় তাবৎ
কাল পূনঃ পুনঃ পতনোমুখ হইতে চেন্টা করে, তদ্রুপ তিনি আসম্বর্গালে
বিপরীতবুদ্ধিতে অজ্ঞান পতঙ্গবৎ আত্ম পত্তনার্থ উদ্যোগ পূর্ব্বক যুদ্ধ
করিয়া ভূরি ভূরি ক্ষত্রিয় রাজকুল সহ একেবারে নিপাত হইলেন। যেমন
উষ্ণরশ্মি মলোদাম দ্যুতি ধারণ পুর্ক্তসর চরমক্ষ্যাভূদ্যাত হইলে দর্শোদয়
যামিনী ঘোর তমিআচ্ছনা হয়, তদ্রুপ দুর্যোধন বিহীনে হস্তিনাপুরী
অস্ক্ষকার্ময়ী ও পতিহীনা কামিন্যাবৃত্য হইল।

কলিতে প্রচলিত লক্ষ্ণ শ্লোক যুদ্ধানহাতারতের লিখরামুসারে বোধ হয় দাপরযুগের শেষকালেই যুধিষ্ঠির স্বর্গপুরে গমন করেন, তৎপরে পরীক্ষিত অবধি ক্ষেমকপর্যান্ত ২৮ জন পাণ্ডুবংশেরে রাজত্বে কলির

১৮১२ वर्ष गठ रुष, जल्लात नन्मवर्गीय विभावम अविधि ५३ , शूक्र स लक्ष-मांडे वर्ष ও গোত गवर्गीय वीतवाङ जाविष जानिलाल गांख ३० छाउन ४०० वर्षीय त्रांजञ्ज (भष इय । किन्त २७५७ वृत्यं क्षींज्य युक्तमञ श्रामंत्र कहत्वन, তম্প এই যে "প্রতাক্ষাত্মিতি উপনিতি শাক্রপ চুতুর্বিধ প্রামাণ ও ধর্মাধর্ম পরব্রমাদি অনজীকার অথচ ঐ সত্তল বিষয়ের অঙ্গীভূডা-खिक गडीमहिख, नांखिक गड अभिक्ष' आफि शूर्खभक नेश्वर्यानोंखि, श्वावा का का नि मृश्विवा रहेरा हा, जिस्तीकर्ध, अवदीक, भृथिवाा-দির উৎপাদক একমাত্র ঈশ্বর অবশাই আছেন, তিনি এই জগতের রক্ষা कर्छ। ८ ठजूर्मम जुरागत मृजनकर्छ। এवर वस्त्रगांवरे जाराज अधिवाम করে ও প্রলয়াবস্থাতে জীবনিকায় তাঁহাতে অধিগমন করিবেক। শ্রুতিঃ যাহাতে উৎপত্তি, স্থিতি, লয়, তিনিই জগদীশার। শ্রীমন্তাগবতে তিনিই সকলের প্রকাশক, ভাঁহার প্রকাশক কেহই নাই, সর্ব্বজীবের হৃৎপুওরীক মধ্যে কারণরূপে আছেন। স্বরূপতস্তু পর্মেশ্বরের সদ্রুপ হইতে এই,বিশ্ব কার্য্যের ক্রমান্বয়ে রচনা হয়, স্থতরাং তদ্যতীত কার্য্যোৎপত্তির সম্ভব হয় ना, अञ्मान, किंछि मकर्छ्को कार्याञ्च रुष्ट्रक घटोषित नाग्य अर्था९ रामन चिछामि जना शर्मार्थ, এতদ্রগ কিতিও কর্ত্ত জন্যা, বিদ্তু आञ्चमामित তাহাতে কোন কর্ত্ব সম্রব নাই, এই হেতুক তৎকর্তে ঈশ্বর সিদ্ধি. इहेल। मगुत्रवश्मीय धुत्रकात अविध ताक्षणाल अर्यात अक्टन अभि वर्ष তৎপরে পার্বতীয় শকাদিতা ১৪ বর্ষ দিল্লীতে সামাজ। করেন। এইরূপে কলির আরম্ভাবধি ৩০৪৪ টের্ম যুধিষ্ঠিরের শকের নিবৃত্তি হইল।

ইতি সারাবল্যাং প্রথম খণ্ডে চতুর্থ পরিচ্ছেদ⁸।

স্বধ্যপরায়ণ গুণিগণ সমীপে করপুটে নি দেন এই যে স্থারি মহাত্রা জান এলিয়ট, ডি্ক্সওয়াটর বেথুন সাহেব স্বদেশীর প্রাচীনে তিহাসালোচনার্থে বালকগণের মনে যে উৎসাহ প্রদান করেন তদন্ত্রসারে মহাভারতাদি গ্রন্থাবলম্বন পূর্মক এই সারাবলি প্রস্ততাথে প্রবৃত্ত হই। কমিল্যা,
জিলাস্থ্য স্থিতি কালেক্টর মেং এচ, সি, সেটকাফ ও মাজিইটেই,
সাঙ্জিন ও এচ, জি, লেকর সাহেব ও বাবু গোবিন্দচক্র বস্থ ও অমৃতলাল
গুপ্ত ও ক্ষণ্টক্র রায় এবং জন্যান্য মহাত্রাগণের সমূহোদ্যোগে ও বিশেষ
অর্থ ও ক্ষণ্টক্র রায় এবং জন্যান্য মহাত্রাগণের সমূহোদ্যোগে ও বিশেষ
অর্থ সাহায্যে এই পুস্তক মুদ্রিতার্থে চক্রিকা যক্রালয়ে পাঠান যায়, পরিশেষে জামার প্রীভিতাবস্থা ও জন্যান্য কারণে মুদ্রিতারম্ভ হইয়াও স্থাতি
ছিল। সংপ্রতি জগদীশ্বর প্রেশাদাৎ তৎকার্যা সম্পন্ন হইল। ইহাতে জ্বান্দিজনিত যে সকল বর্ণ ও ভাবের অশুদ্ধি হইয়াছে তাহা শোধন করিয়া
পাঠ করিলেই সমূহোপ্ত হুই।

निएकपक द्यानवीन हस्य वड ।।। सा मार वक

aratus of the 1		• .		
भूयम् युष्			•	
निर्घले। श्रिका। निर्धले।				
क कि कि में शिवा शिवा शिवा शिवा भिवा भी				
अठा वाजागर रूप विष्ठ (वर्व जमा र मूत्र अ की प्राव अव ग्राकाज			•	
अधिक समित क्या कथ्म वान श्री श्रे र्म		•	•	
टिलाशालीय स्वरास्त्रा	•			
যুধিছির ছুর্য্যোধনের রাজ্য প্রাপ্ত । ৫ তীথা পাওব সমাপে অমৃত্যু-) ১৪		•		
ত রাজ্যুষ্য যজ্ঞ বিবরণ				
राष्ट्रायात्र जाश्रीया । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	•		•	
श्रीश्रीकृदेवस् भाषिकार्याः विकासम्बद्धाः विकासम्बद्धाः विकासम्बद्धाः विकासम्बद्धाः विकासम्बद्धाः विकासम्बद्धाः		•		•
वनवाम र्याच । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।				
युवालसामाना राज्य किलीय मिवनीय यह भाषा वर्त अस्त				
	,	•		
मळ्या में जा अर्था में कर्षा कर्	-	•		•
विकास्त्रतं करा मलीय शंगत ५०० वागिलाय वर्षा	•		•	
क्रिक्छ गमीद्र एं अभीत त्यम । । । । । । । । । । । । । । । । ।				
शिक्क विश्व भूटि जिलिन कर्रिन र	i i			
ज्यान्त्रव मगील प्रस्तारम	† .	•		
क्षा के के बाका व्यापाल अव रूप । जिल्ला का कि का का कि विकास के कि	1			
হুল ক্রিন্ট নগরে প্রত্যাগত হন ২৮ প্রায় দিনের মুদ্ধে ভগদত বধ •••• ১		}		
প্রক্ষা বিরাট নগরে প্রত্যাগত হন২৮ প্রায় দিনের মুদ্ধে ভগদত বধ৬		•		
कारांपिश्वापित प्राप्ति । प्राप्ति कार्याञ्च कार्याञ्च कार्याञ्च कार्याञ्च कार्याञ्च				
अरोज अंतर्व कियोगिक वर्ग के कियोगिक के कियो वर्ग के कियो के कियो के कियो के कियो किया के कियो किया के कियो किया	4 -			
े अधिक रहिता की कि महिने अधिक विभाग के जिल्ला के अधिक अधिक अधिक अधिक अधिक अधिक अधिक अधिक	1	•		
का नोक्ट श्रीक्षत्रात शि				
11 \ 517 25/24	<i>∹</i>			
प्रमाणिमश्री ए जिल्ला युक्त यो जिल्ला जी म कर्ज क हरिगा थरम र जिल्ला			•	
ज्ञान जिल्ला अङ्ग्रीन कि थे । इस् विसारम प्ररंगिन का मृज्य ।।।	42			
द्वाय दमन	ς.√ ·			,
	, 40.			•
Marie Contraction of the second secon				
	1			

BLOCKED INFORMATION.